ब्रह्मा से लेकर चाण्डाल पर्यन्त सभी जीवों के लिए सुलभ, मुक्ति स्त्री को वश में करने वाला श्रीरामनाम है इसमें दीक्षा दक्षिणा और पुरश्चरणादि की अपेक्षा नहीं है यह श्रीरामनामरूपी महामन्त्र केवल जिह्वा के स्पर्श मात्र से सम्पूर्ण फल प्रदान करता है।

नायनाय य दृते ऽक्षराष्टकं पञ्चकं च न शिवाय यद्विना।
मुक्तिदं भवति यद्द्वयोर्वशात्तद्द्वयं वयमुपास्महे किल ।।643।।

श्रीरामनाम के 'रा' शब्द के बिना अष्टाक्षर मन्त्र नायणाय एवं 'म' के बिना पञ्चाक्षर मन्त्र 'न शिवाय' होकर अभीष्ट फल नहीं देते हैं तात्पर्य यह है कि श्रीरामनाम के 'रा' के कारण ही नारायण मन्त्र एवं 'म' के कारण ही शिव का पञ्चाक्षर मन्त्र अभीष्ट अर्थ प्रदान करता है मुक्ति प्रदान करता है इसलिए हम लोग निश्चित ही श्रीरामनाम की उपासना करते हैं।

रामस्यातिप्रियं नाम रामेत्येव सनातनम्।
दिवारात्रौ गृणन्नेषो भाति वृन्दावने स्थितः।।644।।

भगवान् श्रीराम का अतिप्रिय सनातन नाम श्रीराम ही है इसी नाम का श्रीधाम वृन्दावन में स्थित होकर श्रीकृष्णचन्द्र दिन रात संकीर्तन करते रहते हैं।

येषां रामः प्रियो नैव रामे न्यूनत्वदर्शिनाम्।
द्रष्टव्यं न मुखं तेषां सङ्गतिस्तु कुतस्तराम्।।645।।

जिन लोगों का श्रीराम के प्रति प्रेम नहीं है अथवा जो लोग श्रीरामजी में न्यूनत्व का दर्शन करते हैं उन सबका मुख नहीं देखना चाहिए संगति करना तो बहुत दूर है।

यन्नामवैभवं श्रुत्वा शंकराच्छुकजन्मना।
साक्षादीश्वरतां प्राप्तः पूजितोऽहं मुनीश्वरैः।।646।।

जिस श्रीरामनाम की महिमा को भगवान् शंकर से सुनकर मैं शुक शरीर से साक्षात् ईश्वर रूप हो गया और बड़े–बड़े मुनीश्वरों के भी पूज्य हो गये।

नातः परतरं वस्तु श्रुतिसिद्धान्तगोचरम्।
दृष्टं श्रुतं मया क्वापि सत्यं सत्यं वचो मम।।647।।

समस्त वेदान्तों में श्रीरामनाम से बढ़कर कोई दूसरी वस्तु मैंने न देखा है

और न कहीं सुना है यह मेरी वाणी सत्य सत्य है।

पद्मसंहितायाम्
पद्मसंहिता में

पठति सकलशास्त्रं वेदपारंगतो वा, यमनियमयुतो वा वेदशास्त्रार्थ कृद्वा।
अपि च सकलतीर्थव्राजको वाहिताग्निर्नहि हृदि यदि रामस्सर्वमेतद् वृथास्यात्।

सम्पूर्ण शास्त्रों को पढ़ लिया है अथवा वेदों में पारंगत हो गये हैं। यमनियमादि से युक्त हैं अथवा वेदशास्त्रों के अर्थ करने वाले हैं, अथवा सभी तीर्थों की यात्रा कर लिया हो अथवा अग्निहोत्रादि कर्म कर लिया हो, यदि भगवान् श्रीराम हृदय में नहीं आये अर्थात यदि भगवान् श्रीराम से प्रेम नहीं हुआ तो यह सब कुछ करना व्यर्थ चला गया। ।।648।।

रूपस्यानुभवं दिव्यं परानन्दस्य सागरम्।
रामनाम रसं दिव्यं पिब नित्यं सदाव्ययम् ।।649।।

भगवान् श्रीराम के दिव्य स्वरूप का अनुभव करने वाला, परमानन्द का समुद्र, दिव्य रस एवं अविनाशी श्रीरामनाम है अतः तुम सदासर्वदा इसका पान करो।

रामनामरसानन्तसाधकं सु रसालयम्।
स्मरणाद्रामभद्रस्य संकाशः तस्य संस्फुटम् ।।650।।

श्रीरामनाम अनन्त रस का साधक और रस का निवास स्थान है श्रीरामनाम के स्मरण करने से भगवान् श्रीराम का भीतर बाहर प्रकाश होने लगता है।

रकाराज्जायते ब्रह्मा रकाराज्जायते हरिः।
रकाराज्जायते शम्भू रकारात्सर्वशक्तयः।।651।।

श्रीराम के 'र' से ब्रह्मा, विष्णु, शंकर एवं सभी शक्तियाँ उत्पन्न होती हैं।

आदावन्ते तथा मध्ये रकारेषु व्यवस्थितम्।
विश्वं चराचरं सर्वमवकाशेन नित्यशः।।652।।

यह चराचर सम्पूर्ण विश्व आदि मध्य एवं अन्त में अवकाश के साथ 'र' में नित्य ही अवस्थित हैं।

अनन्तसंहितायाम्

अनन्तसहिता में

वने चरामो वसु चाहरामो नदीस्तरामो न भयं स्मरामः।
इत्थं वदन्तश्च वने किराता मुक्तिं गता रामपदानुषङ्गात्।।653।।

किसी वन में चार किरात आपस में 'वने च रामः, वसु चाहरामः नदीस्तरामः और भयं न स्मरामः, धन का हरण करेंगे, नदी पार करेंगे और भय की याद नहीं करेंगे' इस प्रकार बातचीत करते हुए दैववश मर गये। श्रीरामनाम से सम्बन्धित 'र' 'म' का उच्चारण करने के कारण वे सब मुक्त हो गये।

सर्वैश्वर्यप्रदं सर्वं सिद्धिदं सर्वधर्मदम्।
सर्वमोक्षकरं शुद्धं परानन्दस्य कारणम्।।654।।

सभी ऐश्वर्यो को प्रदान करने वाला, विश्वस्वरूप, सिद्धि एवं सभी धर्म प्रदान करने वाला, सभी मुक्तियों को प्रदान करने वाला, शुद्ध तथा परमानन्द का कारण श्रीरामनाम है।

एकैकं रामनाम्नस्तु सर्वतापप्रणाशनम्।
सहस्रनामकोटीनां फलदं वेदविश्रुतम्।।655।।

श्रीरामनाम का एक बार जप सभी तापों का नाश करने वाला है एवं भगवान् विष्णु के हजारों करोड़ों नाम के समान फल देने वाला है यह बात वेद प्रसिद्ध हैं।

इमं मन्त्रं सदा स्नेहाद्ये जपन्तीह सादरम्।
ते कृतार्थाः कलौ देवि अन्ये मायाविमोहिताः।।656।।

हे देवि! जो लोग प्रेम से आदरपूर्वक सदासर्वदा श्रीरामनाम का जप करते हैं इस कलियुग में वे लोग निश्चित ही कृतार्थ है शेष लोग माया के कारण मोहितचित्त वाले हैं।

इमं मन्त्रं महेशानि जपन्नित्यमहर्निशम्।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो रामसायुज्यमाप्नुयात्।।657।।

हे पार्वति! इस मन्त्र को नित्य रात दिन जप करने से सभी पापों से जीव मुक्त हो जाता है और श्रीराम की सायुज्य मुक्ति (भगवान् के आभूषण, वस्त्रादि) को प्राप्त होता है।

सर्वेषां सिद्धिदं रामनाम सर्वत्र सर्वदा।
यस्य संस्मरणाच्छीघ्रं फलमायाति दूरगम्।।658।।

सभी जगह सदासर्वदा जीवमात्र को सिद्धि प्रदान करने वाला श्रीरामनाम है जिसके स्मरणमात्र से दूर में विद्यमान फल भी शीघ्र ही प्राप्त हो जाता है।

रामनाम्नः प्रभावेण स्वयम्भूः सृजते जगत्।
तथैव सर्वदेवाश्च सर्वैश्वर्यसमन्विताः।।659।।

श्रीरामनाम के प्रभाव से ब्रह्माजी जगत् की सृष्टि करते हैं और श्रीरामनाम के प्रभाव से ही देवता लोग सभी ऐश्वर्यों से युक्त हुए। हैं।

मार्कण्डेयसंहितायाम्

मार्कण्डेयसंहिता में

अन्तःकरणसंशुद्धिर्नान्यसाधनतो भवेत्।
कलौ श्रीरामनाम्नैव सर्वेषां सम्मतं परम्।।660।।

सभी सन्त महापुरुषों का सर्वश्रेष्ठ मत है कि कलियुग में अन्तःकरण की शुद्धि केवल श्रीरामनाम से ही हो सकती है अन्य किसी साधन से नहीं।

आर्तानां जीवनं नित्यं दृप्तानां वै प्रमोददम्।
भक्तानां त्राणकर्तारं रामनाम समाश्रये।।661।।

दोनों प्रकार के शरणागत भक्तों में आर्त भक्तों का तो नित्य जीवन एवं दृप्त भक्तों को आनन्द प्रदान करने वाला श्रीरामनाम है ऐसे सभी भक्तों की रक्षा करने वाले श्रीरामनाम का मैं आश्रय ग्रहण करता हूँ।

कृपादिगुणसम्पन्नं सर्वदा शोकहारकम्।
तारकं संसृतेर्नित्यं रामनाम भजाम्यहम्।।662।।

कृपादि अनन्त गुणों से सम्पन्न, सदासर्वदा शोक हरने वाले, भवसंसृति से तारने वाले श्रीरामनाम का मैं नित्य भजन करता हूँ।

चित्तस्य वासना सूक्ष्मा सर्वानन्दविनाशिनी।
सोपि श्रीरामसंलापादनायासेन नश्यति।।663।।

चित्त की जो सूक्ष्म वासना सभी आनन्दों का नाश करने वाली है वह वासना भी श्रीरामनाम के संकीर्तन से बिना श्रम के नष्ट हो जाती है।

रसना सर्पिणी प्रोक्ता संस्थिता बिल वन्मुखे।

या न वक्ति सुधासारं रामनामपरात्परम्।।664।।

जो जिह्वा सुधासार सर्वस्व श्रीरामनाम का उच्चारण नहीं करती है वह जिह्वा सर्पिणी कही गयी है और मुखरूपी बिल में बैठी है।

विवेकादीन् शुभाचारान् रक्षणाय सदोद्यतम्।

श्रीरामेति सन्नाम परमानन्दविग्रहम्।।665।।

विवेकादि शुभाचरणों की रक्षा के लिए सदासर्वदा उद्यत परमानन्दस्वरूप श्रेष्ठनाम श्रीरामनाम है।

अत्रिसंहितायां श्रीशङ्करवाक्यं पार्वतीं प्रति

अत्रिसंहिता में श्रीशंकरजी का वाक्य पार्वतीजी के प्रति

येन केन प्रकारेण संस्मरेद्रामनामकम्।

अवश्यं लभते सिद्धिं प्राप्तिरूपां मनोरमाम्।।666।।

जिस किसी भी प्रकार से जो श्रीरामनाम का स्मरण करता है वह निश्चित ही भगवत्प्राप्तिरूप मनोरम सिद्धि को प्राप्त करता है।

श्रीमद्रामेति नाम्नस्तु नियमं धारणं सदा।

कर्तव्यं सावधानेन त्यक्त्वा प्रामादिकं शिवे।।667।।

हे पार्वति ! प्रमादादि दोषों का त्याग करके सदासर्वदा सावधानंचित्त से श्रीरामनाम के जप का नियम धारण करना चाहिए।

तावद्वै नियमं कार्यं यावत् चित्तं न संस्मरेत्।

अनियमेनकृतं जाप्यं निष्फलं प्रथमं प्रिये।।668।।

हे पार्वति ! बिना नियम के जप ज्यादा दिन नहीं चलता है और निष्फल भी होता है अत: नियमपूर्वक जप करना चाहिए और तब तक नियम धारण करना चाहिए जब तक अपना चित्त स्वत: निरन्तर स्मरण न करे।

नियमेनैव श्रीरामनाम्नि प्रीतिर्ध्रुवा भवेत्।

तस्माद्विपर्ययं त्यक्त्वा नियमं सञ्चरेद्बुधः।।669।।

नियमपूर्वक जप करने से ही श्रीरामनाम में निश्चित व ध्रुव प्रेम प्रकट होता है अत: अन्यथा विचार का त्याग करके बुद्धिमान् को नियम लेना चाहिए।

अहो भाग्यमहो भाग्यं कलौ तेषां सदा शिवे।
येषां श्रीरामनाम्नस्तु नियमं समखण्डितम्।।671।।

हे पार्वति! इस कलियुग में वे ही भाग्यशाली हैं सदा भाग्यवान् हैं जिनका श्रीरामनाम के जप का नियम सम्यक् एवं अखण्ड रूप से चल रहा है।

सनकसनातनसंहितायाम्

सनकसनातनसंहिता में

हे जिह्वे मधुरप्रिये सुमधरं श्रीरामनामात्मकं
पीयूषं पिब प्रेमभक्तिमनसा हित्वा विवादानलम्।
जन्मव्याधिकषायकामशमनं रम्यातिरम्यं परं -
श्रीगौरीशप्रियं सदैव सुभगं सर्वेश्वरं सौख्यदम्।।671।।

हे मधुरप्रिये जिह्वे! विवादरूपी अग्नि का त्याग करके प्रेमस्वरूपा भक्ति से युक्त मन से अत्यन्त मधुर अमृत स्वरूप श्रीरामनाम को खूब पिओ। यह श्रीरामनाम जन्म मरणरूपी भयंकर व्याधि एवं कामरूपी कषाय का नाशक है अत्यन्त रमणीय, सर्वोकृष्ट, सदासर्वदा भगवान् शिव को प्रिय, सुभग, सर्वेश्वर एवं सुख प्रदान करने वाला है।

नाना तर्कवितर्कमोहगहने क्लिश्यन्ति ये मानवा
स्तेषां श्रीरघुवीरनामविमलं सर्वात्मना सौख्यदम्।
प्रेमानन्दपवित्ररंगरमणं सर्वाधिपं सुन्दरं
दृष्टं बोधमयं विचित्ररचनं सर्वोत्तमं शाश्वतम्।।1672।।

जो नाना प्रकार के तर्क बितर्क एवं मोह के गहन वन में दुःख पा रहे हैं उन लोगों के लिए भगवान् राघवेन्द्र का यह विमल रामनाम हर प्रकार से सुख प्रदान करने वाला है परम प्रेमानन्द के पवित्र रंग में रमण करने वाला है, सबका स्वामी है, सुन्दर दर्शनमात्र से बोध प्रदान कराने वाला, विचित्र रचनामय, शाश्वत एवं सर्वोत्तम है।

श्रमं मृषैव कुर्वन्ति ज्ञानयोगादिसाधने।
कथं न भजते रामनाम सर्वेशपूजितम्।673।।

लोग व्यर्थ में ही ज्ञानयोगादि साधनों में श्रम करते हैं अन्य साधनों को छोड़कर भगवान् शंकर से भी पूजित श्रीरामनाम का भजन करते क्यों नहीं?

सर्वेषां साधनानां वै परिपाकमिदं मुने।

यज्जिह्वाग्रे परं नाम जपेन्नित्यमतन्द्रितम्।।674।।

हे मुने! सभी साधनों का परम फल यही है कि तन्द्रा का त्याग करके सदासर्वदा सर्वश्रेष्ठ श्रीरामनाम का नित्य जप करे।

श्रीहनुमत् संहितायाम्

श्रीहनुमत् संहिता में

राम त्वत्तोऽधिकं नाम इति मे निश्चला मतिः।

त्वया तु तारिताऽयोध्या नाम्ना तु भुवनत्रयम्।।675।।

हे रामजी! आपसे बढ़कर अधिक फलदायी आपका नाम श्रीरामनाम है यह मेरी निश्चला बुद्धि है क्योंकि आपने तो केवल अयोध्यावासियों को तारा है। आपके रामनाम ने सम्पूर्ण त्रिभुवन को तार दिया है।

हे जिह्वे! जानकीजानेर्नाम माधुर्यमण्डितम्।

भजस्व सततं प्रेम्णा चेद्वाञ्छसि हितं स्वकम्।।676।।

हे जिह्वे! यदि तुम अपना कल्याण चाहती हो तो तुम श्रीजानकीपति श्रीरामजी के माधुर्य युक्त पावन नाम श्रीरामनाम का निरन्तर प्रेम से भजन करो।

जिह्वे श्रीरामसंलापे विलम्बं कुरुषे कथम्।

व्रीडा नायाति ते किञ्चिद्विना श्रीनाम सुन्दरम्।।677।।

हे जिह्वे! श्रीरामनाम के संकीर्तन में तुम विलम्ब क्यों करते हो? परम सुन्दर श्रीरामनाम के बिना तुम्हें कुछ लज्जा नहीं आती।

रामनामात्मकं मन्त्रं यन्त्रितं येन धारितम्।

तस्य क्वापि भयं नास्ति सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।678।।

जिसने यन्त्र स्वरूप महामन्त्र श्रीरामनाम को धारण कर लिया उसे कहीं भी भय नहीं है मैं सत्य–सत्य कहता हूँ।

स्मरतोऽभीष्टमाप्नोति रामनामानुरागिणाम्।

न जाने दर्शनस्पर्शपादोदकफलं यथा।।679।।

श्रीरामनाम के अनुरागी भक्तों के स्मरण करने मात्र से सम्पूर्ण अभीष्ट की प्राप्ति हो जाती है फिर नामानुरागी सन्तों के दर्शन, चरणस्पर्श और उनके चरणामृत का क्या फल होता है यह मैं नहीं जानता हूँ।

श्रीरामनामस्मरणात् सीतारामौ ममोपरि।
कृपामहैतुकीं नित्यं कृत्वा सर्वोत्तमां मुने।।680।।

हे मुने! श्रीरामनाम के स्मरण से श्रीसीतारामजी ने मेरे ऊपर अपनी सर्वश्रेष्ठ अहेतुकी कृपा नित्य की है।

सदाशिवसंहितायां श्रीहनुमद्वाक्यमगस्त्यं प्रति

सदाशिवसहिता में श्रीहनुमानजी का वाक्य अगस्त्य के प्रति

यस्तु स्वप्ने वदेद्रामं संभ्रमस्खलनादिभिः।
तस्य पादरजो मे तु मूर्धानमधिरोहतु।।681।।

जो स्वप्न में भी बड़बड़ाते समय अथवा गिरते समय श्रीरामनाम का स्मरण करते हैं उच्चारण करते हैं उनके चरणों की धूलि मेरे शिर पर सुशोभित हो। उनके चरण धूलि से हमारी आत्मा प्रसन्न होती है।

रामनामात्मकं शब्दं श्रवणान्मुनिशिरोमणे।
रामनामसमं पुण्यं फलं प्राप्नोति मानवः।।682।।

हे मुनिश्रेष्ठ! श्रीरामनाम के श्रवण से मनुष्य को श्रीरामनाम के जप के समान ही पुण्यफल प्राप्त होता है अर्थात् श्रीरामनाम का जप और श्रवण दोनों तुल्यफल है।

रामनामगुणालापी सज्जनो रामवल्लभः।
सत्यं वच्मि महाभाग रामनाम परात्परम्।।683।।

हे महाभाग ! श्रीरामनाम का जप कीर्तन करने वाले सज्जन पुरुष श्रीरामजी के अत्यन्त प्रिय हैं। श्रीरामनाम परात्पर तत्व है यह मैं सत्य—सत्य कहता हूँ।

इति श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाशे प्रमोदनिवासे परात्परैश्वर्य्यदायके श्रीयुगलानन्यशरणसंगृहीते संहितावाक्यप्रमाणो नाम तृतीय प्रमोदः।।3।।



स्वामीयुगलानन्यशरणजी द्वारा संकलितः

चतुर्थः प्रमोदः

नाटकोक्तवचनानि

नाटकोक्तवचन

श्रीहनुमन्नाटके श्रीहनुमद्वाक्यमगस्त्यं प्रति

श्रीहनुमन्नाटक में श्रीहनुमानजी का वाक्य अगस्त्यजी के प्रति

इदं शरीरं शतसन्धिजर्जरं पतत्यवश्यं परिणामदुर्वहम्।
किमौषधं पृच्छसि मूढ दुर्मत्ते निरामयं रामरसायनं पिब।।684।।

हे मूढ़ दुर्मते! यह मानव शरीर सैकड़ों सन्धियों के कारण जर्जर है यह निश्चित ही नष्ट होगा और अन्त में दुःख रूप है इसको स्वस्थ करने के लिए औषधियों के बारे में क्या पूछ रहे हो? यदि स्वस्थ रहना चाहते हो तो निरामयस्वरूप परम रसायन श्रीरामनाम का पान करो।

आसीनो वा शयानो वा तिष्ठतो यत्र कुत्र वा।
श्रीरामनाम संस्मृत्य याति तत्परमं पदम्।।685।।

बैठे हुए, सोते हुए, अथवा जहाँ—तहाँ ठहरते हुए मनुष्य श्रीरामनाम का सम्यक् स्मरण करते हुए परम पद को प्राप्त करते हैं।

ये जपन्ति सदा स्नेहान्नाम माङ्गल्यकारणम्।
श्रीमतो रामचन्द्रस्य कृपालोर्मम स्वामिनः।।686।।

परम कृपालु हमारे स्वामी श्रीमान् भगवान् श्रीरामचन्द्रजी के 'कल्याण का परम कारण' श्रीरामनाम का जो लोग सदासर्वदा स्नेह से जप करते हैं।

तेषामर्थे सदा विप्र प्रयातोऽहं प्रयत्नतः।
ददामि वाञ्छितं नित्यं सर्वदा सौख्यमुत्तमम्।।687।।

हे विप्र ! उन भक्तों के लिए मैं सदासर्वदा प्रयत्न करके प्रिय से भी प्रिय अभीष्ट पदार्थों एवं उत्तम सुख को नित्य प्रदान करता हूँ।

रामनामैव नामैव सदा मज्जीवनं मुने।
सत्यं वदामि सर्वस्वमिदमेकं सदा मम।।688।।

हे मुने! श्रीरामनाम ही सदासर्वदा मेरा जीवन है मैं सत्य कहता हूँ कि

श्रीरामनाम ही मेरा सर्वस्व है।

श्रीजानकीपरिणयनाटके

श्रीजानकीपरिणय नाटक में

महामणीन्द्रादपि काशतेऽधिकं सदैव जिह्वाग्रप्रदीपयत्यलम्।
आभ्यन्तरध्वान्तसबाह्यमुल्वणं निवारणे शक्तमहर्निशं भजे॥1689॥

शंकरजी कहते हैं कि श्रीरामनाम महामणियों से भी अधिक प्रकाशमान है। जिह्वा के अग्र भाग पर प्रदीप की तरह अतिशय रूप से प्रकाशित होता रहता है। भीतर और बाहर के भयंकर अन्धकार के नाश करने में परम समर्थ है ऐसे श्रीरामनाम का मैं रात दिन भजन करता हूँ।

सीतासमेतं रघुवीरनाम जपन्ति ये नित्यमघौघहारिं।
ते पुण्यवन्तः खलु भाग्यवन्तः परं पदं यान्ति स्ववर्गयुक्ताः॥1690॥

जो लोग श्रीसीतानाम के साथ श्रीरामनाम अर्थात् श्रीसीताराम नाम जो पाप समूह का हरण करने वाले है उस सीताराम नाम का नित्य जप करते हैं वे लोग निश्चित ही पुण्यवान् एवं परम भाग्यशाली हैं वे लोग अपने परिकर के साथ भगवान् के परम पद को प्राप्त होते हैं।

रोमाञ्चितशरीराश्च त्यक्तसर्वदुराग्रहाः।
रटन्ति रामनामाख्यं मन्त्रं ते पावनेश्वराः॥1691॥

श्रीरामनामरूपी मन्त्र के जप, कीर्तन के समय जिनके शरीर में रोमांच हो जाता है जो समस्त दुराग्रहों का त्याग कर देते हैं वे लोग निश्चित ही सभी पवित्र करने वालों के स्वामी हैं।

येऽभिनन्दन्ति नामानि रामभद्रस्य नित्यशः।
मनसा वचसा नित्यं ते वै भागवतोत्तमाः॥1692॥

जो लोग रात दिन श्रीरामनाम का अभिनन्दन करते हैं तथा मन और वाणी से नित्य जप करते हैं। वे ही वास्तव में श्रेष्ठ भागवत हैं।

दृढ़ाभ्यासेन ये नित्यं रामनाम्नि रमन्ति च।
तेषामभयदाता च श्रीरामो जानकीपतिः॥1693॥

दृढ़ अभ्यासपूर्वक जो नित्य श्रीरामनाम में रमण करते हैं उन भक्तों को श्रीसीतापति रामजी सदा अभय प्रदान करते हैं।

विचित्रनाटके

विचित्रनाटक में

प्रभावतो यस्य हि कुम्भजन्मना प्रशोषितः सिन्धुरपारपारणः।
तथैव विन्ध्याचलरोधिताद्भुता मुनीन्द्रराजेन प्रभाकरेण।।694।।

श्रीरामनाम के प्रभाव से सूर्यसम तेजस्वी मुनीन्द्र श्रीअगस्तजी ने अपार समुद्र को पीकर सोख लिया एवं महाभिमानी विन्ध्याचल का निरोध किया।

न नामतः साधनमन्यदस्ति वै न साध्यसौभाग्यमतः परं क्वचित्।
परात्परं प्रेमप्रकाशकं वरं सुधासारं सारमनन्तवैभवम्।।695।।

परात्पर, प्रेम का प्रकाशक, श्रेष्ठ, अमृतसारसर्वस्वरूप समस्त शास्त्रों का सार अनन्त विभूतिवान् श्रीरामनाम से बढ़कर दूसरा कोई न साधन है और न कहीं कोई दूसरा सौभाग्यशाली साध्य है।

यदीक्षणाच्छम्भुसुतो गणाधिपः सुरासुरैः प्राथमिकः प्रपूज्यः।
प्रदक्षिणा यस्य कृते समस्ता क्षमावती स्यात् परितः प्रदक्षिणा॥696।।

जिनकी कृपा कटाक्ष से भगवान् शंकर के सुपुत्र श्रीगणेशजी सुर असुर सभी से प्रथम पूज्य हो गये। जिसके लिए श्रीकार्तिकेयजी ने सम्पूर्ण पृथिवी की चारों तरफ से परिक्रमा की थी।

साराणां सारमित्याहुर्मुनयः सत्यवादिनः।
श्रीरामनाम सर्वेशं नित्यानां नित्यमव्ययम्॥697।।

सत्यवादी मुनियों ने कहा है कि समस्त सारों का भी सार, सबका स्वामी, नित्यों में भी नित्यता सम्पादन करने वाला एवं अविनाशी श्रीरामनाम है।

सर्वेषां सुलभं नाम सदा सर्वत्र सौख्यदम्।
ये जपन्ति सदा भक्त्या तेभ्यो नित्यं नमो नमः।।698।।

वैसे तो सभी को सुख देने वाला भगवान् का नाम सभी के लिए सदासर्वदा सब जगह सुलभ है तथापि जो लोग सदासर्वदा भक्तिपूर्वक श्रीरामनाम का जप करते हैं उन भक्तों को बारम्बार नमस्कार है।

प्रमोदनाटके

प्रमोदनाटक में

वन्दे श्रीरामचन्द्रस्य नाम मुक्तिप्रदं परम्।
यत्कृपालेशतोऽस्माकं सुलभं सर्वतः सुखम् ॥699॥

जिनकी[1] लेशमात्र कृपा से हम लोगों के लिए सर्वत्र सुख सुलभ हो रहा है। भगवान् श्रीराम के उस सर्वश्रेष्ठ एवं मुक्तिप्रद श्रीरामनाम की मैं वन्दना करता हूँ।

अनामयं रूपयुगप्रकाशकं सदैव भक्तार्तिहरं कृपानिधिम्।
स्मरामि श्रीराघवनाम निर्मलं प्रपूजितं देवमुनीश्वरेश्वरैः ।।700।।

श्रीरामनाम अनामयनिरोग, श्रीसीताराम युगल सरकार के स्वरूप का प्रकाशक, सदासर्वदा भक्तों के दुख को हरने वाला, कृपा समुद्र, देवताओं और बड़े—बड़े मुनीश्वरों से प्रकर्ष रूप से पूजित है। ऐसे श्रीरामजी के निर्मल नाम का मैं स्मरण करता हूँ।

नाम्नः पराशक्तिपतेः प्रभावं प्रजानते मर्कटराजराजः।
यद्रूपरागीश्वरवायुसूनुस्तद्रोमकूपे ध्वनिमुल्लसन्तम् ।।701।।

पराशक्ति के स्वामी श्रीरामनाम के प्रभाव को वानरराज श्रीहनुमानजी महाराज जानते हैं जो भगवान् श्रीसीतारामजी के स्वरूप के अनुरागी हैं एवं जिनके रोम रोम से श्रीरामनाम की ध्वनि होती रहती है।

कषायविक्षेपलयादिहारकं सुतारकं संसृतिसागरस्य।
सदैव दीनार्तिहरं दयानिधिं स्मरामि भक्त्या परमेश्वरप्रियम् ।।702।।

समाधि के विघ्न स्वरूप वासना विक्षेप तन्द्रादि का हरण करने वाले, संसारसागर से पार करने वाले, सत्स्वरूप, दीन दुखियों के आर्ति को हरण करने वाले, दयासागर भगवान शिव के प्राण प्रिय श्रीरामनाम का मैं भक्तिपूर्वक स्मरण करता हूँ।

गुणानां कारणं नाम तथैश्वर्यवतां सदा।
संकीर्तनाल्लभेन्मर्त्यः पदमव्ययमुज्ज्वलम् ।।703।।

---

1. रामनाम महिमा अगम श्रुतिन कह्यो सिद्धान्त। युगलानन्य कृपा सुगम समुझित मिटत मन भ्रान्त।।

श्रीरामनाम सदासर्वदा दिव्य गुणों एवं ऐश्वर्यवानों का परम कारण है। मनुष्य श्रीरामनाम का संकीर्तन करके उज्ज्वल एवं अविनाशी पद को प्राप्त कर लेता है।

रहस्यनाटके

रहस्यनाटक में

मधुरमधुरमेतन्मङ्गलं मङ्गलानां सकलनिगमवल्लीसत्फलं चित्स्वरूपम्।
सकृदपि परिगीतं श्रद्धया हेलया वा स भवति भवपारं रामनामानुभावात्।।

मधुरातिमधुर, मंगलों का भी परम मंगलकर्ता, सम्पूर्ण वेदरूपी वृक्ष का दिव्य स्वरूप फल चित्स्वरूप श्रीरामनाम है जो मनुष्य श्रद्धा से अथवा अवहेलना से ही एक बार श्रीरामनाम का उच्चारण करता है वह श्रीरामनाम के प्रभाव से भव से पार हो जाता है। ।।704।।

चेतोऽलेः कमलद्वयं श्रुतिपुटीपीयूषपूरद्वयं
वागीशानयनद्वयं घनतमश्चण्डांशुचन्द्रद्वयम्।
छान्दस्सिन्धुमणिद्वयं मुनिमनः कासारहंसद्वयं-
मोक्ष श्री श्रवणोत्पलद्वयमिदं रामेति वर्णद्वयम्।705।।

चित्तरूपी भ्रमर के लिए दो कमलस्वरूप, दोनों कानों के दोना को पूर्ण करने के लिए अमृत की धारास्वरूप, श्रीसरस्वतीजी के लिए युगल नेत्र स्वरूप, महामोहरूपी अन्धकार का नाश करने के लिए श्रीसूर्य एवं चन्द्रस्वरूप, वेदरूपी समुद्र के अनुपम दो मणि स्वरूप, मुनियों के मनरूपी मानसरोवर के युगल हंस और मोक्षरूपी लक्ष्मी के युगल कर्णफूल स्वरूप श्रीरामनाम के दो अक्षर 'ग' 'म' है।

रामनाम परब्रह्म दुराराध्यं दुरात्मनाम्।
साध्यं च सुलभं नित्यं प्रेमसम्पन्नमानसैः।।706।।

दुष्ट दुरात्माओं के लिए दुराराध्य एवं प्रेमी मन वाले साधकों के लिए सुलभ साध्य नित्य तथा परमब्रह्म श्रीरामनाम हैं।

श्रुतिस्मृतिपुराणानि रामनाम्नि च संस्थितम्।
यथैव लोके सुस्पष्टं सूत्रे मणिगणा इव।।707।।

जैसे[1] लोक में देखा जाता है कि मणियों का समूह सूत्र में गूँथे होते हैं उसी प्रकार सम्पूर्ण वेद पुराण श्रीरामनाम में स्थित हैं श्रीरामनाम की साधना करने से समस्त शास्त्रों का अर्थ प्रकाश में आता है।

स्मरणाद्रामनाम्नस्तु यत् सुखं न लभेन्नरः।
तत्सुखं खे गतं पुष्पं बन्ध्यापुत्रमिवाद्भुतम्।।708।।

श्रीरामनाम के स्मरण से जो सुख मनुष्य को नहीं मिल पाता है वह सुख गगन पुष्प एवं बन्ध्या पुत्र की तरह मिथ्या है अर्थात् श्रीरामनाम के स्मरण से सभी लौकिक एवं अलौकिक सुख, सहज में प्राप्त हो जाते हैं। इसमें आश्चर्य नहीं है।

प्रेमार्णवनाटके

प्रेमार्णवनाटक में

चित्राच्चित्रतरं लोके दृष्टं न कथितं मया।
सार्वभौमस्य रामस्य नाम्नैव सुजपत्यलम्।।709।।

चक्रवर्ती सम्राट् भगवान् श्रीराम के नाम के प्रभाव से ही इस लोक में मैंने अनेक आश्चर्य देखा किन्तु कहा नहीं, इसीलिए श्रीरामनाम को ही अतिशयेन सुष्ठु जप करते हैं।

क्षणं विहाय श्रीरामनाम यः पामराधमः।
कुरुते चान्यवस्तूनां चिन्तनं स तु गर्दभः।।710।।

जो मनुष्य क्षणभर के लिए श्रीरामनाम को छोड़कर अन्य वस्तुओं का चिन्तन करते हैं वे अत्यन्त पामर गदहे हैं।

प्रेमवैचित्र्यता प्रोक्ता दुर्लभा साधनान्तरैः।
तां लभेद्रामनाम्नस्तु जपाच्छीघ्रं न संशयः।।711।।

अन्य दूसरे साधनों से प्रेम वैचित्र्य दुर्लभ कहा गया है और श्रीरामनाम के जप से बहुत जल्दी से प्राप्त हो जाती है इसमें संशय नहीं है प्रेम वैचित्र्य का

1. ज्ञानमार्गश्च नामतः

मतलब होता है— वियोग में साक्षात् संयोग का अनुभव एवं संयोग में वियोग का अनुभव होना ।

सर्वाशां संपरित्यज्य संस्मरेन्नाम मङ्गलम्।

यदीच्छा वर्तते स्वच्छा प्राप्तिरूपा परात्परा:।।712।।

यदि आपके मन में भगवत्प्राप्तिरूप पवित्र इच्छा है तो अन्य सभी आशाओं को छोड़कर परम मंगलमय श्रीरामनाम का स्मरण करें अवश्य श्रीरामजी की प्राप्ति हो जायेगी।

इति श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाशे प्रमोदनिवासे परात्परैश्वर्यदायके श्रीयुगलानन्यशरणसंगृहीते नाटकवाक्यप्रमाणनिरूपणं नाम चतुर्थः प्रमोदः ।।4।।

चतुर्थप्रमोद समाप्त



स्वामीयुगलानन्यशरणजी द्वारा संकलितः

अथ पञ्चमः प्रमोदः

स्मृत्युक्तवचनानि

पांचवां प्रमोद स्मृतियों में कहे गये बचन

मनुस्मृतौ

सप्तकोटिमहामन्त्राश्चित्तविभ्रमकारका:।

एक एव परो मन्त्रः श्रीरामेत्यक्षरद्वयम्।।713।।

सात करोड़ जो बड़े—बड़े मन्त्र कहे गये हैं वे सब साधक के चित्त को भ्रमित 'करने वाले हैं 'श्रीराम' यह दो अक्षर ही एकमात्र सर्वश्रेष्ठ मन्त्र है।

येषां नित्यं रमेच्चित्तं रामनाम्नि सदोज्ज्वले ।

तेषां पुण्यौघमुत्कृष्टं जायते हि प्रतिक्षणम्।।714।।

जिन साधकों का चित्त सदासर्वदा उज्ज्वल श्रीरामनाम में रमण करता है उन साधकों को प्रतिक्षण में उत्कृष्ट पुण्य प्राप्त होता है।

दक्षस्मृतौ

दक्षस्मृति में

धन्या माता पिता धन्यो धन्याद्धन्यतमं कुलम्।
यत्र श्रीरामनाम्नस्तु जापको जायते शुचिः।।715।।

जहाँ श्रीरामनाम के पवित्र जापक प्रकट होते हैं वे माता, पिता धन्य हैं और धन्याति धन्य वह कुल है।

विषं तस्य सुधा प्रोक्तं शत्रुस्तस्य सुहृद्भवेत्।
सर्वेषां प्रेमपात्रं सः यस्य नाम्नि सदा रुचिः।।716।।

श्रीरामनाम में जिसकी सदासर्वदा रूचि होती है उसके लिए विष अमृत शत्रु मित्र हो जाते हैं तथा वह सभी का प्रेमपात्र हो जाता है।

धर्मराजस्मृतौ

धर्मराजस्मृति में

दृष्ट्वा श्रीरामनाम्नस्तु जापकं ध्यानतत्परम्।
अभ्युत्थानं सदा स्नेहात् करिष्येऽहं महामुने।।717।।

हे महामुने! श्रीरामनाम के जापक को ध्यान करते हुए देखकर में सदासर्वदा सप्रेम उठकर उसका आदर करता हूँ।

स वै धन्यतरो देशः साक्षाच्छ्रीधामसन्निभः।
यत्र तिष्ठन्ति श्रीरामनामसंलापनैष्ठिकाः।।718।।

निश्चित ही वह देश अत्यन्त धन्य एवं साक्षाद् साकेतधाम तुल्य है जहाँ एकमात्र श्रीरामनाम के कीर्तन में निष्ठा रखने वाले भक्त निवास करते हैं।

कात्यायनस्मृती

कात्यायनस्मृति में

मिथ्यावादे दिवा स्वापे बहुशो ऽम्बुनिषेवणे।
रामनामाक्षरं जप्त्वा सद्यः पूतः प्रजायते।।719।।

मिथ्या संभाषण करने से, दिन में सोने से एवं अत्यधिक जल का दुरुपयोग करने से जो पाप लगता है श्रीरामनाम के जप करने से वह पाप नष्ट हो जाता है। और कर्ता पवित्र हो जाता है।

कृतैश्च क्रियमाणैश्च भविष्यद्भिश्च पातकैः।
रामेति द्व्यक्षरं नाम सकृज्जप्त्वा विशुध्यति।।720।।

भूत वर्तमान एवं भविष्यत्कालिक पापों से श्रीरामनाम के दो अक्षर 'रा' 'म' के एक बार जप करने से मुक्ति हो जाती है। साधक परम विशुद्ध हो जाता है।

आयासः स्मरणे कोऽस्य मोक्षं यच्छति शोभनम्।
पापक्षयश्च भवति स्मरतां तदहर्निशम्।।721॥

श्रीरामनाम के स्मरण करने में कोई श्रम भी नहीं होता और सुन्दर मुक्ति प्राप्त होती है श्रीरामनाम के अहर्निश स्मरण करने वालों का पाप क्षय हो जाता है।

अभिमानं परित्यज्य चेतसा शुद्धगामिना।
शृण्वन्तु रामभद्रस्य नाममाहात्म्यमुज्ज्वलम्॥722।।

अभिमान का सर्वथा त्याग करके विशुद्ध चित्त से भगवान् श्रीरामचन्द्रजी के नाम के उज्ज्वल माहात्म्य को सुनना चाहिए।

सांखल्यस्मृतौ

सांखल्य स्मृति में

श्रवणात्कीर्तनाद्यस्य नरो याति निरापदम्।
तच्छ्रीमद्रामनामाख्यं मन्त्रं वै संश्रयाम्यहम्।।723।।

जिस श्रीरामनाम के श्रवण एवं कीर्तन से मनुष्य आपत्तिरहित पद को प्राप्त करता है उस श्रीरामनाम महामन्त्र का मैं निश्चित ही आश्रय ग्रहण करता हूँ।

पापानां शोधकं नित्यं परानन्दस्य बोधकम्।
रोधकं चित्तवृत्तीनां भजध्वं नाम मंगलम्॥724।।

हे साधकों! पापों का शोधक, परमानन्द का समुद्भावक एवं चित्तवृत्तियों का निरोधक मंगलमय श्रीरामनाम का भजन करो।

हारीतस्मृतौ

हारीतस्मृति में

इमं मन्त्रमगस्त्यस्तु जप्त्वा रुद्रत्वमाप्तवान्।
ब्रह्मत्वं काश्यपश्चैव कौशिकोऽप्यमरेशताम्।।725।।

इस श्रीरामनामरूपी महामन्त्र का जप करके अगस्त्यजी ने रूद्र पद को, काश्यप मुनि ने ब्रह्म पद को और विश्वामित्र जी ने इन्द्र पद को प्राप्त कर लिया।

कार्तिकेयो मनुश्चैव इन्द्रार्कगिरिनारदाः।
बालखिल्यादि मुनयो देवतात्वं प्रपेदिरे।।726।।

एवं कार्तिकेय, मनु, इन्द्र, सूर्य, पर्वत, नारद एवं बालखिल्यादि ऋषि देवत्व को प्राप्त किये।

अद्यापि रुद्रः काश्यां वै सर्वेषां त्यक्तजीविनाम्।
दिशत्येतन्महामन्त्रं तारकं ब्रह्मनामकम् ।727।।

आज भी भगवान् शंकर जी काशी में मरने वाले सभी जीवों के दक्षिण कर्ण में श्रीरामनामरूपी तारक ब्रह्म का उपदेश करते हैं।

यस्य श्रवणमात्रेण सर्व एव दिवं गताः।
प्रजप्तव्यं सदा प्रेम्णा तन्मन्त्रं रामनामकम्।।728।।

जिस श्रीरामनाम के श्रवण मात्र से सभी लोग स्वर्ग को चले गये। उस महामन्त्र श्रीरामनाम का सदासर्वदा प्रेम से जप करना चाहिए।

विनैव दीक्षां विप्रेन्द्र पुरश्चर्यां विनैव हि।
विनैव न्यासविधिना जपमात्रेण सिद्धिदः।।729।।

हे ब्राह्मण श्रेष्ठ! दीक्षा, पुरश्चरण एवं न्यासविधि आदि के बिना भी केवल जप करने से श्रीरामनाम सिद्धि प्रदान करता है।

तस्मात् सर्वात्मना रामनाम रूपं परं प्रियम्।
मन्त्रं जपेत् सदा धीमान् संविहायान्यसाधनम्।।730।।

इसलिए बुद्धिमान को अन्य साधनों को छोड़कर सदासर्वदा परमप्रिय श्रीरामनाम महामन्त्र का जप करना चाहिए।

वैष्णवस्मृतौ

वैष्णवस्मृति में

रामनामरता ये च रामनामपरायणाः।
वर्णा वा वर्णबाह्या वा तेकृतार्थाः सदा भुवि।।731।।

जो लोग श्रीरामनाम में रत है और जो लोग श्रीरामनाम परायण हैं इस पृथ्वी में वे ही लोग सदासर्वदा कृतार्थ हैं चाहे वे चारों वर्ण के भीतर हो

चाहें वर्णवहिर्भूत हो।

स्वपन् भुंजन् व्रजंस्तिष्ठनुत्तिष्ठशँच वदंस्तथा।

यो वक्ति रामनामाख्यं मन्त्रं तस्मै नमो नमः।।732।।

सोते हुए, खाते हुए, चलते हुए, ठहरते हुए, और बोलते हुए या बातचीत करते हुए जो श्रीरामनाम महामन्त्र का उच्चारण करते हैं उनको नमस्कार है नमस्कार है।

अत्रिस्मृतौ

अत्रिस्मृति में

कवले कवले कुर्वन् रामनामनुकीर्तनम्।

यः कश्चित् पुरुषोऽश्नाति सोऽन्नदोषैर्न लिप्यते।।733।।

जो कोई पुरुष भोजन करते समय प्रत्येक ग्रास को लेते समय श्रीरामनाम का संकीर्तन करते हुए भोजन करते हैं उसे अन्न दोष नहीं लगता है।

सिक्थे सिक्थे लभेन्मर्त्यो महायज्ञाधिकं फलम्।

यः स्मरेद्रामनामाख्यं मन्त्रराजमनुत्तमम्।।734।।

जो सर्वोत्तम मन्त्रराज श्रीरामनाम का स्मरण करता है उसको भोजन करते समय दाने—दाने पर महायज्ञों से भी अधिक पुण्य प्राप्त होता है।

साम्वर्तकस्मृतौ

साम्बर्तकस्मृति में

असंख्यजन्मसु कृतैर्युक्तो यदि भवेज्जनः।

तदा श्रीरामसन्मन्त्रे रतिस्संजायते नृणाम्।735।।

असंख्यजन्मों के पुण्य से युक्त जब मनुष्य होता है तब उसके हृदय में श्रीराममन्त्र के प्रति प्रेम प्रकट होता है।

तन्नामस्मरतां लोके कर्मलोपो भवेद्यदि।

तस्य तत्कर्म कुर्वन्ति त्रिंशत्कोट्यो महर्षयः।।736।।

भगवान् के नाम स्मरण करने में यदि किसी साधक के नित्य नैमित्तिक कर्म का लोप हो जाता है तो उसके कर्म को तीस करोड़ महर्षि लोग पूरा करते हैं।

आङ्गिरसस्मृतौ

आङ्गिरसस्मृति में

कान्तारवनदुर्गेषु सर्वापत्सु च संभ्रमे।
दस्युभिस्संनिरुद्धे च यस्तु श्रीनाम कीर्तयेत्।।737।।
ततः सद्यो विमुच्येद्वै रामनामप्रभावतः।
एतादृशं सदा स्वच्छं स्वतन्त्रं रामनाम च।।738।।

बीहड़ वन किला, सभी प्रकार की विपत्ति, भ्रम की स्थिति और लूटेरों के द्वारा रोके जाने पर जो श्रीरामनाम का संकीर्तन करता है वह श्रीरामनाम के प्रभाव से तत्काल संकट मुक्त हो जाता है ऐसा सदासर्वदा पवित्र एवं स्वतन्त्र श्रीरामनाम है।

शनैश्चरस्मृतौ

शनैश्चरस्मृति में

मत्कृता या भवेद्बाधा महादुःखौघदायिनी।
रामनाम्नो जपोत्साही मुच्यते स्वल्पकालतः।।739।।

शनि देवता कहते हैं कि महादुःख को देने वाली मेरे द्वारा की गयी जो बाधा है वह स्वल्पकाल में उत्साह से श्रीरामनाम का जप करने से नष्ट हो जाती है।

सर्वोपद्रवनाशार्थं रामनाम जपेद् बुधः।
सत्यं सत्यं न संदेहो मन्तव्यं सततं जनैः।।740।।

सभी प्रकार के उपद्रव के नाश के लिए बुद्धिमान् को श्रीरामनाम का जप करना चाहिए। इस बात को सज्जनों को बिना सन्देह के निरन्तर सत्य मानना चाहिए।

याज्ञवल्क्यस्मृतौ

याज्ञवल्क्यस्मृति में

परमात्मानमव्यक्तं प्रधानपुरुषेश्वरम्।
अनायासेन प्राप्नोति कृते तन्नामकीर्तने।।741।।

श्रीरामनाम का संकीर्तन करने पर मनुष्य बिना परिश्रम के ही अव्यक्त प्रधान पुरुष, ईश्वर परमात्मा को प्राप्त कर लेता है।

ज्ञानविज्ञानसम्पन्नं वैराग्यं विषयेष्वनु।
अमलां प्रीतिमुन्निद्रां लभते नामकीर्तनात्।।742।।

श्रीरामनाम के संकीर्तन करने पर साधक विषयों के प्रति ज्ञान विज्ञान से युक्त वैराग्य एवं भगवान् के चरणों में निर्मल प्रीति एवं उन्मुनीमुद्रा को शीघ्र ही प्राप्त कर लेता है।

वशिष्ठस्मृतौ

वशिष्ठस्मृति में

रामनामजपेनैव तदर्चा चोत्तमा स्मृता।
अन्येषां लौकिकी पूजा प्रतिष्ठावर्द्धिनी भुवि।।743।।

श्रीरामनाम के जप से ही भगवान् की श्रुतिसम्मत उत्तमा पूजा कही गयी है। दूसरे लोगों की श्रीरामनाम से रहित पूजा पृथिवी पर लोक में प्रतिष्ठा बढ़ाने वाली मेला मात्र है।

श्रीराम राम रामेति ये वदन्त्यपि पापिनः।
पापकोटिसहस्रेभ्यस्तेषामुद्धरणं क्षणात्।।744।।

जो पापी भी राम राम राम ऐसा उच्चारण करते हैं क्षण भर में करोड़ों पापों से उनका उद्धार हो जाता है।

गौतमस्मृतौ

गौतमस्मृति में

तावद्विजृम्भते पापं ब्रह्महत्या पुरस्सरम्।
यावच्छ्रीरामनाम्नस्तु नास्ति संभाषणं नृणाम्।।745।।

ब्रह्महत्यादि सारे पाप तभी तक शरीर में गरजते हैं मनुष्य जब तक श्रीरामनाम का उच्चारण नहीं करता है। श्रीरामनाम का उच्चारण करते ही उसी क्षण सारे पाप नष्ट हो जाते हैं।

रामनाम्नः परं तत्त्वं समं वा यस्त्वधी वदेत्।
संसर्गं तस्य यः कुर्याद्रामद्वेषी भवेत्तु सः।।746।।

जो कोई बुद्धिहीन श्रीरामनाम से श्रेष्ठ अथवा तुल्य किसी तत्व को कहता है। उस पापी के संसर्ग में रहने वाले भी निश्चित ही श्रीरामजी के द्वेषी हैं।

माण्डव्यस्मृतौ

माण्डव्यस्मृति में

सुरापो ब्रह्महा स्तेयी चौरो भग्नव्रतोऽशुचिः।
स्वाध्यायोपार्जितः पापी लुब्धो नैष्कृतिकः शठः।।747।।
अव्रती वृषलीभर्ता कुनखी सोमविक्रयी।
सोऽपि मुक्तिमवाप्नोति रामनामानुकीर्तनात्।।748।।

शराबी, ब्राह्मण हत्यारा, चोर, नियम खण्डित हो गया है जिसका, अपवित्र, जो वेदादि के स्वाध्याय से वर्जित है, पापी, लोभी, कृतघ्नी, मूर्ख, अपने वर्ण एवं आश्रम के अनुरूप व्रत का पालन न करने वाला, शुद्रा स्त्री का पति, कुत्सित नखों वाला और सोमलता को बेचने वाला भी श्रीरामनाम का संकीर्तन करने से शीघ्र पापों से मुक्त हो जाता है।

वृहस्पतिस्मृतौ

वृहस्पतिस्मृति में

यावच्छ्रीरामनाम्नस्तु स्मरणं नास्ति भो मुने।
तावद् यमभटाः सर्वे विचरन्तीह निर्भयाः।।749।।

हे मुने! जब तक श्रीरामनाम का स्मरण नहीं होता है तभी तक यहाँ यमराज के दूत निर्भय होकर विचरण करते हैं।

रामनाम परं ब्रह्म सर्वदेवैः प्रपूजितम्।
सर्वेषां सम्मतं शुद्धं जीवनं महतामपि।।750।।

सभी देवों से भी प्रकृष्ट रूप से पूजित परम ब्रह्म स्वरूप श्रीरामनाम सभी प्रकार के जीवों की शुद्धि का परम साधन एवं महापुरुषों का जीवन सर्वस्व है।

आतातपस्मृतौ

आतातपस्मृति में

नित्यंधिक् क्रियतेऽस्माभिस्तेषां भाग्येषु निश्चितम्।
नो पीतं रामनामाख्यं पीयूषं मानवाऽऽ—कृतै।।751।।

हम लोग उन लोगों के भाग्य को निश्चित ही नित्य धिक्कारते हैं जिन

लोगों ने मानव शरीर से श्रीरामनामरूपी अमृत का पान नहीं किया।

सूक्ष्ममत्यन्तमात्मानं प्रवदन्ति विपश्चितः।

तस्याऽप्यनुभवः साक्षाज्जायते नामकीर्तनात्।।752।।

विद्वान लोग आत्मा को अत्यन्त सूक्ष्म कहते हैं उस सूक्ष्म आत्मा का भी अनुभव श्रीरामनाम के संकीर्तन से हो जाता है।

ज्ञानानां परमं ज्ञानं ध्यानानां परमो लयः।

योगानां परमो योगो रामनामानुकीर्तनम्।।753।।

समस्त ज्ञानों में परम ज्ञान, ध्यानों में परमलयस्वरूप एवं योगों में परम योग श्रीरामनाम का संकीर्तन है।

अयमेव परो लाभः सर्वेषां जगतीतले।

नामव्याहरणं नित्यं श्रीरामस्य सनातनम्।।754।।

इस संसार में सभी के लिए यही सर्वश्रेष्ठ लाभ है कि भगवान् श्रीराम के सनातन श्रीरामनाम का नित्य कीर्तन स्मरण हो।

परं ब्रह्ममयं नाम वेदानां गुह्यमुत्तमम्।

यत्प्रसादात् परां शान्तिं लभते पातकी नरः।।755।।

परम ब्रह्मस्वरूप वेदों का उत्तम गुह्य पदार्थ श्रीरामनाम है जिनकी कृपा से पापी भी परम शान्ति को प्राप्त कर लेता है।

ब्राह्मणः श्वपचीं भुञ्जन् विशेषेण रजस्वलाम्।

यदन्नं सुरया पक्वं मरणे नाम संस्मरेत्।।756।।

स याति परमं स्थानं सर्वपापविवर्जितः।

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं रामनामप्रभावतः।।757।।

तद्देहलक्षणं वृक्षं पापरूपास्तु पक्षिणः।

त्यक्त्वा चोड्डीय गच्छन्ति विलम्बं संविहाय च।।758।।

जो ब्राह्मण किसी रजस्वला चाण्डाली स्त्री को भोग करते हुए उसके द्वारा शराब में पकाये हुए अन्न को खाता है वह भी यदि मरते समय श्रीरामनाम का स्मरण कर लेता है तो श्रीरामनाम के प्रभाव से वह सभी पापों से मुक्त होकर उत्कृष्ट स्थान को प्राप्त करता है यह सत्य सत्य एवं सत्य है। उसके शरीररूपी वृक्ष को पापरूपी पक्षीगण अविलम्ब त्याग करके उड़ जाते हैं।

क्रतुस्मृतौ

क्रतुस्मृति में

तन्नास्ति कायजं लोके वाक्यजं मानसं तथा।
यत्तु न क्षीयते पापं रामनामजपान्मुने।।759।।

हे मुने! शारीरिक, मानसिक तथा वाचिक ऐसा कोई पाप नहीं है जो श्रीरामनाम के जप से नष्ट न हो जाय।

न तावत् पापमस्तीह यावन्नाम्ना हतस्मृतम्।
अतिरेकभयादाहुः प्रायश्चित्तान्तरं बुधाः।।760।।

इस जगत् में उतने पाप नहीं है जितने पापों के नाश की बात श्रीरामनाम से कही गयी है विद्वानों ने अधिकता के भय से दूसरे प्रायश्चितों की बात कही है।

महाभारते शान्तिपर्वणि भगवद्वाक्यम्

महाभारत में शान्ति पर्व में भगवान् का वाक्य

ऋग्वेदेऽथ यजुर्वेदे तथैवाथर्वसामसु।
पुराणे सोपनिषदि तथैवं ज्योतिषे[1] ऽर्जुन।।761।।
सांख्ये च योगशास्त्रे च आयुर्वेदे तथैव च।
बहूनि मम नामानि कीर्तितानि महर्षिभिः।।762।।
गौणानि तत्र नामानि कर्मजानि च कानि च।
सर्वेषु मन्त्रतत्त्वेषु रामनामपरात्परम्।।763।।

हे अर्जुन! ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद एवं सामवेद, पुराणों, उपनिषदों ज्योतिषशास्त्र, सांख्य, योग और आयुर्वेदादि ग्रन्थों में महात्माओं ने हमारे अनेक नामों को कहा है उनमें कुछ नाम गौण एवं कुछ कर्म के अनुसार है सभी मन्त्र तत्वों में परात्परस्वरूप श्रीरामनाम श्रेष्ठ है।

इति श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाशे प्रमोदनिवासे परात्परैश्वर्यदायके श्रीयुगलानन्यशरणसंगृहीते समस्तरहस्यसारे स्मृतिवाक्यप्रमाणनिरूपणं नाम पंचमः प्रमोदः ।।5।।

पञ्चम प्रमोद समाप्त



1. आर्षप्रयोग है।

स्वामीयुगलानन्यशरणजी द्वारा संकलितः

षष्ठः प्रमोदः

रहस्योक्त वचनानि

अथ छठे प्रमोद में रहस्योक्तवचन

शिवरहस्ये

शिवरहस्य में

शोचन्ते ते तपोहीनाः स्वभाग्यानि दिने दिने।
प्रमादेनापि यैर्नोक्तं श्रीरामेत्यक्षरद्वयम्।।1764।।

वे[1] तपस्या से रहित लोग प्रतिदिन अपने भाग्यों के लिए शोक करते हैं जिन्होंने प्रमादवश भी श्रीरामनाम के दो अक्षरों का उच्चारण नहीं किया।

रामनाम सुविज्ञेयाः षणमात्रास्तत्त्वबोधकाः ।
जानन्ति तत्त्वनिष्णाता रामनामप्रसादतः ।।1765।।

श्रीरामनाम में तत्व का बोध कराने वाली छः मात्राएँ हैं तत्व में निष्णात पण्डित लोग श्रीरामनाम की कृपा से उन मात्राओं को जानते हैं।

रामनाम्नि स्थितो रेफो जानकी तेन कथ्यते।
अकारेण तु विज्ञेयः श्रीरामः पुरुषोत्तमः।।1766।।
आकारेण तु विज्ञेयो भरतो विश्वपालकः।
व्यञ्जनेन मकारेण लक्ष्मणोऽत्र निगद्यते।।1767।।
ह्रस्वाकारेण निगमैः शत्रुघ्नः समुदाहृतः।
मकारार्थो द्विधा ज्ञेयः सानुनासिकभेदतः।।1768।।
प्रोच्यन्ते तेन हंसा वै जीवाश्चैतन्यविग्रहाः।
संसारसागरोत्तीर्णाः पुनरावृत्तिवर्जिताः।।1769।।

1. रामनाम अनुराग धन चिन्तामणि चयसार। युगलानन्य स्नेह से जपिये बारहिंवार ।।
सीताराम प्रपन्न विनु भये न मोद अनन्त । युगलानन्य सनेह सजि पाइय प्रभा समन्त ।।

वेदों ने श्रीरामनाम के 'र' का अर्थ श्रीजानकीजी, 'अ' का अर्थ श्रीरामजी 'आ' का अर्थ विश्वपालक श्रीभरतजी, 'म' का अर्थ श्रीलक्ष्मणजी और ह्रस्व 'अ' का अर्थ श्रीशत्रुघ्नजी किया है। मकार का अर्थ अनुनासिक एवं निरनुनासिक के भेद से दो प्रकार से किया गया है। उसके द्वारा हंस स्वरूप चैतन्य से अभिन्न संसार सागर से उत्तीर्ण एवं आवागमन से रहित जीव कहे जाते हैं।

सैवाधिकारिणः सर्वे श्रीरामस्य परात्मनः।
एतत्तात्पर्यमुख्यार्थादन्यार्थो योऽनुभूयते।।770।।
सोऽनर्थ इति विज्ञेयः संसारप्राप्तिहेतुकः।
तस्मात्तात्पर्यमर्थं च मन्तव्यं नामतन्मयैः।।771।।

सभी जीव परमात्मा श्रीराम की प्राप्ति के अधिकारी हैं श्रीरामनाम का यही मुख्य अर्थ है इसके अतिरिक्त यदि कोई दूसरे अर्थ का अनुभव करता है तो अर्थ नहीं है अपितु वह संसार की प्राप्ति कराने वाला अनर्थ है अतः श्रीरामनामानुरागियों को वास्तविक तात्पर्यार्थ का मनन करना चाहिए।

नारायणरहस्ये

श्रीनारायणवाक्यं नारदं प्रति

नारायणरहस्य में श्रीनारायणजी का वाक्य नारदजी के प्रति

यथौषधं श्रेष्ठतमं महामुने अजानतोऽप्यात्मगुणं प्रकुर्वते।
तथैव श्रीराघवनामतो जनाः परं पदं यान्त्यनायासतः खलु।।772।।

हे महामुने! जैसे अत्यन्त श्रेष्ठ औषधि अनजाने में भक्षण करने पर भी अपने गुण को प्रकट करता ही है उसी प्रकार लोग भगवान् श्रीसीतारामजी के मंगलमय श्रीरामनाम से बिना प्रयास के ही निश्चित ही परम पद को प्राप्त कर लेते हैं।

यथा दीपेन धाम्नस्तु तमस्तोमविनाशनम्।
तथा श्रीरामनाम्ना तु अविद्यासन्निवर्तते।।773।।

जैसे घर के अन्धकार समूह दीपक के द्वारा नष्ट हो जाते हैं उसी प्रकार श्रीरामनाम से अविद्या की निवृत्ति हो जाती है।

यन्नामकीर्तनाद्दोषास्सर्वे नश्यन्ति तत्क्षणात्।
विनिर्दोषायते तस्मै श्रीरामाय नमो नमः।।774।।

जिसके मंगलमय श्रीरामनाम का संकीर्तन करने से सभी दोष उसी क्षण नष्ट हो जाते हैं ऐसे दोषों से सर्वथा परे भगवान् राम को नमस्कार हो नमस्कार हो।

त्यजेत् कलेवरं रोगी मुच्यते सर्वकर्मभिः।
भक्त्याऽऽवेश्य मनो यस्मिन् वाचा श्रीनाम कीर्तने ॥775॥
यस्तारयति भूतानि त्रिलोकीसंभवानि च।
स्वनामकीर्तनेनैव तस्मै नामात्मने नमः ॥776।।

जो रोगी भक्तिपूर्वक श्रीरामनाम के संकीर्तन में अपने मन को लगा दिया वह सभी कर्मों से रहित होकर अपने शरीर को छोड़ता है। जो अपने नाम श्रीरामनाम के संकीर्तन से ही त्रिलोकी में उत्पन्न समस्त प्राणियों को तार देते हैं ऐसे नाम की आत्मा नामी भगवान् श्रीराम को नमस्कार है।

श्रीरामेत्युक्तमात्रेण दैहिकः क्लेशबन्धनः।
पापौघो विलयं याति दानमश्रोत्रिये यथा।।777॥

श्रीरामनाम के उच्चारण मात्र से देह के बन्धन भूत क्लेश कारक पाप प्रवाहों का उसी प्रकार विलय हो जाता है जैसे अवैदिक ब्राह्मण को दिया गया दान नष्ट हो जाता है।

ब्रह्मरहम्ये

ब्रह्मरहस्य में

नियतं रामनाम्नस्तु कीर्तनाच्छ्रवणाच्छिवे।
महतोऽप्येनसः सत्यमुद्धरेद्राघवो बली ।।778।।

हे पार्वति! श्रीरामनाम का नियत रूप से कीर्तन एवं श्रवण करने से महाबली भगवान् श्रीरामजी बड़े से बड़े पाप से उद्धार कर देते हैं। यह सत्य हैं।

सत्यंब्रवीमि देवेशि श्रुत्वेदमवधारय।
नामसंकीर्तनादन्यो मोचकोऽत्र न विद्यते ।।779।।

हे देवेश्वरि पार्वति! मैं सत्य कहता हूँ इसे सुनकर तुम धारण करो जीव के लिए श्रीरामनाम के संकीर्तन के अलावा दूसरा कोई भवबन्धन से मुक्त करने वाला साधन नहीं है।

सकृदुच्चारयेद्यस्तु रामनामेतिमंगलम्।
हेलया श्रद्धया वापि स पूतः सर्वपातकैः।।780।।

उपेक्षापूर्वक या श्रद्धा से जो परम मंगलमय श्रीरामनाम का एक बार उच्चारण करता है वह सभी पापों से मुक्त होकर परम पवित्र हो जाता है।

सर्वाचारविहीनोऽपि तापक्लेशादिसंयुतः।
श्रीरामनाम संकीर्त्य याति ब्रह्म सनातनम्।।781।।

विविध तापक्लेशादि से युक्त होकर सदाचार से रहित होकर भी जीव एक बार श्रीरामनाम का संकीर्तन करके सनातन ब्रह्म स्वरूप परमपद को प्राप्त कर लेता है।

विष्णुरहस्ये

विष्णुरहस्य में

यस्य नाम सततं जपन्ति येऽज्ञानकर्म कृतबन्धनं क्षणात्।
सद्य एव परिमुच्य तत्पदं याति कोटिरविभास्वरं शिवम्।।782।।

भगवान् के मंगलमय नाम श्रीरामनाम का जो जप करते हैं उनके अज्ञान जन्य कर्मकृत बन्धन तत्क्षण नष्ट हो जाते हैं और वे करोड़ों सूर्य के समान तेजस्वी शिवस्वरूप परमपद को प्राप्त कर लेते हैं।

सर्वकाले शुचिर्नाम महामोक्षैककारणम्।
इति मत्वा जपेद्यस्तु स तु सिद्धान्तपारगः।।783।।

श्रीरामनाम मोक्ष का एक मात्र कारण और हर समय परम पवित्र है ऐसा मानकर जो श्रीरामनाम का जप करता है वही वास्तव में सिद्धान्त का पारगामी है।

श्रीरामदिव्यनामानि सर्वदा परिकीर्तयेत्।
यतः सर्वात्मकं नाम पावनानां च पावनम्।।784।।

भगवान् राम के दिव्यनामों का सदासर्वदा कीर्तन करना चाहिए क्योंकि श्रीरामनाम सर्वात्मक एवं पवित्रता को भी पवित्र करने वाला है।

गणेशरहस्ये

श्रीगणेश रहस्य में

सर्वजातिबहिर्भूतो भुञ्जानो वा यतस्ततः।
कदाचिन्नारकं दुःखं नाम वक्ता न पश्यति।।785।।

जो सभी जातियों से बहिर्भूत है और जहाँ तहाँ खाते–पीते रहते हैं वे भी श्रीरामनाम का उच्चारण करने पर नरक जन्य दुख को नहीं भोगते हैं।

स्मरणे रामनाम्नस्तु मानसं यस्य वर्तते।
तस्य वैवस्वतो राजा करोति लिपिमार्जनम्।।1786।।

जिसका मन श्रीरामनाम के स्मरण में लगा रहता है धर्मराज उसके पाप पुण्य की लिपि को धो डालते हैं।

एकस्मिन्नप्यतिक्रान्ते मुहूर्ते नामवर्जिते।
दस्युभिर्मोषितस्तेन युक्तमाक्रन्दितुं भृशम्।।1787।।

हमारी आयु का एक मुहूर्त भी श्रीरामनाम के जप के बिना यदि बीत जाय तो हमारे पापरूप चोरों ने मेरे समय को चुरा लिया ऐसा समझकर आर्त स्वर में क्रन्दन करना चाहिए यही उचित होगा।

शक्तिरहस्ये

शक्तिरहस्य में

रामेतिब्रुवतोऽनिशं भुवि जनस्येतावता संक्षयं–
पापानामतिशोधकं खलु पुनर्नान्यत् कृतं चिन्तनम्।
मार्तण्डोदयकाल एव तमसो नास्ति क्षतिस्स्यात् क्षयं–
किं कार्यं पुरुषः प्रदीपकरणेचार्थानभिज्ञैर्वृथा।।1788।।

निरन्तर श्रीरामनाम का उच्चारण करने वाले मनुष्य के समस्त पापो का सम्यक् नाश हो जाता है फिर किसी अन्य साधनों की आवश्यकता नहीं है क्योंकि श्रीरामनाम ही निश्चित रूप से समस्त पापों का विशोधक है जैसे सूर्य के उदय होते. ही समस्त अन्धकारों का नाश हो जाता है। अन्धकार के नाश हेतु दीपकादि की फिर आवश्यकता नहीं रहती है।

अहो मूर्खमहो मूर्खमहो मूर्खमिदं जगत्।
विद्यमानेऽपि मत्स्वामी मूढा नैव रमन्ति च।।1789।।

यह जगत् बड़ा ही मूर्ख है यही महान् आश्चर्य है कि सर्व समर्थ हमारे स्वामी श्रीरामनाम के विद्यमान एवं सर्वसुलभ होने पर भी मूर्ख लोग उसमें रमण नहीं करते हैं।

सिद्धान्तरहस्ये
सिद्धान्तरहस्य में

श्रीराम राम रघुवंशकुलावतंस त्वन्नामकीर्तनपरा भवतीह वाणी।
नान्यं वरं रघुपते भ्रमतोऽपि याचे सत्यंवदामि रघुवीर दयानिधेऽहम् ।।1790।।

हे श्रीरघुवंश शिरोमणे हे दयानिधे! हे रघुवीर रामजी! हमारी जिह्वा सदासर्वदा आपके नाम के संकीर्तन स्मरण में ही लगी रहे यही वरदान आपसे माँगता हूँ, भ्रमवश भी कोई दूसरा वरदान में नहीं माँगता हूँ मैं यह सत्य कहता हूँ आप तो अन्तर्यामी हैं ही अतः स्वतः समझ लीजिए।

तस्मात् मूर्खतरः कोऽपि कोऽन्यस्तस्मादचेतनः।
यस्य नाम्नि परा प्रीतिर्नास्ति सर्वेश्वरेश्वरे ।।1791।।

सर्वेश्वरों के स्वामी श्रीरामनाम में जिसकी पराप्रीति नहीं हुई तो उससे बढ़कर अत्यन्त मूढ़ और जड़ कोई दूसरा नहीं है।

परमानन्दजलधौ नाम्नि सिद्धान्तमौलिनि।
नास्ति यस्य रतिर्नित्या स विप्रः श्वपचाधमः ।।1792।।

जिसकी[1] परमानन्द समुद्र सिद्धान्त सार सर्वस्व श्रीरामनाम में नित्य रति नहीं हुई तो वह विप्र भी अधम चाण्डाल है।

अहो चित्रमहो चित्रमहोचित्रमिदं द्विजाः।
रामनाम परित्यज्य संसारे रुचिमुल्वणाम् ।।1793।।

हे द्विजश्रेष्ठो! सबसे बड़ा आश्चर्य एवं वैचित्र्य यही है कि मनुष्यों की श्रीरामनाम को छोड़कर संसार में उत्कृष्ट प्रीति हो रही है।

यावन्नेन्द्रियवैकल्यं यावद्व्याधिर्न बाधते।
तावत् संकीर्तयेद्रामं सहजानन्ददायकम् ।।1794।।

जब तक इन्द्रियाँ स्वस्थ हैं विकलांग नहीं हुई और किसी प्रकार के रोग पीड़ा नहीं दे रहे हैं तब तक स्वाभाविक आनन्द प्रदायक श्रीरामनाम का संकीर्तन अवश्य कर लेना चाहिए।

मातृगर्भाद्यदा जीवो निष्क्रान्तश्च तदैव हि।
मृत्युवक्त्रागतो वाढं तस्माद्रामं प्रकीर्तयेत् ।।1795।।

---

1. श्रीसियपिय गुननिधिनवल, नाम सकल सुखखान। जो न जपे अनुराग सजि तासम कौन मलान।। (श्रीयुगलानन्दशरणजी)

जीव जब माँ के गर्भ से भूतल पर आया तभी से मृत्यु के मुख में आ गया उत्तरोत्तर आयु क्षीण होगी अतः उत्तम यहीं है कि श्रीरामनाम का कीर्तन करें।

नारदपाञ्चरात्रे

नारदपांचरात्र में

कदाऽहं विजनेऽरण्ये निरन्तरमितस्ततः।
प्रलपन् राम रामेति गमिष्यामि च वासरान्।।796।।

हे प्रभो! कब ऐसा सुअवसर प्राप्त होगा जब निर्जन वन में इधर उधर विचरण करते हुए श्रीरामनाम का उच्चारण करते हुए अपने दिनों को व्यतीत करूँगा।

यन्नाम स्मरतां पुंसां सद्यो हरति पातकम्।
जायते चाक्षयं पुण्यं तं वन्दे जानकीपतिम्।।797।।

जिनके श्रीरामनाम का स्मरण करने वाले पुरुषों का पाप तत्काल नष्ट हो जाता है और अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है उन श्रीजानकीनाथ भगवान् श्रीराम की मैं वन्दना करता हूँ।

स्रग्रामनाममणिकस्य च यस्य कण्ठे संराजते प्रतिदिनं स तु मुक्तिरूपः।
जन्मादिदुःखपरिपूर्णमहार्णवस्य साक्षात्परं परतरं प्लवनं पवित्रम्।।798।।

श्रीरामनामरूपी मणियों की माला जिसके कण्ठ में सम्यक् रूप से प्रतिदिन विराजमान होती है वह जीवन्मुक्त है अर्थात् जीते जी मुक्ति को पा लिया है क्योंकि श्रीरामनाम जन्ममरणरूपी महादुख समुद्र को पार करने के लिए सर्वश्रेष्ठ एवं परमपवित्र नौका है श्रीरामनाम के माध्यम से सहज में भव पार हो सकते हैं।

अयं सर्वेषु मन्त्रेषु चूडामणिरुदाहृतः।
मन्त्राणां सिद्धिदो मन्त्रः श्रीरामेत्यक्षरद्वयम्॥1799।।

यह श्रीरामनाम सभी मन्त्रों में चूड़ामणि कहा गया है श्रीरामनाम के 'रा' 'म' ये दो अक्षर सभी मन्त्रों को सिद्धि प्रदान करने वाला महामन्त्र है।

सर्वार्थसिद्धियुक्तेषु नाम्नामेकार्थतापतः।
अतः श्रीरामनामेदं भजेद्भावैकवल्लभम् ॥800॥

सभी प्रकार के अर्थ एवं सिद्धि से युक्त भगवान् के समस्त नामों का सम्मिलित एक रूप श्रीरामनाम है अतः एकमात्र भाव प्रिय इस श्रीरामनाम का सदासर्वदा भजन करना चाहिए।

इति श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाशे प्रमोदनिवासे परात्परैश्वर्यदायके श्रीयुगलानन्यशरणसंगृहीते रहस्यवाक्यप्रमाणनिरूपणं नाम षष्ठः प्रमोदः ॥16॥

षष्ठ प्रमोद समाप्त



स्वामीयुगलानन्यशरणजी द्वारा संकलितः

सप्तमः प्रमोदः

यामलोक्तवचनानि

सातवें प्रमोद में यामलोक्त वचन

ब्रह्मयामले

ब्रह्मयामल में

रकारः सर्वदेवानां साक्षात् कालानलः प्रभुः।
रकारः सर्वजीवानां सर्वपापस्य दाहकः ॥801॥

श्रीरामनाम का 'र' सभी देवताओं में सर्वसमर्थ साक्षात् कालाग्नि है एवं 'र' सभी जीवों के सभी पापों का नाशक अग्निरूप है।

रकारः सर्वभूतानां जीवरूपी परात्परः।
रकारः सर्वदेवानां तेजःपुञ्जः सनातनः ॥802॥

'र' समस्त प्राणियों में परात्पर जीव है एवं सभी देवों का सनातन तेजःपुञ्ज 'र' है।

रकारः सर्वसौख्यानां सिद्धिदस्तु पुरातनः।

रकारः सर्वविद्यानां वेद्यस्तत्त्वं सनातनः।।803।।

'र' सभी प्रकार के सुखों को देने वाली सिद्धियों को प्रदान करने वाला पुराना दाता है एवं सभी विद्याओं से वेद्य सनातन तत्व 'र' है।

रकारः सर्वभूतानामीश्वरोऽनन्तरूपधृक्।

रकारः सर्वभूतानां व्याप्यव्यापकमीश्वरः।।804।।

सभी प्राणियों का स्वामी अनन्तस्वरूप धारण वाला 'र' है एवं समस्त प्राणियों का व्याप्य तथा व्यापक ईश्वर 'र' है।

रकारादुपद्यते नित्यं रकारे लीयते जगत्।

रकारो निर्विकल्पश्च शुद्धबुद्धस्सदाऽद्वयः।।805।।

यह जगत् 'र' से ही उत्पन्न होता है और 'र' में ही विलीन हो जाता है 'र' शुद्ध बुद्ध सदा अद्वैत एवं निर्विकल्प है।

रकारः सर्वकामश्च परिपूर्णमनोरथः।

रकारः सर्वदुष्टानां नाशको रघुनायकः।।806।।

'र' सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाला है एवं सभी दुष्टों का नाश करने वाले भगवान् श्रीराम ही 'र' है।

रकारः सर्वसत्त्वानां महामोदमयः स्वराट्।

रकारः सर्ववेदानां कारणः प्रकृतेः परः।।807।।

समस्त प्राणियों को महामोद प्रदान करने वाला सर्वतन्त्र स्वतन्त्र 'र' है एवं समस्त वेदों का मूल एवं प्रकृति से सर्वथा परे 'र' है।

तत्रैव पार्वतीवाक्यं श्रीशिवं प्रति

वहीं श्रीपार्वतीजी का वाक्य शिवजी के प्रति

गुटिका पादुका सिद्धिः परकायप्रवेशनम्।

वाचा सिद्धिश्चार्थसिद्धिस्तथा सिद्धिर्मनोमयी।।808।।

ज्ञानविज्ञानकर्माणि नानासिद्धिकराणि च।

लक्ष्मी कुतूहला सिद्धिर्वाञ्छासिद्धिस्तु खेचरी।।809।।

केनेदं सर्वमाप्नोति देव मे वद तत्त्वतः।
सर्वतो निर्णयं कृत्वा ज्ञात्वा मामनुगामिनीम्।।810।।

हे भोलेनाथ! गुटिका—उड़ने की शक्ति, पादुका सिद्धि—जल पर चलने की सिद्धि, दूसरे के शरीर में प्रवेश करने की शक्ति, वाणी की सिद्धि अर्थात् जो कहे वह सत्य हो जाय, सृष्टि के समस्त धन सम्पत्ति को देखने की शक्ति, मनोऽनुकूल सिद्धि, अनेक प्रकार के चमत्कार एवं सिद्धिमय ज्ञान विज्ञान की सिद्धि आश्चर्यमय लक्ष्मी की सिद्धि और अपनी चाहना के अनुरूप आकाश में उड़ने की शक्ति है। देवाधिदेव महादेव! ये सभी प्रकार की सिद्धियाँ कैसे प्राप्त होंगी मुझे अपनी सेविका समझकर सभी तरह से निर्णय करके यथार्थ रूप से मेरे लिए कहिए।

श्रीशिव उवाच

श्रीशिवजी ने कहा

सर्वैश्वर्यप्रदं सर्वसिद्धिदं परमार्थदम्।
महामाङ्गलिकं नित्यं रामनाम परात्परम्।।811।।

हे पार्वति ! सभी प्रकार के ऐश्वर्यों का प्रदाता, सभी सिद्धियों का दाता, परमार्थ को देने वाला, और महामंगलमय परात्परस्वरूप श्रीरामनाम है अर्थात् श्रीरामनाम के जप एवं कीर्तन से ही सभी सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती है।

नातः परतरोपायः सुखार्थं वर्तते प्रिये।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं नान्यथा वचनं मम।।812।।

हे प्राणप्रिये पार्वति! मनुष्यों के लिए सभी प्रकार सुख प्राप्ति के लिए श्रीरामनाम से बढ़कर दूसरा कोई उपाय नहीं है यही सत्य—सत्य एवं सत्य है मेरी वाणी अन्यथा नहीं है।

तत्रैव स्थानान्तरे

वहीं दूसरी जगह में

रामनामपरा वेदा रामनामपरा गतिः।
रामनामपरा यज्ञा रामनामपरा क्रियाः।।813।।

सभी वेदों का परम तात्पर्य, सभी सद्गतियों का मूल, सभी यज्ञों का पर्यवसान एवं समस्त अनुष्ठानादि क्रियाओं का परम फल श्रीरामनाम है।

रामनाम सदानन्दो रामनाम सदागतिः।

रामनाम सदातुष्टो रामनाम सदाऽमलः।।814।।

श्रीरामनाम सम्यक् आनन्दस्वरूप सम्यक् गतिरूप, सम्यक् सन्तोषस्वरूप और सदासर्वत्र पवित्र है।

रामनाम परं ज्ञानं रामनाम परो रसः।

रामनाम परो मन्त्रो रामनाम परो जपः।।815।।

श्रीरामनाम सर्वोत्कृष्ट ज्ञान, सर्वश्रेष्ठ रस, परम मन्त्र एवं सर्वश्रेष्ठ जपस्वरूप है।

रामनाम परं ध्यानं सदा सर्वत्र पूर्णकम्।

रामनाम सदा सेव्यमीश्वराणां मम प्रिये।।816।।

हे प्रिये पार्वति! सदासर्वदा सर्वत्र परमपूर्ण श्रीरामनाम ही सर्वश्रेष्ठ ध्यान सभी ईश्वरों एवं मेरे द्वारा सदासर्वदा सेव्य नाम है।

रकारादीनि नामानि शृण्वतो मम पार्वति।

मनः प्रसन्नतामेति रामनामाभिशङ्कया।।817।।

हे पार्वति! 'र' जिस शब्द के पहले आता है ऐसे रात्रि, रथ, रत्नादि शब्दों को सुनकर मेरा मन इस आशंका से प्रसन्न हो जाता है कि यह रामनाम का उच्चारण करेगा।

रुद्रयामले श्रीशिववाक्यं शिवां प्रति

रुद्रयामल में श्रीशिवजी का वाक्य पार्वती के प्रति'

मकारः सर्व साध्यानां सर्वसौख्यप्रदस्तथा।

मकारः सर्वदेवानां सिद्धिदस्तु सदा प्रिये।।818।।

हे प्रिये! सभी साध्य पदार्थों को सर्वविध सुख प्रदान करने वाला तथा सभी देवों को सदासर्वदा सिद्धि देने वाला श्रीरामनाम का 'म' है।

मकारः सर्वमूलानां मूलं मोदमयः स्वराट्।
मकारश्च पराशक्तिरुज्ज्वला सर्वकामदा।।819।।

समस्त मूलों का महामूल आनन्दमय एवं सर्वतन्त्र स्वतन्त्र 'म' है और सभी कामनाओं को प्रदान करने वाली परम उज्ज्वल पराशक्ति 'म' है।

मकारः सर्वजीवानां पालको जगदीश्वरः।
मकारः सर्वसिद्धीनां कारणं नात्र संशयः।।820।।

सभी जीवों का पालन करने वाला जगत् का स्वामी एवं सभी सिद्धियों का एकमात्र कारण 'म' है इसमें संशय नहीं है।

मकारो लोकलोकानां मकारः सर्वव्यापकः।
मकारः सर्वशास्त्राणां सिद्धान्तः सर्वमुक्तिदः।।821।।

समस्त लोकालोकों में व्यापक, सबको मुक्ति प्रदान करने वाला एवं सभी शास्त्रों का सिद्धान्त 'म' है।

रकारादेर्न सिद्धिः स्यान्मकारादिं विना शिवे।
मकारादेर्नसिद्धिः स्याद्रकारादिं विना प्रिये।।822।।
तस्माद्विवेकिभिर्नित्यं जप्तव्यमुभयाक्षरम्।
सिद्धान्तं सर्ववेदानां रामनाम परात्परम्।।823।।

हे प्राणवल्लभे पार्वति! मकारादि के बिना रकारादि की सिद्धि नहीं हो सकती एवं रकारादि के बिना मकारादि की सिद्धि नहीं हो सकती है इसलिए विवेकी पुरुषों को नित्य सभी वेदों के सिद्धान्तस्वरूप परात्पर श्रीरामनाम के दोनों अक्षरों 'राम' का जप करना चाहिए।

संमोहनतन्त्रे श्रीशिववाक्यं शिवां प्रति

संमोहन तन्त्र में श्रीशिवजी का वाक्य पार्वती जी के प्रति

यन्मयोदितमुल्लासं मन्त्राणां भूधरात्मजे।
तत् सर्वं रामनाम्ना वै सिद्धिमाप्नोति निश्चितम्।।824।।

हे पर्वतनन्दिनी पार्वति! मैंने जितने मन्त्र तन्त्रों के उल्लास का वर्णन किया है वे सब श्रीरामनाम से ही शक्ति एवं सिद्धि प्राप्त करते हैं।

रामनामप्रभावेण पञ्च तत्त्वात्मकस्तनुः।
स भवेत् सच्चिदानन्दः सत्यं सत्यं वचो मम।।825।।

हे पार्वति! निरन्तर श्रीरामनाम के जप करने से श्रीरामनाम के प्रभाव से यह पाञ्चभौतिक शरीर भी सच्चिदानन्दस्वरूप हो जाता है मेरी यह वाणी सत्य है सत्य है।

चित्तैकाग्रतया नित्यं ये जपन्ति सदाप्रिये।

रामनाम परं ब्रह्म किञ्चित्तेषां न दुर्लभम्।।826।।

हे प्रिये! परब्रह्मस्वरूप श्रीरामनाम को जो एकाग्रचित्त से नित्य जपते हैं उनके लिए कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं है।

सर्वेषां सुप्रयोगाणां सिद्धिरन्यत्र दुर्लभा।

श्रीरामनामस्मरणादनायासेन सिध्यति।।827।।

श्रीरामनाम के बिना सभी मन्त्र तन्त्रों के प्रयोगों की सिद्धि दुर्लभ है और श्रीरामनाम के स्मरण से बिना श्रम के ही सभी प्रयोग सिद्ध हो जाते हैं।

तस्माच्छ्रीरामनाम्नस्तु कीर्तनं सर्वसिद्धिदम्।

कर्त्तव्यं नियतं देवि त्यक्त्वाऽन्यान्मन्त्र सञ्चयान्।।828।।

हे देवि! इसीलिए दूसरे मन्त्र संचयों का त्याग करके सभी सिद्धियों को प्रदान करने वाले श्रीरामनाम के संकीर्तन को व्यापक रूप से करना चाहिए।

प्राणात् प्रियतरं मह्यं रामनाम सदा प्रिये।

क्षणं विहातुं शक्तोऽस्मि नैव देवि कदाचन।।829।।

हे प्रिये! मुझे प्राणों से भी ज्यादा प्रिय श्रीरामनाम है हे देवि! श्रीरामनाम को छोड़कर मैं एक क्षण भी जीने में समर्थ नहीं हूँ।

तन्त्रसारे

तन्त्रसार में

इदमेव परं सारं सर्वेषां मन्त्रसंहतेः।

वेदानां हृदयं सौम्य रामनामसुधास्पदम्।।830।।

हे सौम्य! सभी मन्त्र समुदाय का परमसार एवं वेदों का हृदय अमृतस्वरूप श्रीरामनाम है।

यावच्छ्रीरामनाम्नस्तु पानं नास्ति नृणां शिवे।

तावन्मन्त्राणि यन्त्राणि रुचिः स्याद्हृदयस्थले।।831।।

हे पार्वति ! मनुष्यों की अन्य मन्त्र तन्त्रों में रूचि तभी तक होती है जब तक उन्होंने श्रीरामनामरूपी अमृत का पान न किया हो अर्थात् श्रीरामनाम के आस्वादन के पश्चात् सभी मन्त्र तन्त्र फीके लगते हैं।

दुर्लभं सर्वजीवानामिमं मन्त्रेश्वरेश्वरम्।
कथं भजन्ति पापिष्ठाः सुकृतौघं बिना प्रिये।।832।।

हे प्रिये! बिना पुण्य के अत्यन्त पापी लोग इस श्रेष्ठ मन्त्रों के भी स्वामी, सामान्य जीवों के लिए दुर्लभ श्रीरामनाम का भजन कैसे करते हैं?

मन्त्रमहोदधौ

मन्त्रमहोदधि में

असारतरसंसारसागरोत्तारकारकम्।
हारकं दुःखजालानां श्रीरामेत्यक्षरद्वयम्।।833।।

अत्यन्त असार संसार सागर का तारक एवं दुःख समूह का नाशक 'रा' 'म' ये दो अक्षर है।

श्रीरामनामसर्वस्वं मंत्राणां परमं गुरुम्।
यस्य संकीर्तनाज्जन्तुर्याति निर्वाणमुत्तमम्।।834।।

सभी मन्त्रों का सर्वस्व एवं परम गुरु श्रीरामनाम है जिस श्रीरामनाम के संकीर्तन करने से जीव उत्तम मुक्ति को प्राप्त करता है।

मन्त्रप्रकाशे

मन्त्र प्रकाश में

कृतं सद्ग्रन्थशास्त्राणां निर्णयं परमं मया।
श्रीरामनामस्मरणं सारमन्यत् निरर्थकम्।।835।।

मैंने सभी सद्ग्रन्थों एवं शास्त्रों का परम निर्णय यह निश्चित किया है कि श्रीरामनाम का स्मरण ही सार है शेष सब व्यर्थ है।

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदस्सामवेदत्वथर्वणः।
अधीतास्तेन येनोक्तं श्रीरामेत्यक्षरद्वयम्।।836।।

जिसने राम इन दो अक्षरों का उच्चारण कर लिया उसने सम्पूर्ण ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद का अध्ययन कर लिया।

श्रीरामनाम संत्यक्त्वा ह्यन्यस्मिन् यस्य संरुचिः।

स तु बध्यतमो लोके पुनरायाति याति च।।837।।

जिस अधम की श्रीरामनाम को छोड़कर अन्य मन्त्रों के जप में रूचि है वह अवश्य वध के योग्य है और वह इस जगत् में बार बार आता और जाता है।

इति श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाशे प्रमोदनिवासे परात्परैश्वर्यदायके श्रीयुगलानन्यशरणसंगृहीते तन्त्रवाक्यप्रमाणनिरूपणं नाम सप्तमः प्रमोदः ।।7।।

सप्तम प्रमोद समाप्त



स्वामीयुगलानन्यशरणजी द्वारा संकलितः

अष्टमः प्रमोदः

नानाग्रन्थोक्त वचनानि

अष्टम प्रमोद में नाना ग्रन्थोक्तवचन

श्रीजानकीविनोदविलासे

श्रीजानकीविनोदविलास में

सीतां विना भजेद्रामं सीतां रामं विना भजेत्।

कल्पकोटिसहस्रैस्तु लभते न प्रसन्नताम्।।838।।

जो सीताजी के बिना रामजी का और रामजी के बिना सीताजी का भजन करते हैं वे लोग करोड़ों कल्पों तक प्रसन्नता को नहीं प्राप्त करते हैं। अर्थात् वे लोग सदा अशान्त ही रहते हैं।

सीतारामात्मकं ध्यानं सीतारामात्मकार्चनम्।

सीतारामात्मकं नामजपं परतरात्परम्।।839।।

श्रीसीतारामजी का ध्यान, पूजन एवं युगलनाम का जप ही सर्वश्रेष्ठ है।

श्रीजानकीविलासोत्तमे

श्रीजानकीविलासोत्तम में

स रामो न भवेज्जातु सीता यत्र न विद्यते।
सीता नैव भवेत् सा हि यत्र रामो न विद्यते ।।840।।

वह राम भी राम नहीं है जहाँ सीताजी नहीं है एवं वह सीताजी वास्तव में सीताजी नहीं है जहाँ रामजी नहीं है तात्पर्य यह है कि ये दोनों एक दूसरे के पूरक हैं एक के बिना एक अधूरा है अतः युगल की उपासना ही श्रेयस्करी है।

सीता रामं विना नैव रामः सीतां विना नहि।
श्रीसीतारामयोरेष संबन्धः शाश्वतो मतः ।। 841।।

श्रीसीताजी की शोभा श्रीराम के बिना एवं श्रीरामजी की शोभा श्रीसीताजी के बिना नहीं है परस्पर में अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है इन दोनों का सम्बन्ध शाश्वत है।

रामः सीता जानकीरामचन्द्रो नाणुर्भेदो ह्येतयोरस्ति किञ्चित्।
सन्तो मत्वा तत्त्वमेतद्विचित्रं पारं याताः संसृतेर्मृत्युकालात्।।842।।

श्रीरामजी एवं श्रीसीताजी तथा श्रीजानकीजी एवं श्रीरामजी इन दोनों में लेशमात्र भी भेद नहीं है दोनों एक परम विचित्र तत्व मानकर अनेको सन्त मृत्युरूपी संसार सागर से पार हो गये।

राममन्त्रार्थे

श्रीराममन्त्रार्थ श्रीवैष्णवमताब्ज भास्कर में

रकारार्थो रामः सगुणपरमैश्वर्यजलधिर्मकारार्थो-
जीवस्सकलविधिकैंकर्यनिपुणः।
तयोर्मध्येऽकारो युगलमथ संबन्धमनयोरनन्योऽर्थः-
सिद्धस्स्मृतिनिगमरूपोऽयमतुलः।।843।।

श्रीरामनाम के 'र' का अर्थ परम ऐश्वर्यों के समुद्र सगुण साकार विग्रह भगवान् श्रीराम है। 'म' का अर्थ भगवान् के सभी प्रकार के कैंकर्यों के सम्पादन में परमदक्ष जीव है 'अ' का अर्थ श्रीरामजी और जीव के मध्य

शेषशेषिभावादि सम्बन्ध है यही मुख्य एवं समस्त स्मृति एवं वेद का प्रतिपाद्य अतुलनीय अर्थ है।

जानकीरत्नमाणिक्ये

श्रीजानकीरत्नमाणिक्य में

सीतां विना ये सखि कोटिकल्पसमास्तु रामं जनकात्मजाशु।
ध्यायन्ति निंद्याश्रयभागिनस्ते रामप्रसादाद्विमुखाः भवन्ति।।844।।

हे सखि! श्रीजनक पुत्री सीताजी के बिना जो कोई केवल रामजी के नाम का करोड़ों कल्पों तक जप ध्यानादि करते हैं वे लोग निन्दा के पात्र हैं स्वप्न में भी श्रीरामजी की प्रसन्नता नहीं प्राप्त कर सकते हैं।

रामस्तु वश्यो भवतीह सीतिप्रोच्चारणाद् ये तु जपन्ति सीताम्।
भूत्त्वानुगामी भजते जनांस्तान् ब्रह्मेशशक्रार्चितराजपुत्रः।।845

श्रीब्रह्मा शंकर इन्द्रादि से पूजित राजेन्द्र भगवान् श्रीरामजी श्रीसीताजी के 'सी' के उच्चारण करने मात्र से भक्त के वश में हो जाते हैं और जो लोग सीताराम सीताराम कहते हैं भगवान् राम उन भक्तों के अनुगामी होकर सदासर्वदा उनकी सेवा करते हैं।

भरद्वाजस्तोत्रे

भरद्वाजस्तोत्र में

राम रामेति रामेति वदन्तं विकलं भवान्।
यमदूतैरनुक्रान्तं वत्सं गौरिव धावतु।।846।।

हे रामजी! यमदूतों से आक्रान्त होने पर विकल होकर राम राम राम ऐसा उच्चारण करने वाले भक्त के पीछे आप उसी प्रकार दौड़िये जैसे वत्सला गौ अपने बछड़े के पीछे दौड़ती है। अर्थात् मृत्यु के समय श्रीरामनाम का उच्चारण होने पर आप शीघ्र जाकर उस भक्त को निर्भय करें।

स्वच्छन्दचारिणं दीनं राम रामेतिवादिनम्।
तावन्मामनु निम्नेन यथा वारीव धावतु।।847।।

स्वच्छन्द विचरण करते हुए राम नाम का उच्चारण करने वाले मुझ दीन हीन का आप उसी प्रकार अनुगमन करें जैसे पानी नीचे की ओर जाता है।

राम त्वं हृदये येषां सुखलभ्यं वनेऽपि तैः।
मण्डं च नवनीतं च क्षीरसर्पिर्मधूदकम्।।848।।

हे रामजी! जिन भक्तों के हृदय में आप सदासर्वदा विराजमान रहते हैं उन भक्तों को वन में भी तक्र, मक्खन, दूध, घी, मधु एवं जलादि सुखपूर्वक प्राप्त हो जाते हैं।

सीतापते राम रघूत्तमेति यो नाम्निजल्पेद्युधि तस्य तत्क्षणात्।

दिशं द्रवन्त्येव युयुत्सवोऽपि भियं दधाना हृदयेषु शत्रवः ॥849॥

जो लोग युद्ध भूमि में हे सीतापते! हे राम! हे रघूत्तम! इस प्रकार भगवान् के नामों का उच्चारण करते हैं जप करते हैं उन लोगों के शत्रु उसी क्षण हृदय से भयभीत होकर 'युद्ध इच्छुक' होकर भी दशों दिशाओं में भागते हैं।

प्रपन्नगीतायां लोमश उवाच

प्रपन्नगीता में श्रीलोमशजी ने कहा

रामान्नास्ति परो देवो रामान्नास्ति परं व्रतम्।

न हि रामात्परो योगो नहि रामात्परो मखः ॥850॥

भगवान् श्रीरामचन्द्रजी से बढ़कर कोई दूसरा देवता नहीं है एवं श्रीरामजी से बढ़कर कोई व्रत, योग एवं यज्ञ नहीं है।

तत्रैव पुष्करवाक्यम्

वहीं पुष्करजी का वाक्य

ये केचिदुस्तरं प्राप्य रघुनाथं स्मरन्ति हि।

तेषां दुःखोदधिः शुष्को भवत्येव न संशयः ॥851॥

जो लोग दुस्तर दु:ख की प्राप्ति होने पर श्रीरामजी का स्मरण करते हैं. उन लोगों का दुख समुद्र सूख जाता है इसमें संशय नहीं है।

ऋतुपर्ण उवाच

भज श्रीरघुनाथस्त्वं कर्मणा मनसा गिरा।

नैष्कापट्येन लोकेशं तोषयस्व महामते ॥852॥

ऋतुपर्ण ने कहा–

हे महाबुद्धिमान्! आप निष्कपट भाव से कर्म, मन और वाणी से समस्त

लोकों के स्वामी भगवान् श्रीराम का भजन करें। और उन्हें सन्तुष्ट करें।

विश्वामित्र प्रातः पञ्चके

श्रीविश्वामित्र कृत प्रातः पञ्चक में

प्रातर्वदामि वचसा रघुनाथनाम वाग्दोषहारि सकलं समलं निहन्तृ।
यत्पार्वती स्वपतिना सह भोक्तुकामा प्रीत्या सहस्रहरि नाम समं जजाप।।

मैं वाणी के दोष को हरने वाले, सम्पूर्ण पापों का स्वभाव से ही नाश करने वाले श्रीरामजी के श्रीरामनाम का अपनी वाणी से प्रातःकाल उच्चारण करता हूँ। जिस[1] एक श्रीरामनाम को विष्णु सहस्रनाम के तुल्य समझकर अपने पति के साथ भोजन करने की इच्छा से श्रीपार्वतीजी ने प्रीतिपूर्वक जपा था। इस विषय में पद्मपुराण उत्तरखण्ड अ. 254 में इस प्रकार लिखा है कि श्रीपार्वतीजी ने श्रीवामदेवजी से वैष्णव मन्त्र की दीक्षा ली थी। एक बार श्रीशिवजी ने पार्वतीजी से कहा कि हम कृतकृत्य हैं कि तुम ऐसी वैष्णवी भार्या हमें मिली हो। तुम अपने गुरु महर्षि वामदेव जी के पास जाकर उनसे पुराण पुरुषोत्तम की पूजा का विधान सीखकर उनका अर्चना करो। श्रीपार्वतीजी ने जाकर गुरुदेवजी से प्रार्थना की तब वामदेवजी ने श्रेष्ठ मन्त्र और उसका विधान उनको बताया और विष्णु सहस्रनाम का नित्य पाठ करने को कहा। एक समय की बात है कि द्वादशी को शिवजी जब भोजन को बैठे तब उन्होंने पार्वतीजी को साथ भोजन करने को बुलाया। उस समय वे विष्णु सहस्रनाम का पाठ कर रही थीं, अतः उन्होंने निवेदन किया कि अभी मेरा पाठ समाप्त नहीं हुआ है। तब शिवजी बोले कि तुम धन्य हो कि भगवान् परमात्मा पुरुषोत्तम में तुम्हारी ऐसी भक्ति है और कहा कि योगी लोग अनन्त सच्चिदानन्द में रमण करते हैं इसीलिए राम शब्द से परब्रह्म कहा जाता है, हे सुन्दरि ! मैं श्रीराम नाम का इस

---

1. सहस नाम सम सुनि सिव बानी। जपि जेई पिय संग भवानी।।
हरषे हेतु हेरि हर ही को। किय भूषन तिय भूषन तीको।। (मानस – बालकाण्ड)

प्रकार जप करते हुए अति सुन्दर श्रीराम में अत्यन्त रमता हूँ। तुम भी अपने मुख से इस रामनाम का वरण करो, क्योंकि विष्णुसहस्रनाम इस एक रामनाम के तुल्य है। अत: महादेवि! एक बार 'राम' ऐसा उच्चारण कर मेरे साथ भोजन करो। यह सुनकर श्रीपार्वतीजी ने 'राम' एक बार उच्चारण कर शिवजी के साथ भोजन कर लिया और तब से पार्वतीजी बराबर शिवजी के साथ नाम जपा करती हैं जैसे वशिष्ठ जी ने कहा– **ततो रामेति नामोक्त्वा सह भुक्त्वाथ पार्वती! रामेत्युक्त्वा महादेवी शम्भुना सह संस्थिता'** अर्थात् उसके बाद 'राम' ऐसा कहकर शिवजी के साथ भोजन किया और शिवजी के साथ बैठ गयी। ।।853।।

सुयज्ञसंहितायाम्

रामनाम कथयामोऽपरमपहाय।
सीता नाम युतं यत् स्वादुसुखाय ।।854।।

सुयज्ञसंहिता में

हम लोग दूसरे नामों को छोड़कर श्रीरामनाम का उच्चारण करते हैं श्रीसीतानाम से युक्त रामनाम अर्थात् श्रीसीताराम नाम परम सुस्वादु है। सुखकारी है।

विरञ्चिसर्वस्वे

श्रीरामनामस्मरत: प्रयाति संसारपारं दुरितौघयुक्त:।
नरस्स सत्यं कलिदोषजन्यं पापं निहन्त्याशु किमत्र चित्रम्।।855।।

विरञ्चिसर्वस्व में

श्रीरामनाम के स्मरण करने से समस्त पापों से युक्त पुरुष भी भवसागर से पार हो जाता है यह सत्य है फिर यदि कहें कि कलि से जन्य सारे पाप श्रीरामनाम के उच्चारण से शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं तो इसमें आश्चर्य क्या है?

शिवसर्वस्वे

यावन्न कीर्तयेद्रामं कलिकल्मषनाशनम्।
तावत्तिष्ठति देहेऽस्मिन् भयं संसारदायकम्।।856।।

शिवसर्वस्व में

मनुष्य जब तक कलि के कल्मष के नाशक श्रीरामनाम का संकीर्तन नहीं करता है तभी तक इस शरीर में संसारदायक भय बना रहता है।

श्रुतिस्मृतिपुराणेषु रामनाम समीरितम्।
यन्नामकीर्तनेनैव तापत्रयविनाशनम्।।857।।

वेदों पुराणों एवं स्मृतियों में श्रीरामनाम कहा गया है जिस श्रीरामनाम के संकीर्तन से तीनों तापों का नाश हो जाता है।

सर्वेषामेव पापानां प्रायश्चित्तमिदं स्मृतम्।
नातः परतरं पुण्यं त्रिषु लोकेषु विद्यते।।858।।

समस्त पापों का एकमात्र प्रायश्चित श्रीरामनाम संकीर्तन है तीनों लोकों में इससे बढ़कर कोई पुण्य नहीं है।

नामसंकीर्तनादेव तारकं ब्रह्म दृश्यते।
सत्यं वदामि ते देवि नान्यथा वचनं मम।।859।।

हे देवि! श्रीरामनाम के संकीर्तन से ही तारक ब्रह्म श्रीरामजी का दर्शन होता है। मैं तुमसे सत्य—सत्य कहता हूँ मेरा वचन अन्यथा नहीं होगा।

वैष्णवचिन्तामणौ

वैष्णवचिन्तामणि में

कालोऽस्ति दाने यज्ञे वा स्नानेकालोऽस्ति सज्जपे।
श्रीनामकीर्तने कालो नास्त्यत्र पृथिवीपते।।860।।

हे राजन्! दान, यज्ञ, स्नान एवं मन्त्रादि के सम्यक् जप में समय की व्यवस्था है पंचक, होलाष्टक, गुर्वस्त, शुक्रास्त आदि देखना पड़ता है। परन्तु श्रीरामनाम के संकीर्तन करने में कोई विधि निषेध नहीं देखना है चाहे जहाँ हो जैसे हो सर्वदा कीर्तन कर सकते हैं।

राम रामेति यो नित्यं मधुरं गायति क्षणम्।
स ब्रह्महा सुरापो वा मुच्यते सर्वपातकैः।।861।।

जो मधुर स्वर में राम राम ऐसा नित्य क्षणभर गान करता है वह ब्राह्मण

हत्यारा अथवा शराबी हो तो भी सभी पापों से मुक्त हो जाता है।

शिवसिद्धान्ते शंकरवाक्यम्

ब्रह्मघ्नो गुरुतल्पगोऽपि पुरुषः स्तेयीसुरापोऽपिवा-
मातृभ्रातृविहिंसकोऽपिसततं भोगैकबद्धस्पृहः।
नित्यं राममिमं जपन् रघुपतिं भक्त्या हृदिस्थं तथा ध्यायन्-
मुक्तिमुपैति किं पुनरसौ स्वाचारयुक्तो नरः।।862।।

शिवसिद्धान्त में शंकरजी का वाक्य

ब्राह्मणघातक, गुरुपत्नीगामी, चोर, शराबी, माता एवं भाई का हत्यारा अथवा निरन्तर एकमात्र भोग की इच्छा करने वाला हो वह मनुष्य भी नित्य इस श्रीरामनाम का जप करते हुए अपने हृदय में विराजमान श्रीरामजी का भक्तिपूर्वक ध्यान करते हुए मुक्ति को पा जाता है फिर वर्ण एवं आश्रम के अनुरूप सदाचार का पालन करने वाले मनुष्यों के लिए क्या कहना?

हिमवद् विंध्ययोर्मध्ये जना भागवता मताः।
उच्चारयन्ति श्रीरामनाम प्राणात् प्रियं मम।।863।।

हिमालय और विन्ध्याचल पर्वतों के मध्य में भगवान् के भक्तजन निवास करते हैं वे लोग मेरे प्राणों से प्रिय श्रीरामनाम का उच्चारण करते रहते हैं।

रामनामरतानां वै सेवकानां च सेवया।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो महापातकवानपि।।864।।

श्रीरामनाम के अनुरागी भक्तों के सेवकों की सेवा करने से महापापी भी सभी पापों से मुक्त हो जाता है।

श्रीरामस्य कृपासिन्धोर्नाम्नः प्रोच्चारणं परम्।
ओष्ठस्पन्दनमात्रेण कीर्तनं तु तपोऽधिकम्।।865।।

कृपासिन्धु श्रीरामनाम का उच्चारण ही सर्वश्रेष्ठ है और दोनों होठों का हिलाना ही कीर्तन है वह तपस्या से भी श्रेष्ठ है।

बृहद्गौतमीये

कुष्ठरोगी भवेल्लोके बहुधा ब्रह्महा नरः।

सकृदुच्चरितं नाम शीघ्रं तत् क्षपयत्यघम्।।866।।

वृहद् गौतमी तन्त्र में

ज्यादातर ब्राह्मण की हत्या करने वाला मनुष्य कोढ़ी होता है लेकिन एक बार श्रीरामनाम का उच्चारण करने से शीघ्र ही वह पाप धुल जाता है।

यत्फलं दुर्लभं सर्वसाधनैः कल्पकोटिभिः।

तत् फलं शीघ्रमाप्नोति रामनामानुकीर्त्तनात्।।867।।

दूसरे समस्त साधनों से करोड़ों कल्पों में जो फल दुर्लभ है वह फल शीघ्र ही श्रीरामनाम के संकीर्तन से सहज में प्राप्त हो जाता है।

आश्वलायनतन्त्रे

आश्वलायन तन्त्र में

ये कीर्त्तयन्ति नामानि रामस्य परमात्मनः।

सर्वधर्मबहिर्भूतास्तेऽपि यान्ति परं पदम्।।868।।

जो सभी धर्मों से बहिर्भूत होकर भी परमात्मा श्रीराम के नाम का कीर्तन करते हैं वे भी परमपद को प्राप्त कर लेते हैं।

स्वप्नेऽपि रामनाम्नस्तु स्मरणान् मुक्तिमाप्नुयात्।

प्रीत्या संकीर्त्तयेद्यस्तु न जाने किं फलं लभेत्।।869।।

स्वप्न में भी श्रीरामनाम का स्मरण करने से मुक्ति की प्राप्ति हो जाती है जो लोग प्रीतिपूर्वक श्रीरामनाम का संकीर्तन करते हैं उन्हें क्या फल मिलता है यह मैं नहीं जानता हूँ।

वैरञ्च्यतन्त्रे

वैरञ्च्यतन्त्र में

पूजयस्व रघूत्तमं सर्वतन्त्रेषु गोपितम्।

गुह्याद् गुह्यतमं नाम कीर्त्तयस्व निरन्तरम्।।870।।

सभी तन्त्रों में अत्यन्त गोपित श्रीरघुश्रेष्ठ रामजी का पूजन करो और

अत्यन्त गुह्य श्रीरामनाम का निरन्तर कीर्तन करो।

त्यक्त्वाऽन्यसाधनान् सर्वान् रामनामपरो भव।

नातः परतरं यत्नं सुलभं सकलेष्टदम्।।871।।

दूसरे सभी साधनों को छोड़कर श्रीरामनाम के जप परायण हो जाओ, श्रीरामनाम से बढ़कर दूसरा कोई प्रयत्न सभी अभीष्टों को देने के लिए सुलभ नहीं है।

मेरुतन्त्रे

मेरुतन्त्र में

नाम्नां मुख्यतमं नित्यं रामनाम प्रकीर्तितम्।

नातः परतरं नाम ब्रह्माण्डेऽपि प्रदृश्यते।।872।।

भगवान् के सभी नामों में श्रीरामनाम मुख्य है सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में भी इससे बढ़कर कोई दूसरा नाम नहीं है।

रामनाम्नि सुधाधाम्नि यस्य प्रीतिर्न विद्यते।

पापिनामग्रगण्यस्स भूमेर्भारो महत्तरः।।873।।

अमृत का निवासभूत श्रीरामनाम में जिसकी प्रीति नहीं है वह सभी पापियों में अग्रगण्य एवं पृथिवी के महान् भार है।

नारायणतन्त्रे

नारायणतन्त्र में

ये गृह्णन्ति निरन्तरं परपदं रामेति वर्णद्वयं ते वै-

भागवतोत्तमाः सुखमया पूज्यास्तु ते सर्वथा।

ते निस्तीर्य भवार्णवं सुतकलत्राद्यैस्तु नक्रैर्युतं-

तृष्णावारि सुदुस्तरं परतरे सायुज्यमायान्ति वै।।874।।

जो लोग सर्वोत्कृष्ट शब्द 'श्रीराम' इन दो वर्णों को नित्य निरन्तर ग्रहण करते हैं अर्थात् उच्चारण करते हैं वास्तव में वे ही श्रेष्ठ भागवत हैं सुखी हैं और सभी लोगों से सदासर्वदा पूज्य हैं वे लोग ही पुत्रपत्नी आदि ग्रहों से परिव्याप्त एवं तृष्णारूपी अथाह जल से दुस्तर भवसागर को निश्चित ही पार करके बैकुण्ठ में सायुज्य मुक्ति को प्राप्त करते हैं।

यानि धर्माणि कर्माणि महोग्रफलदानि वै।

निष्फलानि च सर्वाणि रामनामरतात्मनाम्।।875।।

महान् एवं उग्रफल देने वाले जितने धर्म एवं कर्म है वे सारे धर्म कर्म श्रीरामनामानुरागियों के लिए निष्फल है।

वामनतन्त्रे

वामतन्त्र में

पृथिव्यां कतिधा लोका जाताश्च कतिधा मृताः।

मुक्तास्तेऽत्र न संदेहो रामनामानुकीर्तनात्।।876।।

इस पृथिवी पर कितने लोग पैदा हुए और कितने लोग मर गये परन्तु जो श्रीरामनाम का संकीर्तन करते हैं वे लोग ही मुक्त होते हैं इसमें सन्देह नहीं है।

ब्रह्माण्डे सन्ति यावन्ति महोग्राः पुण्यसंचयाः।

रामनाम्नो जपस्यापि कलां नार्हन्ति षोडशीम्।।877।।

इस ब्रह्माण्ड में जितने महान एवं उग्र पुण्यों का संचय है ये सारे पुण्य समुदाय श्रीरामनाम के जप के सोलहवीं कला के बराबर भी नहीं है।

वशिष्ठतन्त्रे

वशिष्ठतन्त्र में

रामनामपरा ये च रामनामार्थचिन्तकाः।

तेषां पादरजः स्पर्शात् पावनं भुवनत्रयम्।।878।।

जो लोग श्रीरामनाम परायण हैं और जो श्रीरामनाम के अर्थ का चिन्तन करते हैं उन भक्तों की चरणधूलि के संस्पर्श से सम्पूर्ण त्रिलोकी पवित्र हो जाती है।

कृष्णनारायणादीनि नामानि जपतोऽनिशम्।

सहस्रैर्जन्मभी रामनाम्नि स्नेहो भवति ध्रुवम्।।879।।

भगवान् के कृष्णनारायणादि नामों का दिन रात जप करने पर हजारों जन्मों के बाद श्रीरामनाम में प्रेम होता है।

राम एवाभिजानाति रामनाम्नः फलं हृदि।

प्रवक्तुं नैव शक्नोति ब्रह्मादीनां तु का कथा।।880।।

श्रीरामनाम के जप का फल श्रीरामजी ही अपने हृदय में जानते हैं पर वे भी कह नहीं सकते हैं फिर ब्रह्मा शिवादि की क्या कथा।

श्रीरामरक्षायाम्
श्रीरामरक्षास्तोत्र में

पातालभूतलव्योमचारिणश्छद्मचारिणः।
न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः ।।881।।

श्रीरामनाम से सर्वथा सुरक्षित भक्तों को, पाताल, भूतल, आकाश में विचरण करने वाले एवं कपट रूप में विचरण करने वाले प्राणी भी देखने में समर्थ नहीं हो सकते हैं वे सब श्रीरामनाम से डरते हैं।

रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन्।
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ।।882।।

राम, रामभद्र एवं रामचन्द्र इस प्रकार उच्चारण करके भगवान् का स्मरण करने वाला मनुष्य पापों में लिप्त नहीं होता है और लौकिक भोग एवं मोक्ष को प्राप्त करता है।

जगज्जैत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नैव रक्षितम्।
यः कण्ठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः।।883।।

सम्पूर्ण जगत् को जिताने वाला एकमात्र महामन्त्र श्रीरामनाम है उससे संयुक्त किसी भी यन्त्र को जो अपने कण्ठ में धारण करता है उसके हाथ में सभी सिद्धियाँ स्वत: आ विराजती हैं।

शाश्वततन्त्रे
शाश्वततन्त्र में

वाङ्मनोगोचरातीतः सत्यलोकेश ईश्वरः।
तस्य नामादिकं सर्वं रामनाम्ना प्रकाशते।।884।।

सत्यलोक के स्वामी भगवान् राम वाणी और मन से परे हैं उनके सभी नाम श्रीरामनाम से प्रकाशित होते हैं।

यस्य प्रसादाद्देवेशि मम सामर्थ्यमीदृशम्।
संहरामि क्षणादेव त्रैलोक्यं सचराचरम्।।885।।

हे देवेश्वरि पार्वति! जिस श्रीरामनाम की कृपा से मुझे ऐसा सामर्थ्य प्राप्त हुआ है कि मैं चर अचर से युक्त सम्पूर्ण त्रिलोकी का क्षण भर में संहार कर सकता हूँ।

धाता सृजति भूतानि विष्णुर्धारयते जगत्।
तथा चेन्द्रादयः सर्वे रामनाम्ना समृद्धिमान्।।886।।

श्रीरामनाम की कृपा से प्राप्त समृद्धि से युक्त होकर ब्रह्माजी भूतों की सृष्टि करते हैं भगवान् विष्णु जगत् का पालन करते हैं एवं इन्द्रादि सब देवता अपना– अपना कार्य करते हैं।

रहस्यसारे श्रीनारायणवाक्यं मुनीन् प्रति

रहस्य सार में श्रीनारायणजी का वाक्य मुनियों के प्रति

रसनायां विशेषेण जप्तव्यं नाम सज्जनैः।
कलौ संकीर्तनं विप्राः सर्वसिद्धान्तसम्मतम्।।887।।

हे विप्रो! कलियुग में सभी 'सिद्धान्त वालों को' श्रीहरिनाम संकीर्तन अभिमत है, अतः सज्जनों को विशेष रूप से अपनी जिह्वा से श्रीरामनाम का संकीर्तन करना चाहिए

प्रेमसंक्लिन्नया वाचा ये रमन्ति रटन्ति वै।
नाम सर्वेश्वराधारंते कृतार्था महामुने।।888।।

सर्वेश्वरों के मूलाधार श्रीरामनाम का जो लोग प्रेम से भीगी हुई वाणी से जप एवं स्मरण करते हैं हे महामुने! वास्तव में वे लोग ही कृतार्थ हैं।

नामप्रोच्चारणं नित्यं रसनायां प्रशस्यते।
भक्तानां योगिनां चैव ज्ञानिनां कर्मिणां तथा।।889।।

भक्तों, योगियों, ज्ञानियों एवं कर्मकाण्डियों के लिए नित्य अपनी जिह्वा से श्रीरामनाम का उच्चारण ही प्रशस्त है।

यत्र संगृह्यते नाम प्रेमसम्पन्नमानसैः।
तत्र तत्र परा वाणी नाभिस्था सर्वतः शुभा।।890।।

जहाँ–जहाँ प्रेमयुक्त मन से श्रीरामनाम का ग्रहण किया जाता है वहाँ–वहाँ सब तरफ से कल्याणकारी नाभि से परा वाणी निकलती है।

रामनाम परंब्रह्म सर्वमोदैकमन्दिरम्।
जीवनं दिव्यनित्यानां पार्षदानां महात्मनाम्।।891।।

भगवान् के दिव्य एवं नित्य परिकरों एवं महात्माओं का सभी प्रकार से आनन्द का एकमात्र आश्रय परब्रह्म श्रीरामनाम ही जीवन है।

यस्य रामरसे प्रीतिर्वर्तते भक्तिसंयुता।

स एव कृतकृत्यश्च सर्वशास्त्रार्थकोविदः।।892।।

जिसकी श्रीरामनामामृत में भक्ति युक्त प्रीति है वास्तव में वही कृतकृत्य है एवं सभी शास्त्रों का पण्डित है।

इति श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाशे प्रमोदनिवासे परात्परैश्वर्यदायके श्रीयुगलानन्यशरणसंगृहीते नानारहस्यतन्त्रस्तोत्रवाक्यप्रमाणनिरूपणं नामाष्टमः प्रमोदः ।।8।।

अष्टम प्रमोद समाप्त



स्वामीयुगलानन्यशरणजी द्वारा संकलितः

नवमः प्रमोदः

श्रीरामायणोक्तवचनानि

नवम प्रमोद में श्रीरामायणोक्तवचन

श्रीमद् वाल्मीकीय रामायणे

श्रीमद् वाल्मीकीयरामायण में

रामो रामो राम इति प्रजानां समभूद्ध्वनिः।

रामभूतमिदं विश्वं रामे राज्यं प्रशासति।893।।

भगवान् राम के गद्दी पर बैठकर राज्य का शासन करने पर समस्त प्रजा में राम राम राम यह दिव्य ध्वनि गूँज उठी एवं सम्पूर्ण विश्व राममय हो गया।

यश्च रामं न पश्येत्तु यं च रामो न पश्यति।

निन्दितः सर्वलोकेषु स्वात्माऽप्येनं विगर्हति।।894।।

जिसने श्रीराम को नहीं देखा एवं श्रीराम ने जिसको नहीं देखा वह सभी लोकों में निन्दित है उसकी आत्मा भी उसकी भर्त्सना करती है।

क्षणार्द्धेनापि यच्चित्तं त्वयि तिष्ठत्यञ्चलः।

तस्याज्ञानमनर्थानां मूलं नश्यति तत् क्षणात्।।895।।

हे रामजी! जिसका स्थिर चित्त आधे क्षण के लिए भी आप में लग गया उसके समस्त अनर्थों का मूल अज्ञान उसी क्षण नष्ट हो जाता है।

कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम्।

आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम्।।896।।

कवितारूपीं शाखा पर आरूढ़ होकर मधुराक्षरों में राम राम इस प्रकार कूजन करने वाले वाल्मीकिरूपी कोयल की मैं वन्दना करता हूँ।

सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते ।

अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद् व्रतं मम।।897।।

एक बार शरण में आकर प्रभो! मैं आपका हूँ ऐसी प्रार्थना करने वाले को मैं समस्त प्राणियों से निर्भय कर देता हूँ यह मेरा व्रत हैं।

कथञ्चिदुपकारेण कृतेनैकेन तुष्यति।

न स्मरत्यपकाराणां शतमप्यात्मवत्तया।।898।।

किसी भी प्रकार से एक उपकार करने पर भी भगवान् प्रसन्न हो जाते हैं फिर तो हजारों अपकारोंको याद नहीं करते हैं क्योंकि वे परम आत्मवान् धैर्यवान् अर्थात् धीर गम्भीर हैं। नाम और नामी दोनों को एक मानकर नामी परक श्लोकों को यहाँ दिया गया है।

ब्रह्मरामायणे श्रीरामवाक्यं श्रीजानकीं प्रति

ब्रह्मरामायण में

श्रीरामजी का वाक्य श्रीजानकी के प्रति

ये त्वां स्मरन्ति सद्भक्त्या ते मे प्रियतमाः प्रिये।

तेषां भाग्योदयं वक्तुं न शक्तोऽहं कदाचन ।।899।।

हे प्राणवल्लभे जानकि! जो सद्भक्तिपूर्वक तुम्हारा स्मरण करते हैं वे मुझे अत्यन्त प्रिय हैं मैं उनके भाग्योदय को कहने में समर्थ नहीं हूँ।

क्वचित् त्वां ये स्मरन्त्यन्तर्मम पार्षदतां पराम्।

कोटिजन्मार्जितैः पुण्यैः दुर्लभामपि यान्ति ते।।1900।।

जो भीतर से आपका स्मरण करते हैं वे लोग करोड़ों जन्मों से अर्जित पुण्यों से भी दुर्लभ मेरे उत्कृष्ट पार्षद पद को प्राप्त करते हैं।

श्रीसीतारामनाम्नस्तु सदैक्यं नास्ति संशयम्।

इति ज्ञात्वा जपेद्यस्तु स धन्यो भाविनां वरः।।1901।।

श्रीसीतानाम एवं श्रीरामनाम दोनों में सदासर्वदा ऐक्य है इसमें संशय नहीं है ऐसा समझ कर जो सीताराम सीताराम जप करता है वही धन्य एवं भावुकों में श्रेष्ठ है।

ज्ञानं सीतानाम तुल्यं न किञ्चिद् ध्यानं सीतानाम तुल्यं न किञ्चित्।

भक्तिः सीतानाम तुल्या न काचित् तत्त्वं सीतानाम तुल्यं न किञ्चित्।।1902।।

श्रीसीताजी के नाम के समान न कोई ज्ञान, ध्यान, भक्ति और न कोई तत्व है।

एकं शास्त्रं गीयते यत्र सीता कर्माप्येकं पूज्यते यत्र सीता।

एका लोके देवता चापि सीता मन्त्रश्चैकोऽप्यस्ति सीतेति नाम।।1903।।

वास्तव में एकमात्र वही शास्त्र है जहाँ श्रीसीताजी का नाम, महिमा वर्णित है, कर्म भी वही सुकर्म है जिसमें श्रीसीताजी की पूजा होती है एक मात्र श्रीसीताजी ही सर्वश्रेष्ठ देवता है और सबसे बड़ा महामन्त्र श्रीसीताराम नाम है।

नान्यः पन्था विद्यते चात्मलब्धौ नान्यो भावो विद्यते चापि लोके।

नान्यद् ज्ञानं विद्यते चापि वेदेष्वेवं सीतानाममात्रं विहाय।।1904।।

परमात्मा की प्राप्ति के लिए लोक में श्रीसीतानाम को छोड़कर न तो कोई मार्ग है, न भाव है और वेदों में न तो कोई दूसरा ज्ञान है। अर्थात् श्रीजी की कृपा के बिना भगवान् की प्राप्ति असम्भव है और श्रीजी की कृपा श्रीसीतानामोच्चारण के बिना असम्भव है।

सीतेति मङ्गलं नाम सकृच्छ्रुत्वा कृपाकरः।

श्रीरामो जानकीजानिर्विशेषेण प्रसीदति।।1905।।

परममंगलमय श्रीसीतानाम का एक बार संकीर्तन सुनकर कृपा सागर श्रीजानकीनाथरामजी विशेष प्रसन्न होते हैं।

श्रीसीतानाममाहात्म्यं सुगोप्यं सर्वतः शुभम्।

रसिका प्रेमसंमग्ना जानन्ति तदनुग्रहात्।।1906।।

श्रीसीताजी के नाम की महिमा अत्यन्त गोपनीय एवं सभी तरह से शुभ करने वाला है किन्तु इस बात को श्रीकिशोरीजी की कृपा से प्रेम में सम्यक् मग्न रसिक लोग ही जानते हैं।

अध्यात्मरामायणे

अध्यात्मरामायण में

येषु येष्वपि देशेषु रामनाम उपासते।

दुर्भिक्षदैन्यदोषाश्च न भवन्ति कदाचन।।1907।।

जिन–जिन देशों में श्रीरामनाम की उपासना होती है वहाँ–वहाँ अकाल, गरीबी एवं आधि व्याधि दोष नहीं होते हैं।

राम रामेति ये नित्यं पठन्ति मनुजा भुवि।

तेषां मृत्युभयादीनि न भवन्ति कदाचन।।1908।।

इस पृथिवी में जो लोग नित्य श्रीरामनाम का उच्चारण करते हैं उनको कभी भी मृत्यु आदि का भय नहीं होता है।

राम रामेति सततं पठनाल्लभते फलम्।

वाचा सिद्धयादिकं सर्वं स्वयमेव भवेद्ध्रुवम्।।1909।।

अपनी वाणी से निरन्तर राम राम ऐसा पाठ करने से तुरन्त फल मिलता है और वाक् सिद्धि आदि सब सिद्धियां स्वयं ही निश्चित प्राप्त हो जाती है।

यन्नाम विवशो गृणन् म्रियमाणः परं पदम्।

याति साक्षात् त्वमेवासि मुमूर्षो मे पुरः स्थितः।।1910।।

जिनके नाम का म्रियमाण पुरुष विवश होकर उच्चारण करने पर परमपद को प्राप्त करता है फिर मुझे मरणेच्छु के समक्ष साक्षात् आप प्रकट हैं ऐसा सौभाग्य फिर मिलेगा कि नहीं।

यस्मिन् रमन्ते मुनयो विद्यया ज्ञानविप्लवे।

तं गुरुः प्राह रामेति रमणाद्राम इत्यपि।।911।।

विद्या के द्वारा अज्ञान के समाप्त हो जाने पर बड़े–बड़े मुनि लोग जिसमें रमण करते हैं उनका नाम गुरु वशिष्ठ ने 'राम' रखा, अपने गुण एवं शील के द्वारा सबको आनन्द प्रदान करते हैं इसलिए इन्हें राम कहते हैं।

इत्युक्त्वा राम! ते नाम व्यत्यस्ताक्षरपूर्वकम्।

एकाग्रमनसा चैव मरेति जप सर्वदा।।912।।

हे रामजी ! ऐसा कहकर आपके नाम राम को उलटकर 'मरा' ऐसा एकाग्रचित्त से सदासर्वदा तुम जपो ऐसा महात्माओं ने उपदेश दिया।

त्वन्नामामृतहीनानां मोक्षः स्वप्नेऽपि नो भवेत्।

तस्माच्छ्रीरामनाम्नस्तु संकीर्तनपरो भव 913।।

हे रामजी! आपके श्रीरामनामरूपी अमृत से रहित मनुष्यों को स्वप्न में भी मोक्ष नहीं मिल सकता है इसलिए श्रीरामनाम का संकीर्तन करो। ऐसा महात्माओं ने उपदेश दिया।

नाधीतवेदशास्त्रोऽपि न कृताध्वरकर्मकः।

यो नाम वदते नित्यं तेन सर्वं कृतं भवेत्।।914।।

जो वेदशास्त्रों को नहीं पढ़ा है एवं यज्ञानुष्ठानादि कर्म भी नहीं किया है और जो श्रीरामनाम का संकीर्तन करता है उसने सभी यज्ञादि कर्मों एवं वेद्याध्ययनादि को कर लिया।

मानसरामायणे

ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं

श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुसुन्दरवरे संशोभितं सर्वदा।

संसारामयभेषजं सुखकरं श्रीजानकीजीवनं

धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम्।।915।।

श्रीमद्रामचरितमानस में

जो वेदरूपी समुद्र से प्रकट हुआ है, कलि के मल का नाशक है, अविनाशी है, भगवान् शंकर के श्रेष्ठ मुखचन्द्र पर सदासर्वदा सुशोभित हैं, संसाररूपी रोग नाश की महौषधि है, सुख प्रदान करने वाला है, और श्रीजनक पुत्री सीताजी का जीवन सर्वस्व है। उस श्रीरामनामरूपी अमृत को जो पुण्यात्मा लोग नित्य निरन्तर पीते हैं वे ही वास्तव में धन्य हैं।

प्रमोदरामायणे

रामनामांशतो जातास्सुमन्त्राश्चाप्यनन्तकाः।
अबुधा नैव जानन्ति नाममाहात्म्यमुज्ज्वलम्।।916।।

प्रमोदरामायण में

श्रीरामनाम के अंश से ही अनन्त सुन्दर सुन्दर मन्त्र उत्पन्न हुए हैं मूर्ख लोग श्रीरामनाम के उज्ज्वल महत्व को नहीं जान पाते हैं।

श्रीरामनामदीप्ताग्निर्दग्धदुर्जातिकिल्विषः।
श्वपचोऽपि बुधैः पूज्यो वेदाढ्योऽपि च नास्तिकः।।917।।

भुशुण्डि रामायण में

श्रीरामनामरूपी प्रदीप्त अग्नि में जल गया है कुत्सित जाति जन्य दोष जिसका वह श्वपच भी विद्वान् से पूज्य है और श्रीरामनाम से रहित वैदिक ब्राह्मण भी नास्तिक है पूज्य नहीं है।

वेदशास्त्रशतं वापि तारयन्ति न तं नरम्।
यस्तु स्वमनसा वाचा न करोति जपं परम्।।918।।

सैकड़ों वेदशास्त्र भी उस मनुष्य का उद्धार नहीं कर सकते हैं जो मन और वाणी से श्रीरामनाम का जप नहीं करता है।

रामनामविहीनस्य जातिश्शास्त्रं जपस्तपः।
अप्राणस्यैव देहस्य मण्डनन्तु वृथा यथा।।919।।

श्रीरामनाम से विहीन मनुष्यों के लिए उत्तम जाति, शास्त्र, जप एवं तप उसी प्रकार व्यर्थ है जिस प्रकार मूर्दा के लिए आभूषण व्यर्थ है।

ये शृण्वन्ति हि सद्भक्त्या रामनामपरात्परम्।

तेऽपि यान्ति परं धाम किं पुनर्जापको जनः।।1920।।

जो लोग श्रद्धाभक्तिपूर्वक परात्पर श्रीरामनाम का श्रवण करते हैं वे भी परम धाम को प्राप्त करते हैं फिर श्रीरामनाम के जप करने वाले के लिए क्या कहना है।

द्विजो वा राक्षसो वापि पापी वा धार्मिकोऽपि वा।

राम रामेति यो वक्ति स मुक्तो भवबन्धनात्।।1921।।

ब्राह्मण हो या राक्षस हो, पापी हो या धर्मात्मा हो जो राम राम ऐसा कहता है वह संसार चक्र से मुक्त हो जाता है।

यत्र यत्र समुद्धारो दृश्यते श्रूयतेऽथवा।

रामनाम्नैव तत्सर्वं तत्र तत्र न संशयः।।1922।।

जहाँ कहीं भी किसी का उद्धार देखा या सुना जाता है वहाँ श्रीरामनाम की कृपा से उद्धार समझना चाहिए इसमें संशय नहीं है।

दिवा रात्रौ च ये नित्यं रामनाम जपन्ति हि।

साक्षात्परिकरा दिव्या नित्या रसमयाः सदा।।1923।।

दिन में और रात्रि में जो लोग नित्य श्रीरामनाम का जप करते हैं वे लोग सदासर्वदा ठाकुरजी के साक्षात् दिव्यं, नित्य एवं सदासर्वदा रसमय पार्षद हैं।

क्षणार्द्धमपि चैकान्ते स्थित्वा येषां रतिः परे।

रामनामात्मके मन्त्रे तेषां जन्मादिकं नहि।।1924।।

एकान्त में स्थित होकर परात्पर श्रीरामनामरूपी महामन्त्र में आधे क्षण के लिए भी जिनकी रति हो जाती है उनका पुनर्जन्म नहीं होता है।

अहो श्रीभारतं वर्षं धन्यं पुण्यालयं परम्।

प्राप्य यत्रापि श्रीरामनाम नैव जपन्ति ये।।1925।।

नान्यस्तत् सदृशो मूढश्चाण्डालो लोकगर्हितः।

भ्रमते भवचक्रेऽस्मिन् सर्वदा तस्य वै मतिः।।1926।।

धन्य, पुण्यालय एवं सर्वश्रेष्ठ श्रीभारतवर्ष को प्राप्त करके भी जो श्रीरामनाम का जप नहीं करते हैं उनके लिए आश्चर्य है। उनसे बढ़कर दूसरा कोई न मूर्ख है और न लोक निन्दित चाण्डाल, उनकी वह बुद्धि

सदासर्वदा भवसागर में घूमती रहेगी।

असंख्यकोटिलोकानामुपादानं परात्परम्।
तथैव सर्ववेदानां कारणं नाम उच्यते।।1927।।

अनन्त लोकों का उपादानकारण एवं सभी वेदों का मूल कारण श्रीरामनाम कहा जाता है।

स्वप्ने तथा संभ्रमतः प्रमादाच्चेज्जृम्भणात् संस्खलनाद्यभावात्।
रामेति नाम स्मरतः सकृद्वै नश्यत्यसंख्यद्विजधेनुहत्या।।1928।।

स्वप्न में, भ्रमवश, प्रमादवश, जम्भाई लेते समय, गिरते समय अथवा अभावग्रस्त होकर जो एक बार श्रीरामनाम का स्मरण करता है उसके असंख्य ब्राह्मण और गोहत्या जन्य पाप नष्ट हो जाते हैं।

प्रायो नामावलम्बेन सानुभूता प्रतीयताम्।
अद्यत्वे तद्विशेषेण नामि प्राप्तिर्हि नामतः।।1929।।

अधिकांश श्रीरामनाम के सहारे से ही भगवान् का अनुभव भक्तों ने किया है– इस पर विश्वास करो, वर्तमान कलियुग में विशेष रूप से भगवान् की प्राप्ति श्रीरामनाम से ही सम्भव है।

शारदा रामायणे

श्रीमतो जानकीजानेर्नाम नित्यं जपन्ति ये।
ते सर्वैस्त्रिदशैः पूज्याः वन्दनीयाश्च सर्वदा।।1930।।

शारदारामायण में

श्रीमान् जानकीनाथ के नाम श्रीरामनाम का जो नित्य जप करते हैं वे लोग सभी देवताओं से सदासर्वदा पूज्य एवं वन्दनीय हैं।

चतुर्युगेषु श्रीरामनाममाहात्म्यमुज्ज्वलम्।
सर्वोत्कृष्टम् न संदेहो कलौ तत्रापि सर्वथा।।1931।।

चारों युगों में श्रीरामनाम का उज्ज्वल माहात्म्य सर्वोत्कृष्ट है उसमें भी कलियुग में विशेष है इसमें सन्देह नहीं है।

प्रेमरामायणे

श्रीरामनामसंल्लापतत्परं पुरुषं भजेत्।
मुक्तिस्स्यात् सेवनाद्देवि ह्यनायासेन सत्वरम्।।932।।

प्रेमरामायण में

श्रीरामनाम के कीर्तन परायण सन्तों भक्तों की सेवा करनी चाहिए हे देवि! श्रीनामानुरागियों की सेवा से शीघ्र ही बिना श्रम के मुक्ति प्राप्त हो जाती है।

यन्मुखे रामनामास्ति सर्वदा प्रेमतः शिवे।
दृष्ट्वा तद् वदनं पुण्यं सुगमं शाश्वतं सुखम्।।933।।

हे पार्वति! जिनके मुख में सदासर्वदा प्रेमपूर्वक श्रीरामनाम विद्यमान है उनके मुखमण्डल को देखकर पुण्य, सुगति एवं शाश्वत सुख सहजता से मिल जाता है।

अहो ह्यभाग्यं खलु पामराणां रामेति नामामृतशून्यमास्यम्।
जीवन्ति ते देवि! कथं मनुष्याः पापात्मकाः मूढतमा हि लोके।।934।।

आश्चर्य है निश्चित ही उनका दुर्भाग्य है जिन पामर जीवों के मुख श्रीरामनामरूपी अमृत से शून्य है हे देवि पार्वति ! पाप विग्रह अत्यन्त मूढ बुद्धि वाले वे मनुष्य क्यों जीते हैं? श्रीरामनाम से रहित जीवन से तो मर जाना ही अच्छा है।

असंख्यकोटिनामानि नैव साम्यं प्रयान्ति च।
खद्योतराशयो यान्ति रवेः सादृश्यतां कथम्।।935।।

भगवान् के असंख्य नाम भी एक श्रीरामनाम की तुलना नहीं कर सकते हैं जैसे असंख्य जुगनू सूर्य की समता नहीं कर सकते हैं।

यत्रास्ति तिमिरं घोरं महादुःखौघसंचयम्।
तन्मार्गे रामनाम्नस्तु प्रभा संदृश्यते परम्।।936।।

जहाँ महादुःख समूह रूपी घोर अन्धकार होता है वहीं श्रीरामनामरूपी

सूर्य की दिव्य प्रभा स्पष्ट दिखायी देती है।

यस्मिन्देशे न विद्यन्ते जनाः संबन्धिनस्तथा।

ता दृशे क्लेशसंपन्ने नामैको दुःखहारकः।।1937।।

जिस जगह पर अपना कोई सगा सम्बन्धी नहीं होता है वैसे क्लेश से युक्त स्थल पर एकमात्र श्रीरामनाम ही दुःख हरण करने वाला होता है।

निरालम्बं परं नाम निर्विकल्पं निरीहकम्।

ये रटन्ति सदा भक्त्या ते कृतार्थाः सुमुक्तिदाः।।1938।।

दूसरे के अवलम्ब से रहित विकल्प शून्य एवं चेष्टा रहित सर्वोत्कृष्ट श्रीरामनाम को सदासर्वदा जो रटते हैं वास्तव में वे ही कृतार्थ हैं और दूसरों को सुन्दर मुक्ति देने वाले हैं।

वशिष्ठरामायणे

नानातर्कविवादगर्तकुहरे पाताश्च ये जन्तवस्तेषामेकमसंशयं-

सुशरणं श्रीरामनामात्मकम्।।

मन्त्रं नास्ति यतः परं सुललितं प्रेमास्पदं पावनं-

स्वल्पायासफलप्रदानपरमं प्रोत्कर्षसौख्यप्रदम्।।1939।।

वशिष्ठरामायण में

अनेक तर्क वाद विवादरूपी भयंकर गड्ढे में जो लोग गिर चुके हैं उन लोगों के लिए एकमात्र संशय रहित सुन्दर रक्षक श्रीरामनाम है। जिससे बढ़कर सुललित, प्रेमास्पद एवं कम परिश्रम में सुन्दर फल प्रदान करने वाला तथा सर्वोत्कृष्ट सुख देने वाला दूसरा कोई मन्त्र नहीं है।

नवद्वाराणि संयम्य ये रमन्ति समादरात्।

रामनाम्नि परे मन्त्रे धन्या भागवतोत्तमाः।।1940।।

इस मानव शरीर के नवद्वारों को संयमित करके जो परममन्त्र श्रीरामनाम में आदरपूर्वक रमण करते हैं वे धन्य एवं उत्तम भक्त हैं।

भगवद्वाक्यम्

यदि वातादिदोषेण मद्भक्तो मां च न स्मरेत्।
अहं स्मरामि तं भक्तं नयामि परमां गतिम्॥941॥

भगवद् वाक्य

यदि कफवात्त एवं पित्त के प्रकोप के कारण कण्ठ के अवरूद्ध होने पर मेरा भक्त मेरा स्मरण नहीं करता है तो मैं उस भक्त की याद स्वयं करता हूँ परमगति को प्राप्त कराता हूँ।

मन्नामोच्चारकं साधुं सादरं पूजयन्ति ये।
तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात्॥942॥

मेरे नाम का उच्चारण करने वाले साधु का आदरपूर्वक जो पूजन करते हैं उन लोगों का मृत्यु संसार सागर से मैं उद्धार कर देता है।

ये स्मरन्ति सदा स्नेहान् ममनाम सुधासरः।
तेऽतिधन्याः प्रियास्माकं सत्यं सत्यं ब्रवीम्यहम्॥943॥

जो लोग सदासर्वदा स्नेह से अमृत सरोवर स्वरूप मेरे नाम का स्मरण करते हैं। वे लोग अत्यन्त धन्य और हमारे प्रिय हैं यह मैं सत्य–सत्य कहता हूँ।

एतदेव परं तत्त्वं मत्प्रसादाय निश्चितम्।
मनसा वचसा नित्यं भजेन् मन्नाम मङ्गलम्॥944॥

मेरी प्रसन्नता के लिए यही परम तत्व निश्चित किया गया है कि मन और वाणी से नित्य मेरे मंगलमय नाम का भजन करें।

मद्वाक्यमादरेद्यस्तु स मे प्रियतमो नरः।
तस्यार्थं सर्ववस्तुनि सृजामि वसुधातले॥945॥

मेरी वाणी का जो आदर करता है वह मनुष्य मुझे अत्यन्त प्रिय है, वास्तव में वैसे भक्तों के लिए ही मैं पृथिवीं पर सभी वस्तुओं की रचना करता हूँ।

मन्नाम संस्मरेद्यस्तु सततं नियतेन्द्रियः।

तस्मात् प्रियतमः कश्चिन्नास्ति ब्रह्माण्डगोलके।।1946।।

जो जितेन्द्रिय होकर मेरे नाम का निरन्तर सम्यक् स्मरण करता है उससे बढ़कर मेरा अत्यन्त प्रिय कोई दूसरा इस ब्रह्माण्ड में नहीं है।

आदिरामायणे श्रीमुखवाक्यं नारदं प्रति

यावन्तो ब्रह्मणो वक्त्रान्निर्गता वेदराशयः।

ते च सर्वेऽप्यधीताः स्युर्नाम्नि नारायणात्मके।।1947।।

आदि रामायण में श्रीमुख का वाक्य नारदजी के प्रति

ब्रह्माजी के मुख से जितनी वेद राशि निकली है उन समस्त वेद राशियों को उसने पढ़ लिया जिसने नारायण नाम का एक बार उच्चारण कर लिया।

नारायणस्य यावन्ति पुराणेष्वागमेषु च।

दिव्यनाम्नां सहस्राणि कीर्तयन् यत्फलं लभेत्।।1948।।

ततः कोटिगुणं पुण्यं फलं दिव्यं मदात्मकम्।

लभते सहसा ब्रह्मन् सकृद् रामेति कीर्तनात्।।1949।।

समस्त पुराणों एवं आगमशास्त्रों में भगवान् नारायण के जितने नाम हैं उन दिव्य नामों को हजार बार कहने पर जो पुण्य फल प्राप्त होता है हे नारद! उससे कोटि गुना ज्यादा दिव्य एवं मत्स्वरूपात्मक पुण्य फल अचानक एक बार श्रीरामनाम के संकीर्तन से प्राप्त होता है।

मन्नामकीर्त्तने हृष्टो नरः पुण्यवतां वरः।

तस्यापि पादरजसा शुद्ध्यति क्षितिमण्डलम्।।1950।।

हमारे श्रीरामनाम के संकीर्तन करते सुनते समय जो मनुष्य प्रसन्न होता है जिसका हृदय गदगद हो जाता है वह मनुष्य समस्त पुण्यात्माओं में श्रेष्ठ है उनके भी चरण रज से सम्पूर्ण पृथिवी पवित्र हो जाती है।

तत्रैव स्थानान्तरे

असंख्यैः पुण्यनिचयैः कोटिजन्मार्जितैरपि।

पञ्चाङ्गोपासनाभिश्च रामनाम्नि रतिर्भवेत्।।1951।।

आदि रामायण में दूसरी जगह

अनेक जन्मों से सञ्चित असंख्य पुण्यों एवं भगवान् विष्णु आदि पञ्चदेवों की उपासना के फलस्वरूप ही श्रीरामनाम में रति होती है अन्यथा नहीं।

यावन्न रामभक्तानां सततं पादसेवनम्।
रामनाम्नि परे तावत् प्रीतिस्संजायते कथम्।।1952।।

जब तक श्रीरामजी के भक्तों के चरणों की सतत सेवा कुछ दिन तक नहीं करेंगे तब तक परात्पर श्रीरामनाम में सम्यक् प्रीति कैसे होगी?

पापिष्ठा भाग्यहीनाश्च पापकर्मणि तत्पराः।
रामनाम्नः कथं तेषां मुखादुच्चारणं भवेत्।।1953।।

जो लोग अत्यन्त पापी, भाग्यहीन एवं पापकर्म में लगे हुए हैं उन पापियों के मुख से श्रीरामनाम का उच्चारण कैसे होगा?

रकारेणाघसंनाशो मकारान्मुक्तिरुत्तमा।
पूर्णेन वश्यतां याति रामो रामेति शब्दितः।।1954।।

राम राम ऐसा उच्चारण करने पर श्रीरामनाम के 'र' का उच्चारण करने पर पापों का नाश होता है, 'म' के उच्चारण करने से उत्तम मुक्ति प्राप्त होती है पूरे 'राम' नाम के उच्चारण करने पर श्रीरामजी उस साधक के वश में हो जाते हैं।

श्रीब्रह्मोवाच

एतद्धनुमता प्रोक्तं रामनामरहस्यकम्।
श्रुत्वा नलः प्लवंगेशस्तथैव हि चकार सः।।1955।।

श्रीब्रह्माजी ने कहा

इस श्रीरामनाम के रहस्य को श्रीहनुमान् जी ने कहा उसे सुनकर कपीश नल ने वैसा किया।

लिखित्वा दृषदां मध्ये नाम सीतापतेर्मुहुः।
निचिक्षेप पयोराशौ बहूनुच्चावचान् गिरीन्।।1956।।

नल ने पत्थरों पर श्रीजानकीनाथ के श्रीरामनाम को लिखकर बड़े–बड़े पत्थरों को समुद्र में फेंका।

संतरन्ति स्म दृषदो रामनामाङ्किता जले।

तद् दृष्ट्वा वानराः सर्वे बभूवुर्विस्मितास्तदा।।1957।।

श्रीरामनाम से अंकित पत्थर समुद्र के जल में तैरते थे उस दृश्य को देखकर उस समय सभी वानर आश्चर्यचकित हो गये।

इदं सुगोप्यं भवते वदामि प्रसंगतः सेतुनिबन्धनेऽस्मिन्।

न वाच्यमेतद् भवता परस्मै भक्त्योपसन्नाय तु वाच्यमेव।।1958।।

श्रीहनुमान् जी कहते हैं कि श्रीरामनाम का यह रहस्य अत्यन्त गोपनीय है सेतु बन्धन के पुनीत अवसर पर प्रसंगवश मैं आपके लिए कहता हूँ। आप इस रहस्य को हर किसी के समक्ष न प्रकट करें परन्तु भक्तिपूर्वक शरण में आने वाले के लिए अवश्य कहें।

रामेतिमन्त्रं कवयो वदन्ति यद् द्वयक्षरं नाम रघूद्वहस्य।

अस्मत् प्रभोरस्य महामहिम्नो मनुष्यलिङ्गस्य परस्य पुंसः।।1959।।

महामहिमामय मनुष्यरूप परात्परपुरुष हमारे स्वामी रघुवंशभूषण श्रीरामचन्द्र जी के 'श्रीराम' इन दोनों अक्षरों को विद्वान् लोग मन्त्र कहते हैं।

तदेव सम्यग् विलिखोरुबुद्धे प्रत्यद्रिपाषाणशिलासु तावत्।

भवाम्बुधिं येन जनास्तरन्ति किं तारणं दुष्करमस्य तेषाम्।।1960।।

हे[1] महान् बुद्धि नल! उसी श्रीरामनाम को प्रत्येक पाषाण शिलाओं पर सम्यक् लिखो। जिस श्रीरामनाम के माध्यम से मनुष्य भवसागर को पार कर जाते हैं फिर उसी नाम के सहारे पत्थरों के लिए इस समुद्र पर तैरना कौन दुष्कर कार्य हैं।

ग्रावाङ्गणेभ्योऽपि जनस्य पापान्यतीव सारेण समाकुलानि।

लघुक्रियन्ते मनुजा यदेतैर्भृशं विलुप्तैरिह तन्न चित्रम्।।1961।।

हे मनुष्यों! मनुष्यों के पाषाण से भी भारी एवं अति विशाल पाप जो जीव को व्याकुल कर देते हैं वे भी श्रीरामनाम के उच्चारण से तुच्छ हो जाते हैं अतः श्रीरामनाम में कुछ भी आश्चर्य नहीं है।

---

1. श्रीसीताराम नाम को प्रबल प्रताप अनन्द। सावधान चिन्तन करत पाइय परमानन्द।।
रामनाम सुमिरन विना साधन निखिल अनर्थ। युगलानन्य विहाय भ्रम सुमिरिय नाम समर्थ।

नल उवाच

साधु भो साधु हनुमन् भवान् यदुपदिष्टवान्।
जपन् संतारणं नाम रामस्य करुणानिधेः।।1962।।

नल ने कहा हनुमान् जी! आपने जो उपदेश दिया वह साधु है साधु है करुणानिधि भगवान् श्रीराम का नाम जप करने वाले को सम्यक् तारने वाला है।

सत्यमेतत्प्रभुरयं नराकारो नरोत्तमः।
कोऽस्य स्वरूपं जानीयात्त्वामृते विदुषां वर।।1963।।

हे विद्वद्वरिष्ठ! आपके अलावा श्रीरामजी के स्वरूप को और कौन जान सकता है? वास्तव में यही सत्य है कि ये नर रूप में पुरुषोत्तम नारायण हैं।

भूयस्त्वां परिपृच्छामि कृपाते मयि मारुते।
क्षमस्व तन् ममात्यन्तं बहुधा मूढ़चेतसः।।1964।।

हे पवन पुत्र! मैं पुनः पुनः आपसे पूछता हूँ क्योंकि आपकी कृपा मुझ पर है विमूढचित्त मेरे अपराध को क्षमा करें।

भवस्याम्भोनिधेश्चापि त्वया पारः प्रदर्शितः।
विस्तरेण पुनर्ब्रूहि रामनाम्नोऽस्य वैभवम्।।1965।।

आपने भवसागर एवं इस समुद्र के भी पार जाने का मार्ग दिखा दिया है अतः अब आप पुनः विस्तार के साथ श्रीरामनाम के वैभव का वर्णन करें।

शृण्वन् स्मरन् प्रभोर्नाम माहात्म्यमिदमद्भुतम्।
न तृप्यामि मरुत्सूनो कथयस्व ततो मम।।1966।।

हे पवनतनय! परम प्रभु श्रीरामजी के श्रीरामनाम के इस अद्भुत माहात्म्य को सुनकर एवं स्मरण करके मैं तृप्त नहीं हो पा रहा हूँ अतः आप पुनः मेरे लिए कहें।

श्रीहनुमानुवाच

श्रूयतां सावधानेन रामनामबलं त्वया।
यच्छ्रुत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः।।1967।।

श्रीहनुमान् जी बोले हे नल! तुम सावधान होकर श्रीरामनाम के बल को सुनो। जिसके श्रवण करने पर मनुष्य सभी पापों से मुक्त हो जाता है इसमें संशय नहीं है।

एकतः सकला मन्त्रा एकतो ज्ञानकोटयः।

एकतो रामनाम स्यात्तदपि स्यान्न वै समम्।।1968।।

सम्पूर्ण मन्त्र, तन्त्र, ज्ञान, ध्यानादि एक ओर और श्रीरामनाम एक ओर फिर भी श्रीरामनाम से वे सब सम नहीं है श्रीरामनाम ही सर्वश्रेष्ठ हैं।

देशकालक्रियाज्ञानादनपेक्ष्यं स्वरूपतः।

अनन्तकोटिफलदं नाममन्त्रं जगत्पतेः।।1969।।

जगत्पति भगवान् श्रीरामजी के नाम में स्वरूपतः देश, काल, कर्मकाण्ड एव ज्ञानादि की अपेक्षा नहीं है उच्चारण मात्र से अनन्त कोटि फल देने वाला है।

गंगास्नानसहस्रेण यज्ञान्तस्नानकोटिभिः।

या न सिद्धिर्भवेज्जातु सा रामेतिप्रकीर्त्तनात्।।1970।।

श्रीगंगाजी में हजारों बार स्नान करने से एवं यज्ञान्त में अवभृथ स्नान करने से जो सिद्धि नहीं प्राप्त होती है वह सिद्धि श्रीरामनाम के संकीर्तन से प्राप्त हो जाती है।

अन्यदेव फलं ज्ञाने श्रवणे वान्यदेव तत्।

कीर्तने चान्यदेवस्य ह्यन्यदा वर्तते फलम्।।1971।।

श्रीरामनाम के ज्ञान होने पर दूसरा फल, श्रवण करने पर दूसरा फल श्रीरामनाम के कीर्तन करने पर दूसरा ही फल प्राप्त होता है।

ये जानन्ति जनास्तत्त्वं रामनाम्नो महद् यशः।

न ते दुष्कृतसंदोहैर्लिप्यन्ते जन्मकोटिभिः।।1972।।

जो लोग श्रीरामनाम के महायशस्वी तत्व को जानते हैं वे लोग अनन्त जन्मों तक पाप समूह से लिप्त नहीं होते हैं।

शिव एवास्य जानाति सरहस्यं स्वरूपकम्।

उपदिश्य स कृज्जीवान् यस्तारयति मोहतः।।1973।।

वास्तव में श्रीरामनाम के रहस्य एवं स्वरूप को भगवान् शंकर ही जानते हैं। जो जीवों को एक बार श्रीरामनाम का उपदेश करके मोहरूपी भवसागर से पार करते हैं।

अन्यदाराधनशतैर्मन्त्रं फलति नाथवा।

गृहीतमात्र फलदं रामनाम स्वरूपतः।।1974।।

दूसरे हजारों आराधनाओं से मन्त्र फलित होता है कि नहीं, पर श्रीरामनाम के ग्रहण मात्र से फल प्राप्त होता है।

न शौचनियमाद्यत्र न सिद्धारिविचारणम्।

कल्पवृक्षस्वरूपत्वाज्जनानां रामनामकम्।।1975।।

श्रीरामनाम के जप करने में शौच नियमादि एवं सिद्धि शत्रु आदि का विचार नहीं होता है क्योंकि साधकों के लिए श्रीरामनाम कल्पवृक्ष है।

सकृज्जप्तं धुनोत्याशु पापमाजन्मसंभवम्।

द्विरावृत्या पुनर्जप्तं कोटियज्ञफलप्रदम्।।1976।।

एक बार जप करने पर श्रीरामनाम जन्म से लेकर वर्तमान के सारे पापों को शीघ्र ही नष्ट कर देता है। दो बार जप करने पर अनन्त यज्ञों का फल प्राप्त होता है।

त्रिरावृत्या पुनर्जप्तं स्वरूपस्थं करोत्यमुम्।

चतुरावृत्तिजप्तत्वादृणीभवति राघवः।।1977।।

तीन बार जप करने पर साधक को स्व स्वरूप में स्थित कर देता है एवं चार जप करने पर रामजी ऋणी हो जाते हैं।

चिन्तामणिः कल्पतरुः कामधेनुश्च वै नृणाम्।

अनल्पफलसंदोहभवनं रामनाम वै।।1978।।

चिन्तामणि, कल्पवृक्ष एवं कामधेनु मनुष्यों को जितना फल प्रदान करते हैं उनसे भी अत्यधिक फल समूह का भवन श्रीरामनाम है।

नास्य रूपं विजानन्ति ब्रह्माद्या देवता अपि।

वाग्वल्ली बीजमेतद्वै रामनाम जगत्पतेः।1979

श्रीरामनाम के यथार्थ स्वरूप को ब्रह्मादि देवता भी नहीं जानते हैं सम्पूर्ण शब्द ब्रह्मरूपलता का मूल बीज जगत्पति श्रीरामजी का नाम है।

अमृतस्याकरं विद्यादेतदेव महोर्जितम्।

सर्वलोकमहामोहतिमिरौघनिवारणम्।।980।।

श्रीरामनाम को ही महातेजस्वी, अमृत की खान एवं सम्पूर्ण लोक के महामोहरूपी अन्धकार प्रवाह का निवारक समझना चाहिए।

अनन्तकोटिसूर्येन्दुवह्निदीधितिदीप्तिमत्।

बाह्यान्तरसुसंछन्नं तमोवृन्दनिरासकम्।।981।।

ज्ञानधारामृतरसैरात्मनः स्नपनंस्फुटम्।

हृत्पद्मभवने नित्यं दीप्तिकृद्दीपकोपमम्।।982।।

सर्व वेदान्तविद्यानां सारमेतदुदीरितम्।।

रामनामाखिलाज्ञानरजनीहरभास्करम्।।983।।

पुरा कृतयुगे केचित् जनाः सुकृतिनो नल।

सरहस्यं रामनाम सकृदास्वाद्य सद्गुरुम्।।984।।

भित्वाऽज्ञानतमोराशिं कृत्वा स्वात्मप्रकाशनम्।

परे ब्रह्मणि संलीनाः सिद्धिं प्राप्ता विना श्रमम्।।985।।

अनन्त सूर्य चन्द्र एवं अग्नि की किरणों के समान दीप्तिमान् बाहर एवं भीतर के आवरणरूप अन्धकार का नाशक, विज्ञानधारारूप अमृत रसों के द्वारा आत्मा का स्नान कराने वाला, हृदय कमल रूपी भवन में दीपक जैसे प्रकाश करने वाले, समस्त वेदान्त विद्या का सारसर्वस्व और सम्पूर्ण अज्ञानरूपी रात्रि का हरण करने वाला सूर्य, श्रीरामनाम को कहा गया है।

हे नल! बहुत पहले सत्युग में कुछ सुकृती लोग सद्गुरुस्वरूप श्रीरामनाम का एक बार आस्वादन करके अज्ञानरूप अन्धकार समूह का नाश करके, अपने आत्मस्वरूप का प्रकाश करके बिना परिश्रम के ही परात्पर ब्रह्म श्रीरामजी में संलीन होकर सिद्धि को प्राप्त कर लिये।

अपरं साधनानीह बभूवुः कोटिशो नृणाम्।

मुनीनां मतभेदेन येष्वायासो महान् भवेत्।।986।।

मुनियों के मतभेद से यहाँ मनुष्यों के कल्याणार्थ अनन्त साधन हैं जिनमें परिश्रम बहुत है।

ध्यानतो रामचन्द्रस्य रामचन्द्रस्य भक्तितः।
रामचन्द्रस्य यजनान्नाम्ना रामस्य मुच्यते।।1987।।

भगवान श्रीराम के ध्यान, भक्ति एवं यजन तथा नाम से मनुष्य भवबन्धन से मुक्त हो जाता है।

नामैव यस्य बहिरन्तर्पापकोटिनिर्वासनैककरणं शरणं जनानाम्।
कस्तस्य कोशलपुराधिपराजसूनोरन्यावतारनिवहस्तुलने प्रयातु।।1988।।

जिन भगवान् श्रीराम का नाम जीवमात्र के बाहर भीतर के अनन्त पापों का एकमात्र नाशक एवं साधक लोगों का रक्षक है। उन कोशलेन्द्रनन्दन भगवान् श्रीराम की तुलना अन्य अवतार समूह कैसे कर सकते हैं।

यावन्ति नामानि रघूत्तमस्य तेषामिदं मुख्यतमं प्रदिष्टम्।
यज्ज्ञानमात्रेण विमुक्तबन्धः स्वरूपनिष्ठां लभतेऽधमोऽपि।।1989।।

श्रीरघुवंशभूषण भगवान् श्रीराम के जितने नाम हैं उन सबमें यह श्रीरामनाम अत्यन्त मुख्य कहा गया है जिसके ज्ञानमात्र से अधम भी बन्धन मुक्त होकर स्वस्वरूप में निष्ठा को प्राप्त कर लेता है।

अज्ञानेन्धननिर्दाहो ज्ञानदीपप्रदीपनम्।
एतदेवमतं नाम्नि रामेति द्वयक्षरात्मके।।1990।।

अक्षर द्वय स्वरूप श्रीरामनाम में यही महान् गुण माना गया है कि अज्ञानरूपी काष्ठ का नाश एवं ज्ञानरूपी दीप को प्रकाशित करते हैं।

जिह्वाग्रे यस्य लिखितं रामेति द्वयक्षर परम्।
कथं स्पृशन्ति तं दूताः यमस्य क्रोधभीषणा।।991।।

जिसकी जीभ पर 'श्रीराम' ऐसा परात्पर अक्षरद्वय लिखा हो उस भक्त का क्रोध से भयंकर दीखने वाले यमदूत कैसे स्पर्श कर सकते हैं।

रामनामाङ्किता मुद्रा प्रत्यङ्गं येन वै धृताः।
आबद्धं तेन कवचं मोहशत्रुचमूजये।।992।:

श्रीरामनाम से अंकित मुद्रा जो अपने प्रत्येक अंग में धारण करते हैं

मानो उन साधकों ने अपने मोहरूपी शत्रु सेना पर विजय पाने के लिए कवच धारण कर लिया हो।

जाग्रंस्तिष्ठन् स्वपन् क्रीडन् विहरन्नाहरन्नपि।

उन्मिषन् निमिषंश्चैव रामनाम सदा जपेत्॥993॥

जागते, बैठते, सोते, खेलते, विहार करते, आहार लेते, आँख खोलते एवं नेत्र बन्द करते समय सदा श्रीरामनाम का जप करना चाहिए।

पापं कृत्स्नं विधूयाशु मुक्तभारः स मानुषः।

अनायासेन मोहाख्यं सिन्धुं तरति दुस्तरम्॥994॥

श्रीरामनाम का जापक वह मनुष्य अपने सम्पूर्ण पापों का शीघ्र ही विनाश करके बिना परिश्रम ही मोहरूपी दुस्तर भवसागर को पार कर जाता है।

प्रारब्धकर्मापहृतिप्रवीणं रामेति नामैव बुधैर्निरुक्तम्।

यज्ज्ञानमात्रादधमा किराती मुनीन्द्रवृन्दैरभवन्नमस्या॥995॥

विद्वानों ने प्रारब्ध कर्म के नाश करने में परम चतुर श्रीरामनाम को ही कहा है। जिसके ज्ञान मात्र से ही अधम किराती भी मुनिश्रेष्ठों से पूज्या एवं प्रणम्या हो गयी।

कस्तेन तुल्यः सुकृती भवेऽस्मिन् कस्तेन तुल्यश्च सदाप्रकाशः।

कस्तेन तुल्यश्च विशोकमोहो यो नाम रामेति जपेदजस्रम्॥996॥

जो निरन्तर श्रीरामनाम का जप करता है उसके समान पुण्यात्मा, सदा सर्वदा प्रकाश स्वरूप एवं शोक मोह से रहित दूसरा कौन है। अर्थात् कोई नहीं।

एतन् मया संपरिपृच्छ्यते ते भूयः प्रदिष्टं परमं रहस्यम्।

हृदावधार्य स्वयमेव विद्धि वाच्यं भजित्वा सति नो परस्मिन्॥997॥

तुम्हारे सम्यक् पूछने पर मैंने यह परम रहस्य पुनः कहा है इस दिव्य रहस्य को हृदय में धारण करके स्वयं भजन करके अनुभव करो। किसी दूसरे के लिए इसे न कहना, तात्पर्य है कि यदि कोई अपना हो नामानुरागी एवं अधिकारी हो तो कहना अन्यथा नहीं।

श्रीमन् महारामायणे श्रीपार्वतीवाक्यं श्रीशंकरं प्रति

श्रीमहारामायण में श्रीपार्वतीजी का वाक्य श्रीशंकर जी के प्रति

मुहुर्मुहुस्त्वया प्रोक्तं रामनाम परात्परम्।
तदर्थं ब्रूहि भो स्वामिन् कृत्वा मह्यं दयां हृदि ।।998।।

हे स्वामिन्! आपने परात्पर श्रीरामनाम को बारम्बार कहा है अब हृदय में दयाभाव को भरकर मेरे लिए श्रीरामनाम के अर्थ को कहिए।

श्रीशिव उवाच

त्वमेव जगतां मध्ये धन्या धन्यतरा प्रिये।
पृष्टं त्वया महत्तत्वं रामनामार्थमुत्तमम्।।999।।

श्रीशिवजी ने कहा

हे प्रिये पार्वति! इस संसार में वास्तव में तुम्हीं धन्य एवं धन्यतर हो, क्योंकि तुमने महत्त्व स्वरूप उत्तम श्रीरामानाम के विषय में पूछा है।

वेदास्सर्वे च शास्त्राणि मुनयो निर्जरर्षभाः।
नाम्नः प्रभावमत्युग्रं ते न जानन्ति सुव्रते।।1000।।

हे सुन्दर व्रत करने वाली पार्वति! सम्पूर्ण वेद, शास्त्र मुनि और श्रेष्ठ देवता, वे सब भी श्रीरामनाम के अत्युग्र प्रभाव को नहीं जानते हैं।

राम एवाभिजानाति कृत्स्नं नामार्थमद्भुतम्।
ईषद् वदामि नामार्थं देवि तस्यानुकम्पया।।1001।।

हे देवि! श्रीरामनाम के अद्भुत अर्थ को साकल्येन (सम्पूर्णतया) श्रीरामजी ही जानते हैं उन्हीं की कृपा से मैं यत्किंचित् नामार्थ कह रहा हूँ।

कोटिकन्दर्पशोभाढ्ये सर्वाभरणभूषिते।
रम्यरूपार्णवे रामे रमन्ते सनकादयः।।1002।।
अत एव रमुक्रीडा रामनाम्नः प्रवर्तते।
रमन्ते मुनयः सर्वे नित्यं यस्यांघ्रिपंकजे।।1003।।
अनेकसखिभिः साकं रमते रासमण्डले।
अतएव रमुक्रीडा रामनाम्ना प्रवर्तते।।1004।।

करोड़ों कामदेवों की शोभा से युक्त सभी आभूषणों से सुसज्जित एवं रमणीय रूपसमुद्र भगवान श्रीसीतारामजी में सनकादि महर्षि रमण करते हैं इसीलिए रामनाम में रमुक्रीडायाम् धातु है। सभी ऋषि मुनि जिसके चरण

कमलों में नित्य रमण करते हैं अथवा अपनी अनेक सहचरियों के साथ जो नित्य रासमण्डल में रमण करते हैं उन्हें राम कहते हैं इसीलिए राम नाम में रमुक्रीडा धातु की प्रवृत्ति होती है।

ब्रह्मज्ञाननिमग्नो यो जनको योगिनां वरः।

हित्वा तद्रमते रामे रमुक्रीडा ततोऽनघे।।1005।।

हे निष्पाप पार्वति! योगियों में श्रेष्ठ, ब्रह्मज्ञान में नित्य निमग्न जो जनकजी हैं। वे भी उस ब्रह्मानन्द को छोड़कर श्रीरामजी में ही रमण करते हैं इसीलिए राम शब्द में रमुक्रीडा धातु है।

आबालतो विरक्तो यो जामदग्न्यो हरिः स्मृतः।

स एव रमते रामे रमुक्रीडा ततोऽनघे।।1006।।

हे निष्पापे! जो बाल्यावस्था से ही विरक्त थे और जो 'हरि' के अवतार कहे जाते हैं वे जमदग्नि पुत्र परशुरामजी भी श्रीरामजी में रमण करते हैं अतः रमुक्रीडा है।

सप्तद्वीपाधिपास्सर्वे साधवोऽसाधवोऽपि वा।

विदेहकुलसंभूता ये च सर्वे नृपोत्तमाः।।1007।।

रामरूपहृता भूत्वा रमितास्तैर्निजा निजाः।

दत्तात्मजा रमुक्रीडा रामस्यैव इति श्रुतिः।।1008।।

सप्तद्वीपाधीश सभी सज्जन अथवा असज्जन और श्रीजनकजी के वंश में समुत्पन्न श्रेष्ठ राजा जो थे वे सभी राजा लोग श्रीरामजी का दर्शन करके श्रीरामजी के रूप से आकृष्ट होकर अपनी—अपनी कन्याओं को रामजी के चरणों में समर्पित कर दिया अर्थात् विवाह कर दिया इसीलिए वेद रामनाम में रमुक्रीडा धातु बताते हैं।

चित्रकूटमनुप्राप्य पितुर्वचनगौरवात्।

रम्यमावसथं कृत्वा रममाणा वने त्रयः।।1009।।

श्रीपिताजी के वचन के गौरवार्थ वन यात्रा के समय श्रीचित्रकूट को सम्यक् रूप से प्राप्त कर सुन्दर पर्णकुटी बनाकर श्रीसीताजी, श्रीलक्ष्मणजी

और श्रीरामजी तीनों ने वन में खूब रमण किया।

देवगन्धर्वसंकाशास्तत्र ते न्यवसन् सुखम्।
अतोऽस्य रामनाम्नो वै रमुक्रीडा प्रवर्तते।।1010।।

देवताओं और गन्धर्वों के समान वे सब वहाँ सुखपूर्वक निवास किये, इसीलिए इस नाम में रमुक्रीडा धातु है।

राक्षसी घोररूपा या दुष्टत्वं कर्तुमागता।
साप्यासीद्रमिता रामे पतिवत् काममोहिता।।1011।।

जो राक्षसी एवं घोररूपा थी और जो दुष्टता करने आयी थी वह शूपर्णखा भी श्रीरामजी को देखकर काम मोहित हो गयी और पति की तरह रामजी में रमण करने लगी।

चतुर्दशसहस्राश्च राक्षसाः खरदूषणाः।
मोहिता रामसद्रूपे रमुक्रीडात उच्यते।।1012।।

चौदह हजार राक्षसों के साथ खरदूषण आदि भी श्रीरामजी को देखकर श्रीरामजी के रूप पर मोहित हो गये इसलिए रामनाम में रमक्रीडा धातु कहा जाता है।

नाना मुनिगणा सर्वे दण्डकारण्यवासिनः।
ज्ञानयोगतपोनिष्ठा जापका ध्यानतत्पराः।।1013।।
मुनिवेशधरं रामं नीलजीमूतसन्निभम्।
रमन्ते योषितीभूता रूपं दृष्ट्वा महर्षयः।।1014।।

अनेक प्रकार के दण्डकारण्य के ऋषि महर्षि लोग जो ज्ञानयोग एवं तपोनिष्ठ जापक तथा ध्यान परायण थे। वे महर्षि लोग भी नील मेघ के समान कान्ति वाले वेषधारी श्रीरामजी को देखकर काम मोहित से होकर अपने में स्त्रीभाव को स्वीकार करके रामजी में रमण करने लगे।

ईषद्धास्ये कृते रामे दृष्ट्वा तेषामिमां गतिम्।
यूयं धन्यतरा ज्ञानं मत्प्रसन्ने हि सांप्रतम्।।1015।।

उन महात्माओं की उस स्थिति को देखकर श्रीरामजी थोड़ा मुस्कराये और कहा हे महर्षियों! आप लोग अत्यन्त धन्य हैं मेरी प्रसन्नता होने पर ही

ऐसा दिव्यज्ञान प्राप्त होता है।

मन्निदेशात् तपो यूयं चरध्वं भो महर्षयः।

ईप्सितास्ते भविष्यन्ति द्वापरे आगते युगे।।1016।।

हे महर्षियों! मेरी आज्ञा से आप लोग यहीं इस शृंगार भाव तपस्या करें, द्वापर युग के आने पर आप लोगों के अभीष्ट की सिद्धि होगी।

अजरामरतनुं त्यक्त्वा रामाल्लब्धं विलोक्य सः।

राम एवारमद्वाली रमुक्रीडात उच्यते।।1017।।

श्रीरामजी से प्राप्त अजर एवं अमर शरीर को त्यागकर बाली श्रीरामजी का दर्शन करके श्रीरामजी में ही रमण करने लगा इसीलिए रमुक्रीडा धातु है।

यतोऽयं रमते रामे सदैव पवनात्मजः।

दग्ध्वा लंकां ततः सीतां वीक्ष्यायातः सुखेन सः।।1018।।

श्रीपवनपुत्र श्रीहनुमानजी सदासर्वदा श्रीरामजी में ही रमण करते हैं इसीलिए श्रीसीताजी का दर्शन करके और लंका को जलाकर भी सुखपूर्वक लौट आये।

रमिता रामसद्रूपे राक्षसा रावणादयः।

राम रामाहवेत्युक्त्वा राममेवाभिसंगताः।।1019।।

रावणादि राक्षस श्रीरामजी के सुन्दर रूप में रमण करते हुए 'राम' 'राम' ऐसा युद्ध में कहते हुए श्रीरामजी को ही प्राप्त हो गये।

परधाम्नि गते रामेऽयोध्यायां ये चराचराः।

रामेऽभिरमिता भूत्वा तत्साकं जग्मुरेव हि।।1020।।

रामनाम्नो विशेषेण रमुक्रीडात उच्यते।

हेतुरन्यद् रमुक्रीडां शृणु त्वं सावधानतः।।1021।।

श्रीरामजी के परात्पर धाम साकेत जाते समय अयोध्या में जितने चर अचर प्राणी थे वे सब श्रीरामजी में सम्यक् रमण करते हुए उन्हीं के साथ साकेत चले गये। श्रीरामनाम में विशेष रूप से रमुक्रीडा कहा जाता है हे पार्वति! अब तुम सावधान होकर दूसरा कारण सुनो।

वाच्यवाचकरामस्य कथितौ रूपनामनी।

रामनाम परं ब्रह्म रमिता यच्चराचरे।।1022।।

हे पार्वति! श्रीरामनाम वाचक एवं श्रीरामजी वाच्य कहे गये हैं श्रीरामनाम परब्रह्मस्वरूप है चर एवं अचर सभी में रमण करता है।

रमन्ते मुनयो यस्मिन् योगिनश्चोर्द्ध्वरेतसः।
अतो देवि रमुक्रीडा रामनाम्नैव वर्तते।।1023।।
पोषणं भरणाधारं रामनाम्नो जगत्सु च।
अत एव रमुक्रीडा परब्रह्माभिधीयते।।1024।।

बड़े–बड़े ऊर्द्ध्वरेता मुनि भी जिसमें रमण करते हैं हे देवि! इसीलिए श्रीरामनाम में रमुक्रीडा धातु है। सम्पूर्ण लोकों में जीवमात्र का भरण, पोषण एवं आश्रय श्रीसीतारामजी हैं इसीलिए श्रीरामनाम से रमुक्रीडा एवं परब्रह्म कहा जाता है।

अंशांशै रामनाम्नश्च त्रयः सिद्धा भवन्ति हि।
बीजमोङ्करसोऽहं च सूत्रमुक्तमिति श्रुतिः।।1025।।

श्रीरामनाम के अंश के अंशों से ही तीन की सिद्धि होती है सभी मन्त्रों का बीज मन्त्र 'रां', ओम् एवं सोऽहम् इसको शिवसूत्र पाणिनि व्याकरण से समझना चाहिए।

श्रीपार्वत्युवाच

कथमेतद्विजानामि संसिद्धा रामनामतः।
बीजमोंकारसोऽहं च सूत्रमुक्तमिति श्रुतिः।।1026।।

श्रीपार्वतीजी ने कहा

हे भगवन्! रां बीज, ओम्, सोऽहम् ये तीनों श्रीरामनाम से उत्पन्न होते हैं यह मैं कैसे समझू?

श्रीशिवउवाच

निश्चलं मानसं कृत्वा सावधानाच्छृणु प्रिये।
गुह्याद् गुह्यतमं तत्त्वं वक्ष्येऽमृतमयं मुदा।।1027।।

श्रीशिवजी ने कहा हे प्रिये! अपने मन को स्थिर करके सावधान होकर सुनो, मैं प्रसन्नतापूर्वक गोपनीय से भी अत्यन्त गोप्य अमृतमय तत्त्व को

करूंगा।

रामनाम महाविद्ये! षड्भिर्वस्तुभिरावृतम्।

ब्रह्मजीवमहानादैस्त्रिभिरन्यद्वदामि ते।।1028।।

हे महाविद्यास्वरूपे पार्वति ।श्रीरामनाम छः वस्तुओं से आवृत्त है। ब्रह्म, जीव महानाद एवं और दूसरे तत्त्वों को तुम्हारे लिए कहता हूँ।

स्वरेण विन्दुना चैव दिव्यया माययापि च।

पृथक्त्वेन विभागेन सांप्रतं श्रृणु पार्वति ।।1029।।

स्वर, बिन्दु एवं दिव्य माया, हे पार्वति! अब सभी तत्त्वों को अलग—अलग समझो।

परब्रह्ममयो रेफो जीवोऽकारश्च मश्च यः।

रस्याकारो महानादो राया दीर्घस्वरात्मिका।।1030।।

रेफ 'र' परब्रह्मस्वरूप श्रीसीतारामजी हैं, म का जो 'अ' है समस्त जीव है। 'र' का जो अ है वह महानाद है दस प्रकार के नादों का कारण है 'रा' में जो 'आ' है वह स्वर मात्र का कारण है।

मकारो व्यञ्जनं बिन्दुर्हेतुः प्रणवमाययोः।

अर्धभागादुकारः स्यादकारान्नादरूपिणः।।1031।।

'म्' बिन्दुस्वरूप है और ओम् तथा माया का कारण है। श्रीरामनाम से ओम् की निष्पत्ति प्रकार बता रहे हैं। रकार में महानादस्वरूप जो 'अ' है उसको 'उ' आदेश कर दिया।

रकारगुरुराकार तथा वर्णविपर्ययः।

मकारव्यञ्जनं चैव प्रणवं चाभिधीयते।।1032।।

र आ में वर्ण विपर्यय कर दिया तो आ उ म् हुआ सन्धिकार्य ओम् सिद्ध हो गया।

मस्यासवर्णितं मत्वा प्रणवे नादरूपधृक्।

अन्तर्भूतो भवेद्रेफः प्रणवे सिद्धिरूपिणी।।1033।।

'म' के अकार को वर्ण विपर्यय करके र् आ अ म् होने पर 'आ' 'अ'

में सवर्ण दीर्घ हो गया 'ओम्' में म का 'अ' नादरूप है। एवं र को उ हो गया वह ओम् में अन्तर्भूत है।

रामनाम्नः समुत्पन्नः प्रणवो मोक्षदायकः।
रूपं तत्त्वमसेश्चासौ वेदतत्त्वाधिकारिणः।।1034।।

श्रीरामनाम से समुत्पन्न 'ओम्' मोक्ष प्रदाता है एवं 'तत्त्वमसि' इत्यादि महावाक्य भी श्रीरामनाम से ही उत्पन्न होते हैं। तात्पर्य यह है कि जब सम्पूर्ण वाङ्मय श्रीरामनाम से उत्पन्न हुए हैं तब 'ओम्' एवं तत्त्वमसि आदि महावाक्य भी श्रीरामनाम से ही उत्पन्न होना चाहिए अतः श्रीरामनाम से 'ओम्' की निष्पत्ति प्रक्रिया दिखाया – र अ अ म् अ' यह वर्ण विच्छेद है इसका विपर्यय– अ अ र अम् यह वर्ण विपर्यय है। यहाँ 'अतोरोरप्लुतादप्लुते' (6.1.113) सूत्र से 'र' को 'उ' हो गया अ अ उ अम् फिर अ अ में सवर्ण दीर्घ आ उ अ म् हुआ फिर 'आद् गुण' सूत्र गुण हो गया ओ अम् हुआ, फिर 'एङः पदान्तादति' सूत्र से पूर्वरूप हुआ ओम् सिद्ध हो गया।

अकारः प्रणवे सत्त्वमुकारश्च रजोगुणः।
तमोहलमकारस्स्यात् त्रयोऽहङ्कारमुद्भवः।।1035।।

प्रणव ओम् में 'अ' सतोगुण, 'उ' रजोगुण और म् तमोगुण है इन तीनों वर्णों से क्रमशः सात्विक, राजस एवं तामस अहंकार की उत्पत्ति होती है।

चराचरसमुत्पन्नो गुणत्रयविभागतः।
अतः प्रिये रमुक्रीडा रामनाम्नैव वर्तते।।1036।।

एवं तीनों गुणों से युक्त चराचर भी उत्पन्न हुआ है हे प्रिये! इसीलिए रामनाम में रमुक्रीडायाम् धातु है।

यथा च प्रणवो ज्ञेयो बीजं तद्वर्ण संभवम्।
स शब्देन हकारेण सोऽहमुक्तं तथैव च।।1037।।

जैसे श्रीरामनाम से ओम् की निष्पत्ति हुई उसी प्रकार 'बीजमन्त्र 'रां' की भी निष्पत्ति समझनी चाहिए अर्थात् 'र' अ अ म् अ यहाँ म के उत्तरवर्ती

'अ' का लोप कर दिया तो 'रा' यह बीज बन गया। एवं सोऽहम् की निष्पत्ति भी समझनी चाहिए यथा र अ अ म् अ यहाँ वर्णविपर्यय किया अ अ र् अम् हुआ, 'अतोरोप्लुतादप्लुप्ते' सूत्र से र को उ हुआ, 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से दीर्घ 'आद् गुणः' से गुण हुआ, 'एङः पदान्तादति' से पूर्व रूप हुआ ओम् हुआ यहाँ ओ को सुट् आगम एवं म् को अहत् आगम हुआ टित् होने से आद्यवयव हुआ स् ओ अहम् वर्ण सम्मेलन सो अहम् फिर 'एङः पदान्तादति' से पूर्वरूप सोऽहम् सिद्ध हो गया।

इत्यादयो महामन्त्रा वर्तन्ते सप्त कोटयः।

आत्मा तेषां च सर्वेषां रामनाम्ना प्रकाशते।।1038।।

ओम् बीजमन्त्र सोऽहम् इत्यादि सात करोड़ महामन्त्र हैं उन सभी मन्त्रों की आत्मा श्रीरामनाम से प्रकाशित होती है।

अतः प्रिये रमुक्रीडा तेषामर्थे प्रवर्तते।

सनकाद्याः फणीशाद्या रामनाम भजन्त्यतः।।1039।।

हे प्रिये! उन्हीं के अर्थों में रमुक्रीडा की प्रवृत्ति है इसलिए सनकादि एवं शेषादि श्रीरामनाम का भजन करते हैं।

रामनामगुणैश्वर्यं संक्षेपेण प्रभाषितम्।

रूपमेवं प्रतापं च रामनाम्नो वदामि ते।।1040।।

हे पार्वति ! श्रीरामनाम के गुण और ऐश्वर्य का संक्षेप से वर्णन किया अब तुम्हारे लिए श्रीरामनाम का स्वरूप एवं प्रताप कह रहा हूँ।

शृणु त्वं परमं गुह्यं यन्न जानन्ति केऽपि च।

केऽपि केऽपि विजानन्ति रामानुक्रोशयैव हि।।1041।।

पार्वति ! जिसको कोई भी नहीं जानता है और श्रीरामजी की कृपा से कोई– कोई जानते हैं उस परम गुह्य रहस्य को तुम सुनो।

तेजोरूपमयो रेफः श्रीरामाम्बककंजयोः।

कोटिसूर्यप्रतीकाशः परं ब्रह्म स उच्यते।।1042।।

श्रीरामनाम के परमतेजः स्वरूप रेफ भगवान् श्रीराम के युगलनयन कमल का वाचक है करोड़ों सूर्यों की कान्ति से युक्त है वही परब्रह्म कहा

जाता है।

सोऽपि सर्वेषु भूतेषु सहस्रारे प्रतिष्ठितः।
सर्वसाक्षी जगद्व्यापी नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।।1043।।

वह भी समस्त प्राणियों के सहस्रार में स्थित है जो सबका साक्षी एवं जगद् में व्याप्त है योगी लोग जिसका नित्य ध्यान करते हैं।

रामस्य मण्डलस्यैव तेजोरूपं वरानने!।
कोटिकन्दर्पशोभाढ्यो रेफाकारो हि विद्धि च।।1044।।

हे सुमुखि ! श्रीरामनाम का रेफ के ठीक उत्तर 'अ' है वह भगवान् श्रीराम के परम तेजोमय करोड़ों कामदेवों की शोभा से युक्त मुखमण्डल का बोधक है ऐसा समझो।

अकारस्सोऽपि रूपश्च वासुदेवस्स कथ्यते।
मध्याकारो महारूपः श्रीरामस्येव वक्षसः।।1045।।
सोऽप्याकारो महाविष्णोर्बलवीर्यस्वरूपकः।
सर्वेषामेव भूतानामाधारस्त्वं च विद्धि सः।।1046।।

और वही 'अ' भगवान् वासुदेव का भी वाचक है। श्रीरामनाम का जो मध्यम अकार है वह महापराक्रम पुञ्ज श्रीरामजी के वक्षस्थल का बोधक है, बल एवं वीर्यस्वरूप महाविष्णु का भी वह बोधक है एवं समस्त भूतों का आधार उसे जानो।

अस्याकारो भवेद् रूपः श्रीरामकटिजानुनी।
सोऽप्याकारो महाशम्भुरुच्यते यो जगद्गुरुः।।1047।।

श्रीरामनाम के म् के उत्तरवर्ती जो 'अ' है वह श्रीरामजी के कटि और जंघा का वाचक है और जगद् गुरु महाशम्भु का भी बोधक है।

इच्छाभूतं च रामस्य कारं व्यञ्जनं च यत्।
सा मूलप्रकृतिर्ज्ञेया महामायास्वरूपिणी।।1048।।
भाषितेयं रमुक्रीडा गुह्याद् गुह्यतरा मया।
अन्यं प्रकरणं वक्ष्ये त्वत्तोऽहं चारुलोचने!।।1049।

श्रीरामनाम का जो 'म्' है वह महा आश्चर्यभूता भगवान् की इच्छा है वहीं मूल प्रकृति एवं महामाया है। हे सुलोचने! यह रमुक्रीडा जो अत्यन्त गुह्य थी मैंने तुम्हें कहकर सुनाया अब दूसरे प्रकरण को तुमसे कहूँगा।

नारायणो रकारः स्यादकारो निर्गुणात्मकः।
मकारो भक्तिरेव स्याद् महाह्लादाभिधायिनी।।1050।।

श्रीरामनाम का 'र' भगवान् नारायण, 'अ' निर्गुण स्वरूप एवं 'म' महा आह्लाद करने वाली साक्षात् भक्ति है।

विज्ञानस्थो रकारः स्यादाकारो ज्ञानरूपकः।
मकारः परमा भक्ती रमुक्रीडोच्यते ततः।।1051।।

श्रीरामनाम का 'र' विज्ञान, 'आ' ज्ञान एवं 'म' भक्ति है। इसलिये राम शब्द में रमुक्रीड़ा धातु उपयुक्त है।

चिद्वाचको रकारः स्यात् सद्वाच्याकार उच्यते।
मकारानन्दकं वाच्यं सच्चिदानन्दमव्ययम्।।1052।।

र चिद् आ सद् एवं म आनन्द का वाचक है अत: श्रीरामनाम अविनाशी सच्चिदानन्दस्वरूप है।

रकारस्तत्पदो ज्ञेयस्त्वं पदोऽकार उच्यते।
मकारोऽसि पदं सोमं तत्त्वमसि सुलोचने!।।1053।।

हे सुन्दर नेत्रों वाली पार्वति! श्रीरामनाम का र तत् का, आ त्वं का एवं म असि का वाचक है अर्थात् तत्त्वमसि एवं श्रीरामनाम दोनों एकार्थवाचक हैं।

ब्रह्मेति तत्पदं विद्धि त्वं पदो जीवनिर्मलः।
ईश्वरोऽसि पदं प्रोक्तं यतो माया प्रवर्तते।।1054।।

तत्त्वमसि' पद में तत्पद ब्रह्म, त्वम्पद निर्मल जीव एवम् असिपद ईश्वर का वाचक है, जिसकी इच्छा ही माया है।

वेदसारमहावाक्यं यत्तत्त्वमसि कथ्यते।
रामनाम्नश्च तत् सर्वा रमुक्रीडा प्रवर्तते।।1055।।

समस्त वेदों का सार जो 'तत्त्वमसि' आदि महावाक्य कहे जाते हैं वे

सब श्रीरामनाम से सिद्ध होते हैं इसलिए रमुक्रीडा कहा जाता है।

अन्यं प्रकरणं त्वत्तो भक्त्या शृणु वदाम्यहम्।

संक्षेपेणैव यद् भेदं क्षराक्षरनिरक्षरैः।।1056।।

हे पार्वति! दूसरे प्रकरणों को क्षर अक्षर और निरक्षर के द्वारा तुम्हारे लिए संक्षेप से मैं कहता हूँ सुनो।

व्यञ्जनाच्च क्षरोत्पत्तिरकाराद् ब्रह्म चाक्षरः।

रेफान्निरक्षरो ब्रह्म सर्वव्यापी निरञ्जनः।।1057।।

श्रीरामनाम के 'म' से चराचर संसार रूप क्षर उत्पन्न हुआ है 'अ' से ब्रह्म एवं रेफ से निरञ्जन एवं सर्वव्यापी ब्रह्म प्रकट हुआ है।

क्षरोऽभिधीयते माया ब्रह्मात्मानस्तु चाक्षरः।

परमात्मा परब्रह्म निरक्षर इति स्मृतः।।1058।।

माया को ही क्षर, ब्रह्म और आत्मा को अक्षर तथा परब्रह्म परमात्मा को निरक्षर कहते हैं।

सकल व्यापिनस्त्रेधा क्षराक्षरनिरक्षराः।

रामनामरमुक्रीडा प्रवीणेऽतः समुच्यते।।1059।।

क्षर, अक्षर एवं निरक्षर ये तीनों सब में व्याप्त हैं है परम चतुर पार्वति। राम सब में रमण करते हैं इसीलिए रमुक्रीड़ा कहा जाता है।

रामनामगुणं त्वत्तो संक्षेपेण प्रभाषितम्।

रामनामप्रतापं च साम्प्रतं सूक्ष्मतः शृणु।।1060।।

मैंने श्रीरामनाम के गुणों को तुमसे कहा और अब श्रीरामनाम के प्रताप को संक्षेप में सुनो।

रकारोऽनलबीजं स्याद् ये सर्वे वाडवादयः।

कृत्वा मनोमलं सर्वं भस्म कर्म शुभाशुभम्।।1061।।

श्रीरामनाम का 'र' अग्निबीज है बड़वानल आदि समस्त अग्नि का कारण है ऐसा समझकर जो रामनाम का जप करता है उसके समस्त शुभाशुभ एवं मन के मैल भस्म हो जाते हैं।

अकारो भानुबीजं स्याद् वेदशास्त्रप्रकाशकः।

नाशयत्येव सद्दीप्त्या या विद्या हृदये तमः।।1062।।

श्रीरामनाम का 'अ' सूर्य का बीज एवं वेदशास्त्रों का प्रकाशक है तथा अपनी सुन्दर कान्ति से हृदय में विद्यमान अनादि अज्ञानान्धकार को नाश करता है।

मकारश्चन्द्रबीजं च पीयूष परिपूर्णकम्।

त्रितापं हरते नित्यं शीतलत्वं करोति च।।1063।।

श्री रामनाम का 'म' चन्द्रबीज तथा अमृत से परिपूर्ण है तथा दैहिक, दैविक तथा भौतिक तीनों तापों का नाश करता है और शीतलता प्रदान करता है।

रकारोहेतुर्वैराग्यं परमं यच्च कथ्यते।

अकारो ज्ञानहेतुश्च मकारो भक्तिहेतुकः।।1064।।

रकार परम वैराग्य का हेतु, अकार ज्ञान का हेतु और मकार भक्ति का हेतु है।

अतो देवि! रमुक्रीडा रामनाम्नः समुच्यते।

सम्यक् श्रृणु प्रवीणे! त्वं हेतुरन्यद् वदामि ते।।1065।।

हे परम चतुर देवि! रामनाम में रमुक्रीडा कहा जाता है दूसरे कारणों को अच्छी तरह सुनो, तेरे लिए मैं कहता हूँ।

वेदे व्याकरणे चैव ये च वर्णाः स्वरा स्मृताः।

रामनाम्नैव ते सर्वे जाता नैवात्र संशयः।।1066।।

वेदों में एवं व्याकरण में जितने वर्ण और स्वर कहे गये हैं वे सब श्रीरामनाम से ही उत्पन्न हुए हैं इसमें सन्देह नहीं है।

रकारो मूर्ध्नि संचारस्त्रिकुट्याकार उच्यते।

मकारोऽधरयोर्मध्ये लोमे लोमे प्रतिष्ठितः।।1067।।

'र' का उच्चारण स्थान मूर्धा, 'अ' का त्रिकुटी (कण्ठ) एवं म का दोनों ओष्ठ तथा रोम रोम में श्रीरामनाम का स्थान है।

रकारो योगिनां ध्येयो गच्छन्ति परमं पदम्।

अकारो ज्ञानिनां ध्येयस्ते सर्वे मोक्षरूपिणः।।1068।।

रकार योगियों का ध्येय है रकार के द्वारा योगी लोग परमपद को प्राप्त करते हैं। अकार ज्ञानियों का ध्येय है इसका ध्यान करने पर ज्ञानी मोक्षस्वरूप हो जाते हैं।

पूर्ण नाम मुदा दासा ध्यायन्त्यचलमानसाः।
प्राप्नुवन्ति परां भक्तिं श्रीरामस्य समीपकम्।।1069।।

स्थिर मन से दासजन प्रसन्नतापूर्वक पूर्ण श्रीरामनाम का जप एवं ध्यान करते हैं जिसके फलस्वरूप दासों को भगवान् की पराभक्ति एवं श्रीराम का सामीप्य प्राप्त होता है।

अन्तर्जपन्ति ये नाम जीवन्मुक्ता भवन्ति ते।
तेषां न जायते भक्तिर्न च रामसमीपकाः।।1070।।

जो साधक भीतर ही भीतर श्रीरामनाम का जप करते हैं वे जीते जी मुक्त हो जाते हैं उन्हें भक्ति एवं श्रीराम सामीप्य की प्राप्ति नहीं होती है

जिह्वयाऽप्यन्तरेणैव रामनाम जपन्ति ये।
ते च प्रेमपरा भक्ता नित्यं रामसमीपकाः।।1071।।

जो साधक आग्रह शून्य होकर भीतर से एवं बाह्य जिह्वा से दोनों श्रीरामनाम का जप करते हैं उन्हें प्रेमलक्षणा पराभक्ति एवं नित्य श्रीराम सामीप्य प्राप्त होता है।

योगिनो ज्ञानिनो भक्ताः सुकर्मनिरताश्च ये।
रामनाम्नि रतास्सर्वे रमुक्रीडात एव वै।।1072।।

योगी, ज्ञानी, भक्त एवं सुकर्मपरायण जो लोग हैं वे सभी लोग श्रीराम नाम में लगे हुए हैं इसलिए रामनाम में रमुक्रीडा कहा जाता है।

शृणुष्व मुख्यनामानि वक्ष्ये भगवतः प्रिये।
विष्णुर्नारायणः कृष्णो वासुदेवो हरिः स्मृतः।।1073।।
ब्रह्म विश्वम्भरोऽनन्तो विश्वरूपः कला निधिः।
कल्मषघ्नो दयामूर्तिः सर्वगः सर्वसेवितः।।10741

हे प्रिय पार्वति! भगवान् के मुख्य नामों को मैं कहता हूँ उसे सुनो– श्रीविष्णु, श्रीनारायण, श्रीवासुदेव, श्रीहरि । ब्रह्म, विश्वम्भर, अनन्त,

विश्वरूप, कलानिधि, कल्मषघ्न, दयामूर्ति, सर्वग और सर्वसेवित।

परमेश्वरनामानि संत्यनेकानि पार्वति।।

परन्तु रामनामेदं सर्वेषामुत्तमोत्तमम्।।1075।।

हे पार्वति! भगवान् के अनेकों नाम हैं परन्तु सभी नामों से अत्यन्त उत्तम श्रीरामनाम है।

ग्रहाणां च यथा भानुर्नक्षत्राणां यथा शशी।

निर्जराणां यथा शक्रो नराणां भूपतिर्यथा।।1076।।

यथा लोकेषु गोलोकः सरयू निम्नगासु च।

कवीनां च यथाऽनन्तो भक्तानाम ञ्जनीसुतः।।1077।।

शक्तीनां च यथा सीता रामो भगवतामपि।

भूधराणां यथा मेरुः सरसां सागरो यथा।।1078।।

कामधेनुर्गवां मध्ये धन्वीनां मन्मथो यथा।

पक्षिणां वैनतेयश्च तीर्थानां पुष्करो यथा।।1079॥

अहिंसा सर्वधर्माणां साधुत्वेऽपि दया यथा।

मेदिनी क्षमिणां मध्ये मणीनां कौस्तुभो यथा।।1080।।

धनुषां च यथा शाङ्र्गः खड्गानां नन्दको यथा।

ज्ञानानां ब्रह्म ज्ञानं च भक्तीनां प्रेमलक्षणा।।1081।।

प्रणवः सर्वमन्त्राणां रुद्राणामहमेव च।

कल्पद्रुमश्च वृक्षाणां यथाऽयोध्या पुरीषु च।।1082।।

कर्मणां भगवत्कर्म अकारश्च स्वरेष्वपि।

किमत्र बहुनोक्तेन सम्यग् भगवतः प्रिये।।1083।।

नाम्नां तथा च सर्वेषां रामनाम परं महत्।।

नाम्नामेव च सर्वेषां रामनाम परं महत्।।1084।।

इदं त्वया कथं प्रोक्तं एतदर्थं वद प्रभो।

त्वमेव सर्वं जानासि रामनाम सुवैभवम्।।1085।।

ग्रहों में जैसे सूर्य, नक्षत्रों में जैसे चन्द्रमा, देवताओं में जैसे इन्द्र, मनुष्यों में

राजा, लोकों में जैसे गोलोक, नदियों में जैसे सरयू, कवियों में जैसे शेषजी, भक्तों में जैसे हनुमान जी, शक्तियों में जैसे सीता, समस्त भगवद् अवतारों में जैसे रामजी, पर्वतों में जैसे सुमेरु, सरों में जैसे समुद्र, गायों में जैसे कामधेनु, धर्नुधारियों में जैसे कामदेव, पक्षियों में जैसे गरुड़जी, तीर्थों में पुष्करजी, सभी धर्मों में अहिंसा, साधुता में जैसे दया, क्षमावानों में जैसे पृथिवी, मणियों में जैसे कौस्तुभ मणि, धनुषों में जैसे शार्ङ्ग धनुष, खड्गों में जैसे नन्दक, ज्ञानों में जैसे ब्रह्मज्ञान, भक्तियों में प्रेमलक्षणाभक्ति, सभी मन्त्रों में ओम्, एकादश रुद्रों में जैसे मैं, वृक्षों में जैसे कल्पवृक्ष, पुरियों में जैसे अयोध्याजी, कर्मों में भगवत्कर्म, और जैसे स्वरों में 'अ' श्रेष्ठ है हे प्रिये! यहाँ अधिक कहने से क्या लाभ? जिस प्रकार उपर्युक्त श्रेष्ठ हैं उसी प्रकार समस्त भगवन्नामों में श्रीरामनाम श्रेष्ठ है। परात्पर है महान् है।

श्रीपार्वती जी ने कहा

हे प्रभो! समस्त नामों में श्रीरामनाम परात्पर एवं महान् है यह आपने कैसे कहा? इसके अर्थ को कहिए क्योंकि श्रीरामनाम के वैभव को वास्तव में आप ही जानते हैं।

श्रीशिव उवाच

नानार्थमहं देवि! संक्षेपेण वदामि ते।
नाम्नां भगवतोऽनेका गुणार्थाः कोटिकोटयः।।1086।।

श्रीशिवजी ने कहा

हे देवि! भगवान् के नामों के अर्थों को संक्षेप से मैं तुमसे कह रहा हूँ। भगवान् के नामों में कोटि कोटि गुण और अर्थ हैं।

अप्सु नारे गृहं यस्य तेन नारायणः स्मृतः।
जीवा नाराश्रया यस्य तेन नारायणोऽपि वा।।1087।।

नारायणः— जल में निवास स्थान है जिसका उसे नारायण कहते हैं अथवा जीव मात्र है आश्रय (आधार) जिसका उसे नारायण कहते हैं।

सर्वं वसति वै यस्मिन् सर्वस्मिन् बसतेऽपि वा।
तमाहुर्वासुदेवं च योगिनस्तत्त्वदर्शिनः।।1088।।

वासुदेवः— जिसमें सब लोग निवास करते हैं अथवा सब में जो निवास करता है तत्वदर्शी योगी लोग उसे वासुदेव कहते हैं।

व्यापकोऽपिहि यो नित्यं सर्वं चैव चराचरे।

विशप्रवेशने धातोर्विष्णुरित्यभिधीयते।।1089।।

विष्णुः— जो चराचर में व्याप्त है सब में प्रवेश किये हैं, उसे विष्णु कहते हैं विश प्रवेशने धातु से बनता है।

कथ्यते स हरिर्नित्यं भक्तानां क्लेशनाशनः।

भरण पोषणं विश्वं विश्वंभर इति स्मृतः।।1090।।

हरिः—जो भक्तों के क्लेशों का हरण करते हैं नाश करते हैं उसे हरि कहते हैं।

विश्वम्भरः— जो सम्पूर्ण विश्व का भरण पोषण करता है उसे विश्वम्भर कहते हैं।

वायुवद् गगने पूर्ण जगतामेव वर्तते।

सर्वभिन्नं निराकारं निर्गुणं ब्रह्म उच्यते।।1091।।

ब्रह्मः—वायु की तरह एवं गगन की तरह सम्पूर्ण जगत् में व्याप्त निर्लिप्त एवं पूर्ण जो है जो सबसे अलग, निराकार और निर्गुण है उसे ब्रह्म कहते हैं।

यस्यानन्तानि रूपाणि यस्य चान्तंन विद्यते।

श्रुतयो यन्न जानन्ति सोऽप्यनन्तोऽभिधीयते।।1092।।

अनन्तः— जिसके अनन्त रूप हैं, जिसका अन्त नहीं है, और जिसको वेद भी नहीं जानते हैं उसे अनन्त कहते हैं।

यो विराजस्तनुर्नित्यं विश्वरूपमथोच्यते।

कला वै धिष्ठितान् सर्वान् यस्मिन्निति कलानिधिः।।1093।।

विराटः— सम्पूर्ण विश्व ही जिनका स्वरूप है उसे विराट कहते हैं।

कलानिधिः—सम्पूर्ण कलाएँ जिसमें अधिष्ठित हों उसे कलानिधि कहते हैं।

सर्वाण्येतानि नामानि मया प्रोक्तानि यानि च।

सच्चिदानन्दरूपाणि नामान्येतानि सर्वशः।।1094।।

हे पार्वति! मेरे द्वारा भगवान् के जितने नाम कहे गये हैं वे सभी नाम सच्चिदानन्दस्वरूप हैं।

परन्तु नामभेदश्च संक्षेपेण वदामि ते।

सच्चिदानन्दरूपैश्च त्रिभिरेभिः पृथक् पृथक्।।1095।।

परन्तु नाम भेद सत्, चित् और आनन्द इन तीनों के द्वारा पृथक्–पृथक् संक्षेप में तुमसे कहता हूँ।

वर्तते रामनामेदं सत्यं दृष्ट्वा महेश्वरि!

नामान्यन्यान्यनेकानि मया प्रोक्तानि पार्वति।।1096।।

हे महेश्वरि! पार्वति! भगवान् के दूसरे मेरे द्वारा कहे गये नामों में श्रीरामनाम सच्चिदानन्दस्वरूप है इसमें सत्, चित् और आनन्द तीनों पूर्णरूप से विद्यमान है।

कस्मिन् मुख्यौ सदानन्दौ चिद्रगमनं तथोच्यते।

कस्मिंचित्सतौ मुख्यौ चानन्दं गमनं स्मृतम्।।1097।।

कुछ नामों में सत् और आनन्द मुख्य है चिद् गुप्त है। कुछ नामों में चित् और सत् मुख्य है आनन्द गुप्त है।

त्वमेवमेव नामानि विद्धि सर्वाणि पार्वति।

नामभेदं वदाम्यन्यं प्रवीणे! श्रृणु भक्तितः।।1098।।

हे परमचतुर पार्वती। इस प्रकार भगवान् के नामों को समझो दूसरे नाम के रहस्यों को मैं कहता हूँ भक्तिपूर्वक सुनो।

अन्यानि यानि सर्वाणि नामानि साक्षराणि च।

निवर्णं रामनामेदं केवलं च स्वराधिपम् ।।1099।।

दूसरे भगवान् के जितने नाम हैं सब साक्षर हैं केवल श्रीरामनाम सभी स्वरों का राजा एवं निर्वर्ण है।

मुकुटं छत्रं च[1] सर्वेषां मकारो रेफव्यञ्जनम्।

रामनाममयास्सर्वे नामवर्णाः प्रकीर्तिताः।।1100।।

श्रीरामनाम के 'र' और 'म' कहीं मुकुट कहीं छत्र के रूप में सभी वर्णों में सुशोभित होते हैं सभी नाम एवं वर्ण श्रीरामनाममय हैं।

अतएव रमुक्रीडा नाम्नामीशाः प्रवर्तते।

निजमत्यनुसारेण रामनामप्रभाषितम्।।1101।।

---

1. एक छत्र एक मुकुट मणि सब वरननिपर जोउ।
तुलसी रघुवर नाम के वरन विराजत दोउ द्यद्य

समस्त नामों के स्वामी श्रीरामनाम में रमुक्रीडा धातु है अपनी मति के अनुसार मैंने श्रीरामनाम के विषय में कहा है।

रामनामप्रभावोऽयं केन वक्तुं न शक्यते।

ब्रह्मादीनां बुद्धिरपि कुण्ठिता भवति ध्रुवम्।।1102।।

श्रीरामनाम के प्रभाव को सम्पूर्णतया कोई भी वर्णन नहीं कर सकता है इसके प्रभाव का वर्णन करने में ब्रह्मादि की भी बुद्धि कुण्ठित हो जाती है।

कोटितीर्थानिदानानि कोटियोगव्रतानि च।

कोटियज्ञजपाश्चैव तपसः कोटि कोटयः।।1103।।

कोटिज्ञानैश्च विज्ञानैः कोटिध्यानसमाधिभिः।

सत्यं वदामि तैस्तुल्यं रामनाम न वर्तते।।1104।।

अनन्त तीर्थों में दान, अनन्त योग व्रत, यज्ञ, जप, तप, ज्ञान, विज्ञान, ध्यान, समाधि ये सब श्रीरामनाम की तुलना नहीं कर सकते हैं। यह मैं सत्य कहता हूँ।

परावाण्या भजेन्नित्यं रामनामपरात्परम्।

त्यक्त्वा मोहं च मात्सर्यं वाक्यं चैवानृतं तथा।।1105।।

हन्मलं क्रोधकामाद्या लोभमज्ञानमेव च।

रागद्वेषं च दुःसंगं त्यक्त्वा दुर्वासनामपि।।1106।।

सर्वेन्द्रियजितो भूत्वा पूतो बाह्यान्तरस्तथा।

इत्थं नाम जपेन्नित्यं रामरूपो भवेन्नरः।।1107।।

मोह, मात्सर्य, अनृत वाक्य, हृदय के मैल, कामक्रोधादि, लोभ, अज्ञान, रागद्वेष, दुःसंग और दुर्वासना का त्याग करके समस्त इन्द्रियों को वश में करके, बाहर भीतर से पवित्र होकर परात्पर श्रीरामनाम की परा वाणी से नित्य भजन करें तो साधक धीरे–धीरे श्रीरामजी जैसे स्वभाव वाला हो जाता है।

रहः पठति यो नित्यमेतत् कमललोचने!

सर्वध्यानफलं तस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्।।1108।।

हे कमलनयने! जो साधक एकान्त में नित्य श्रीरामनाम का पाठ करता है

समस्त ध्यान का फल उसकी सोलहवीं कला के बराबर भी नहीं होते हैं।

शठाय परशिष्याय विषयाढ्याय मानिने।
न दातव्यं न दातव्यं श्रीरामोपासकं विना।।1109।।

हे पार्वति! इस रहस्य को श्रीरामोपासक के बिना किसी भी मूर्ख, पर शिष्य, विषयी और अहंकारी को न देना, न देना।

यदि दातव्यमन्येषां सद्यो मृत्युः प्रजायते।
महतामेव सर्वेषां जीवनं प्रोच्यते यतः।। 1110।।

यदि अज्ञानतावश किसी दूसरे को दिया तो तत्काल मृत्यु हो जाती है क्योंकि यह महापुरुषों का जीवन है।

इति श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाशे प्रमोदनिवासे परात्परैश्वर्यदायके श्रीयुगलानन्यशरणसंगृहीते श्रीरामायणवाक्यप्रबलप्रमाणनिरूपणं नाम नवमः प्रमोदः ।।9।।



स्वामीयुगलानन्यशरणजी द्वारा संकलितः

दशमः प्रमोदः

श्रुत्युक्तवचनानि

यजुर्वेदे

मर्त्ताऽमर्त्तस्य ते भूरि नाममनामहे विप्रासो जातवेदसः।।1111।

हे प्रभो! मृत्युधर्म से रहित आपके अनेक नामों को जो मरणधर्मा मनुष्य स्मरण मनन करते हैं वे विप्र एवं अग्नि के समान तेजस्वी हो जाते हैं।

अथर्वणोपनिषदि

जपात्तेनैव देवतादर्शनं करोति कलौ नान्येषां भवति।।1112।।

श्रीरामनाम के जप से ही भगवान् तथा देवताओं का दर्शन होता है कलियुग में श्रीरामनाम के अलावा दूसरा कोई साधन नहीं है।

यजुर्वेदे

यस्य नाम महद्यशः ।।1113।।

रामनाम जपादेव मुक्तिर्भवति ।।1114।।

जिनका नाम महायशस्वी है। श्रीरामनाम के जप से ही मुक्ति होती है।

भाल्लेयश्रुतिः

सर्वाणि नामानि यमाविशन्ति ।।1115।।

समस्त नाम जिस श्रीरामनाम में प्रवेश कर जाते हैं।

अथर्वणि

यश्चाण्डालोऽपि रामेति वाचं वदेत् तेन सह संवदेत् तेन सह संवसेत् तेन सह सम्भुञ्जीयात् ।।1116।।

जो चाण्डाल भी 'राम' ऐसा कहता है उसी के साथ सम्भाषण, सहवास और उसी के साथ सम्यक् भोजन करना चाहिए।

ऋग्वेदे

ॐ परं ब्रह्म ज्योतिर्मयं नाम उपास्यं मुमुक्षुभिः ।।1117।।

ज्योतिः स्वरूप परमब्रह्म श्रीरामनाम की उपासना मुमुक्षुओं को करना चाहिए।

सामवेदे

ॐ मित्येकाक्षरं यस्मिन् प्रतिष्ठितं तन्नाम ध्येयं संसृतिपारमिच्छोः ।।1118।।

'ॐ' यह एकाक्षर मन्त्र जिसमें प्रतिष्ठित है उस श्रीरामनाम का ध्यान भवसागर से पार करने की इच्छा वालों को करना चाहिए।

श्रीरामोत्तरतापनीये

अकाराक्षरसंभूतः सौमित्रिर्विश्वभावनः ।

उकाराक्षरसंभूतः शत्रुघ्नस्तैजसात्मकः ।।1119।।

प्रज्ञात्मकस्तु भरतो मकाराक्षरसंभवः ।

अर्द्धमात्रात्मको रामो ब्रह्मानन्दैकविग्रहः ।।1120।।

श्रीरामोत्तरतापनीय में ओम् और श्रीरामनाम में अभेद मानकर ओम् के 'अ' से विश्व संज्ञक सुमित्रानन्दन श्रीलक्ष्मणजी, 'उ' से तैजस संज्ञक श्रीशत्रुघ्नजी, 'म' से प्राज्ञसंज्ञक श्रीभरतजी तथा अर्धमात्रा से ब्रह्मानन्दस्वरूप श्रीरामजी प्रकट हुए हैं।

श्रीरामपूर्वतापनीये

यथैव वटबीजस्थः प्राकृतश्च महान्द्रुमः ।

तथैव रामबीजस्थं जगदेतच्चराचरम् ।।1121।।

यथा बीजात्मको मन्त्रो मन्त्रिणोऽभिमुखो भवेत् ।।1122।।

जैसे बट के बीज में विशाल वटवृक्ष स्थित रहता है उसी प्रकार यह चराचर जगत् श्रीरामबीज मन्त्र में स्थित है। जैसे बीजमन्त्र मन्त्री (नामी) को सम्मुख प्रकट कर देता है।

धर्ममार्गं चरित्रेण ज्ञानमार्गं च नामतः ।

तथा ध्यानेन वैराग्यमैश्वर्यं तस्य पूजनात् ।।1123।।

श्रीरामजी ने अपने चरित्र के माध्यम से धर्म मार्ग को, अपने नाम के माध्यम से समस्त वेद ज्ञान को, अपने ध्यान के माध्यम से वैराग्य को तथा अपने पूजन के माध्यम से समस्त ऐश्वर्य को व्यवस्थित किया है तात्पर्य यह है कि श्रीरामजी अपने चरित्रों का चिन्तन करने से धर्ममार्ग, श्रीरामनाम के जप से ज्ञानमार्ग (समस्त शास्त्रों का ज्ञान), ध्यान करने से विषयों से वैराग्य तथा पूजन करने से समस्त ऐश्वर्य को प्रदान करते हैं।

रामनाम भुवि ख्यातमभिरामेण वा पुनः ।

अग्निसोमात्मकं विश्वं रामबीजप्रतिष्ठितम् ।।1124।।

लोकलोचनाभिराम होने से श्रीरामनाम पृथिवी पर प्रसिद्ध है। अग्नि चन्द्रात्मक जगत् श्रीरामबीज मन्त्र में ही व्यवस्थित एवं प्रतिष्ठित है।

रमन्ते योगिनोऽनन्ते सत्यानन्दे चिदात्मनि ।

इति रामपदेनासौ परंब्रह्माभिधीयते ।।1125।।

अनन्त, सत्यानन्द एवं चित्स्वरूप में बड़े—बड़े योगी लोग रमण करते

हैं। इसलिए श्रीरामपद से परब्रह्म का अभिधान होता है।

रुद्रस्तारकं ब्रह्म व्यापकं चष्टे येनासावमृतो

भूत्वा स्वर्गी भवतीति ।।1126।।

भगवान् रुद्र काशी में मरणासन्न जीवों को तारक मन्त्र (श्रीरामनाम) का उपेदश करते हैं जिसके प्रभाव से जीव अमर होकर स्वर्गवासी हो जाता है।

श्रीरामोपनिषदि

राम एव परं ब्रह्म राम एव परं तपः।

राम एव परं तत्त्वं श्रीरामो ब्रह्मतारकम्।।1127।।

श्रीरामजी ही परमब्रह्म, पर तप एवं परतत्व हैं श्रीरामजी तारकब्रह्म हैं।

स्व भूर्ज्योतिर्मयोऽनन्तरूपी स्वेनैव भासते।

जीवत्वेनेदमों सृष्टिस्थितिहेतुर्लयस्य च।।1128।।

श्रीरामनाम स्वयंभू, प्रकाशमय, अनन्त स्वरूपवाला और स्वयं प्रकाशित है यह सबका जीवन ओम् का प्राण, सृष्टि स्थिति और लय का हेतु है।

रेफारूढा मूर्तयः स्युः शक्तयस्तिस्र एव चेत्।।1129।।

श्रीरामनाम के रेफ में समस्त मूर्तियाँ एवं आह्लादिनी आदि शक्तियाँ स्थित हैं।

इति श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाशे प्रमोदनिवासे परात्परैश्वर्यदायके श्रीयुगलानन्यशरणसंगृहीते श्रुतिवाक्यप्रमाण निरूपणं नाम दशमः प्रमोदः ।।10।।

इस प्रकार श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाश जो कि परमानन्द का निवास एवं परात्पर ऐश्वर्य को प्रदान करने वाला है उसके अन्तर्गत श्रीयुगलानन्यशरणजी के द्वारा संग्रहीत श्रुतियों के वाक्यरूपी प्रमाणों का निरूपण रूप 'दशवाँ प्रमोद' पूरा हुआ।'



संग्रह श्लोकानि

नानापुराणस्मृतिसंहितादि ग्रन्थोक्तवाक्यानि विचारितानि।
नाम्नः परत्वानि समुद्गतानि श्रीमद्युगलानन्य प्रपन्नकेन।।1130।।

अथ संग्रह श्लोकानि

स्वामी श्रीयुगलानन्यशरणजी ने अनेक पुराणों स्मृतियों एवं संहितादि में आये हुए श्रीरामनाम के परत्व परक वाक्यों का विचार किया तत्पश्चात् यह श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाश ग्रन्थ का प्रणयन किया है।

ये सर्वसौख्यदमिदं रघुनन्दनस्य नाम्नः परत्वमखिलार्यवरैरुपास्यम्।
शृण्वन्ति शुद्धमनसा च पठन्ति नित्यं श्रीरामनाम्नि -
परमां रतिमाप्नुवन्ति।।1131।।

जो लोग, सम्पूर्ण आर्य श्रेष्ठों के द्वारा सदासर्वदा उपास्य एवं सभी प्रकार के सुख को प्रदान करने वाले इस श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाश ग्रन्थको शुद्ध मन से नित्य सुनेंगे और पढ़ेंगे उन्हें निश्चित ही श्रीसीतारामनाम में परा रति की प्राप्ति होगी।

श्रीरामनामरसिकाः प्रपठन्ति भक्त्या शृण्वन्ति चैव -
सततं सुधियः प्रयत्नात्।
नाम्नः परत्वमखिलागमसारभूतं निन्दन्ति नष्टमतयो -
ह्यधमा मदान्धाः।।1132।।

सम्पूर्ण आगम शास्त्रों का सार श्रीराम परक इस ग्रन्थ को श्रीरामनाम के रसिक भक्तजन सुधीजन भक्तिपूर्वक पढ़ते हैं और निरन्तर प्रयत्नपूर्वक सुनते हैं। किन्तु जिनकी बुद्धि नष्ट हो गयी है जो मदान्ध हैं ऐसे अधम लोग इसकी निन्दा करते हैं।

श्रीरामनाममाहात्म्यं श्रुत्वा यो नैव हृष्यति।
राक्षसं तं विजानीयात् महाघौघनिकेतनम्।।1133।।

श्रीरामनाम के माहात्म्य को सुनकर जो प्रसन्न नहीं होता है उसे महापापी राक्षस समझना चाहिए।

श्रीरामनाममाहात्म्यं श्रुत्वा निन्दति योऽधमः।
तन्मुखं नैव द्रष्टव्यं महारौरवदायकम्।।1134।।

श्रीरामनाम की महिमा सुनकर जो अधम इसकी निन्दा करता है महारौरवनरक प्रदायक उस पापी के मुख को नहीं देखना चाहिए।

श्रुत्वा श्रीनाममाहात्म्यं प्रीतिश्चैवान्यसाधने।
स महान्धो रविं त्यक्त्वा खद्योतं समुपासते।।1135।।

श्रीरामनाम की महिमा को सुनकर भी जिसकी दूसरे साधनों में प्रीति होती है वह महाअन्धा है और सूर्य को छोड़कर जुगनू की उपासना करता है।

श्रुत्वा श्रीनाममाहात्म्यं नाम्नि स्नेहो न जायते।
ततः परो न ब्रह्माण्डे भाग्यहीनो महाघवान्।।1136।।

श्रीरामनाम के माहात्म्य को सुनकर भी जिसके हृदय में श्रीरामनाम के प्रति स्नेह प्रकट नहीं हुआ। इस ब्रह्माण्ड में उससे बढ़कर महाअघी एवं भाग्यहीन कोई दूसरा नहीं है।

श्रीरामनाममाहात्म्यं सामान्यं यस्तु मन्यते।
तस्याधमस्य दुष्टस्य संसर्गं संपरित्यजेत्।।1137।।

श्रीरामनाम के माहात्म्य को जो सामान्य मानता है, उस अधम एवं दुष्ट का संसर्ग छोड़ देना चाहिए।

श्रुत्वा श्रीनाममाहात्म्यं तत्त्वमन्यं परं वदेत्।
तन्मुखालोकनाच्छ्रेयः पापं विप्रवधादिकम्।।1138।।

श्रीरामनाम के माहात्म्य को सुनकर भी जो किसी दूसरे को परतत्व कहता है उस पापी के मुख देखने से ब्राह्मणहत्यादि पापश्रेष्ठ है अर्थात् उसका मुख देखना ब्रह्म हत्या के समान पाप है।

रामनामात्मकं ग्रन्थं चिन्तनीयमिमं सदा।
श्रावयेन्न कदाचिद्वै श्रीरामोपासकं विना।।1139।।

श्रीरामनामात्मक इस ग्रन्थ का सदासर्वदा चिन्तन करना चाहिए और श्रीरामोपासक के बिना किसी अन्य को नहीं सुनना चाहिए।

नामामृतरसोल्लासवैभवसंप्रकाशकम्।
ग्रन्थरत्नमिदं भूयात् भक्तानां भूतिकारकम्।।1140।।

श्रीरामनामरूपी रसामृत के वैभव का दशप्रमोदों (उल्लासों) के माध्यम

से भली भांति वर्णन करने वाला ग्रन्थों में रत्न स्वरूप यह ग्रन्थ रत्न नाम जापक भक्तों के लिये कल्याणकारी हो।

आनन्दाख्यसंहितायाम्

जपन्ति यद् विष्णुशिवस्वयंभुवो लक्ष्म्यादिवैकुण्ठचराश्च नित्याः।
तदेव तत्त्वं च मुनीन्द्रयोगिनां श्रीरामनामामृतमाश्रयं मे ।।1141

आनन्दसंहिता में

जिस श्रीरामनाम को भगवान् विष्णु, शंकर, ब्रह्माजी तथा वैकुण्ठवासी भगवान् के लक्ष्मी आदि नित्य पार्षद जपते हैं और बड़े–बड़े मुनियों एवं योगियों की दृष्टि में जो परतत्व है वही श्रीसीतारामनामामृत मेरे जीवन का परम आश्रय हो।

रामनाम्नो हि ग्रन्थस्य साधुभिर्लब्ध्या धिया।
साधूनां पादपद्मेंष्वेवानुवादः समर्पितः।।
नाम भरोस नामबल नामसनेहु।
जनम जनम रघुनन्दन तुलसिहि देहु।।
जनम जनम जहँ तहँ तनु तुलसिहि देहु।
तहँ तहँ राम निबाहिब **नाम सनेहु।।**

श्रीरामनाम्नि रतिस्तु मतिरस्तु

श्रीसीतारामनामप्रतापप्रकाश ग्रन्थ सम्पूर्ण हुआ

।।समाप्तोऽयं ग्रन्थः।।





ग्रन्थकार

स्वामी श्रीयुगलानन्दशरणजीमहाराज

||श्री सीतारामाभ्यां नमः||



श्रीमद्भागवतविद्यापीठबिहारिणीबिहारीजूसरकार